विक्रम संवत् 2083 ▪ कार्तिक मास/अगहन (मार्गशीर्ष) (09) ▪ 01 नवम्बर 2026 ▪ मूल्यः 23 रु.

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक: प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

चरैवेति

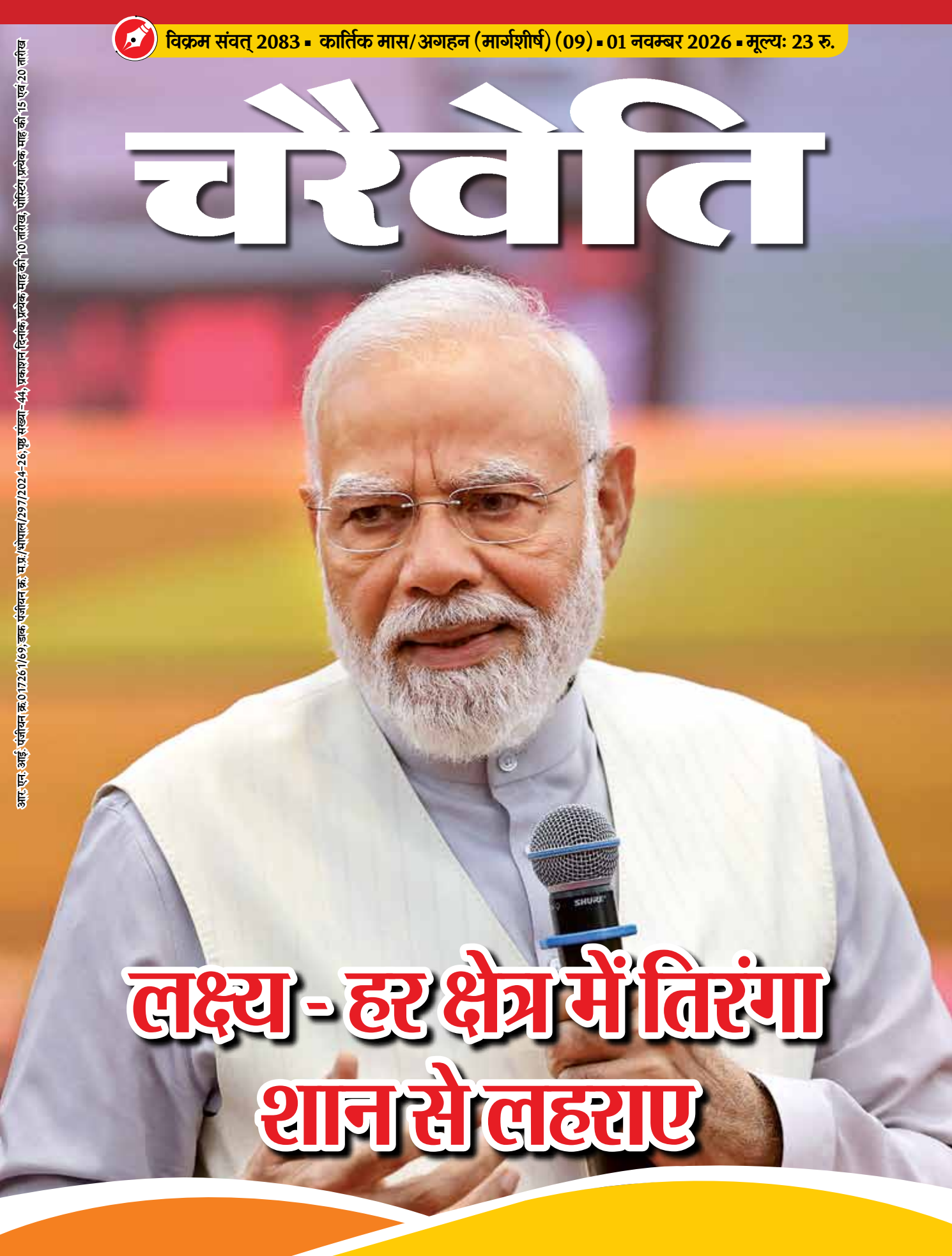

लक्ष्य - हर क्षेत्र में तिरंगा शान से लहराए



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गाँधी जयंती पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री विनायक मंदिर में पूजा-अर्चना और अनुष्ठान किया।



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कैप्टन स्मित मछर से वीडियो कॉल के जरिए बात की।



▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने विकसित भारत संकल्प सभा को संबोधित किया।



▪ केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने ''लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ'' पदयात्रा में भाग लिया।



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विजयादशमी समारोह में भाग लिया।



▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती पर ''स्टैच्यू ऑफ यूनिटी'' पर पुष्पांजलि अर्पित की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** ▪ संजय गोविन्द खोचे 04

▪ भारत को नई दिशा मिली

» **कवर स्टोरी** ▪ 05

▪ लक्ष्य - हर क्षेत्र में तिरंगा शान से लहराए

09



▪ विकसित भारत संकल्प सभा 09

» मोदी जी के 25 वर्ष स्वर्णिम और युगांतरकारी - अमित शाह

▪ श्री विजयादशमी उत्सव 2026 10

» राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, श्री विजयादशमी उत्सव, नागपुर

» विकसित भारत, विकसित म.प्र.

▪ संगठनात्मक बैठक 15

» कार्यकर्ता और विचारधारा सबसे महत्वपूर्ण - हेमंत खण्डेलवाल

» अराजक राजनीति उजागर होगी - चंद्रशेखर

▪ संभागीय बैठक 17

» प्रवास एवं संवाद आवश्यक - चंद्रशेखर

▪ कार्यशाला 18

» कार्यों व विचारधारा को जनता तक पहुंचाएं - डॉ. मोहन यादव

» भ्रामक प्रचार का तथ्यों और तर्कों से जवाब दें - हेमंत खण्डेलवाल

» कांग्रेस का असली मकसद देश को टुकड़े-टुकड़े करना है - बिप्लब कुमार देब

» भाजपा के कार्य राष्ट्रनीति और विचारधारा हेतु- चंद्रशेखर

» सोशल मीडिया राजनीति का अभिन्न भाग- दीपक हस्के

» स्थानीय मुद्दों के जरिए प्रभावी नैरेटिव गढ़ें- शिवानंद द्विवेदी

» प्रभावी नैरेटिव निर्माण में निभाएं भूमिका - निशांत खरे

▪ कविता 21

» मौत से ठन गई

▪ SIR 22

» SIR - मुख्य बिंदु

▪ मन की बात 34

» मन की बात में लोकशक्ति की आराधना

» जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाना है- हेमंत खण्डेलवाल

▪ जयंती 38

» प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री रानी लक्ष्मीबाई

» बिरसा मुंडा: वनवासियों के महानायक

» सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

▪ विचार प्रवाह 41

» कांग्रेस बनाम जनसंघ

10



• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. अहोई अष्टमी व्रत, पुख नक्षत्र 5. रमा ग्यारस, गोवत्स द्वादशी 6. धनतेरस, प्रदोष व्रत 7. रूप/नरक, शिव चतुर्दशी व्रत छोटी दिवाली, दक्षिणी दिवाली 8. दीपावली, केदार गौरी व्रत 9. स्ना. दा., सोमवती अमावस्या, गोवर्धन, अन्नकूट, बलि पूजा 10. चन्द्रदर्शन 11. भाई दोज, यम द्वितीया 13. विनायकी चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रतारंभ, नहाय खायें 14. पांडव पंचमी, खरना 15. डाला छठ, सूर्य षष्ठी व्रत 17. गोपाष्टमी 18. अक्षय (आंवला) नवमी 20. देवउठनी ग्यारस, तुलसी विवाह 21. चातुर्मास समाप्त 22. प्रदोष व्रत 23. बैकुण्ठ चतुर्दशी 24. स्ना. दा. व्रत, त्रिपुरारी पूर्णिमा 27. गणेश चतुर्थी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1. म. प्र., छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस 8. स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव 9. हिंगोट युद्ध गौतमपुरागांव, देव गोवर्धन मेला, रमछिरिया 15. राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस, भ. बिरसा मुंडा जयंती 17. लाला लाजपत राय बलिदान दि. 20. ईगास बग्वाल, कवि कालिदास जयंती 22. वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि 24. नर्मदा परिक्रमा भेड़ाघाट जबलपुर



वर्ष-58, अंक : 09, भोपाल, नवम्बर 2026



हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

"बिना राष्ट्रीय पहचान के स्वतंत्रता की कल्पना व्यर्थ है।"

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

भारत को नई दिशा मिली

7 अक्टूबर 2001 से प्रारम्भ शासन प्रमुख की भूमिका में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की यात्रा ने नया इतिहास रच दिया है। इतिहास केवल इस बात का नहीं की सर्वाधिक दिनों तक शासन प्रमुख का दायित्व श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सम्हाला बल्कि सबसे बड़ा रिकॉर्ड तो इस बात का है कि श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने अनुभव, तप व दूरदर्शिता भरे निर्णयों से भारत को नई दिशा प्रदान की, राजनीति का नजरिया ही बदल दिया। शासन प्रमुख के दायित्वों को नए सिरे से परिभाषित किया। गरीब, युवा, किसान व महिलाओं के जीवन में न केवल आशा व विश्वास का संचार किया बल्कि जीवन के प्रति, भविष्य के प्रति नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, भविष्य के भारत निर्माण में सहभागिता के लिए सभी की हिस्सेदारी भी सुनिश्चित की। मोदी जी के प्रयासों का ही फल है कि अनिश्चितता व अंधकार के माहौल से देश बाहर निकला, और भविष्य को बनाने के लिए मोदी जी के साथ कदम मिला कर चलने लग गया। मोदी जी की यात्रा से देश में जिस गति से विकास प्रारम्भ हुआ, जिस स्तर पर विकास ने गति पकड़ी उसी का परिणाम है कि विश्व बैंक भी अब मानने लगा है कि भारत में लगभग 50 करोड़ लोग गरीबी से बाहर लाने में मोदी सरकार को सफलता प्राप्त हुई है।

मोदी जी की शासन प्रमुख की भूमिका ने देश में जो आधार तैयार करने में सफलता प्राप्त की है, देश को नया जोश मिला है, उत्साह का संचार हुआ चहुँओर देश नया इतिहास रच रहा है। इस यात्रा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि मोदी जी ने कभी भी बहुमत का उपयोग, अपने पद, दल या सरकार के हितों को साधने के लिए नहीं किया बल्कि जनता के जनादेश का सद्उपयोग देश हित में किया। सदैव संविधान की भावना के अनुरूप शासन चलाने का प्रयास किया। जनता में विश्वास गहराता चला गया, पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक भाजपा-एनडीए की स्वीकार्यता बढ़ती चली गई।

मोदी जी ने भाजपा के वादों को पूर्ण कर- भाजपा का जनता से वादा, केवल वादा नहीं है, केवल नारा नहीं है, भाजपा जो कहती है वो करके दिखाती है सिद्ध किया। कठिन से कठिन मुद्दों को संविधान के दायरे में रह कर हल किया, यह कला तो मोदी जी ही जानते हैं।

असम्भव दिखने वाली धारा 370 की दीवार हमेशा-हमेशा के लिए ढह गई। तीन तलाक इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गया, सैकडों वर्षों से चल रहा राम-मंदिर निर्माण का संघर्ष समाप्त कर रामलला का भव्य मंदिर निर्माण हुआ। काशी विश्वनाथ मंदिर बना, नक्सलवाद जड़ से उखड़ गया, देश की सीमाओं पर सुरक्षित वातावरण बना। वास्तव में मोदी जी की यात्रा भारत निर्माण, अंत्योदय और विकसित भारत निर्माण के लिए तेज प्रयासों को मूर्त रूप देने की यात्रा है।

''मोदी की गारण्टी, गारण्टी पूरा होने की गारण्टी है'' इसको अब दूसरे रूप से भी कह सकते हैं- ''मोदी है,तो भरोसा, हिंदूस्तान का भविष्य सुरक्षित है, दिव्य है।''

भाजपा में कोई पद महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि कार्यकर्ता और विचारधारा संगठन की असली ताकत हैं। मीसाबंदियों का त्याग, संघर्ष और समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। भाजपा संगठन की असली ताकत समर्पित कार्यकर्ता हैं। कांग्रेस शासन के दौरान लोकतंत्र की रक्षा के लिए अनेक कार्यकर्ताओं ने 19 महीने तक जेल में रहना स्वीकार किया, लेकिन अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। सभी लोकतंत्र सेनानियों ने उस समय संगठन के लिए संघर्ष किया, जब सत्ता में आने की कोई उम्मीद नहीं थी। ऐसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान करना और उनके त्याग और बलिदान को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है।

विपक्ष अब आंदोलनों की आड़ में देश में अराजकता की स्थिति पैदा करने का प्रयास कर रहा है। लोकतंत्र बचाने के नाम पर संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाना विपक्ष की राजनीति का हिस्सा बन गया है।

चुनावी पराजय के बाद कांग्रेस ईवीएम पर सवाल उठाती है और लोकतंत्र बचाने के नाम पर संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर प्रहार करती है। SIR 2025 के पूर्व 1952-56, 1957, 1961, 1965-66, 1983-84, 1987-89, 1992-95 और 2002-2004 में किया गया है, विपक्षी दल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों से ध्यान भटकाने के लिए चुनाव आयोग पर हमला कर रहे हैं। वे डर पैदा कर रहे हैं और विकास से वोट चोरी की ओर ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। यह कोई नई रणनीति नहीं है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही विपक्ष भारत को बदलने वाले ऐतिहासिक सुधारों पर निशाना साध रहा है। राफेल, ईवीएम और अब वोट चोरी के आरोप लगाकर विपक्षी दल हर कदम पर मतदाताओं को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस का वोट शेयर लगातार गिर रहा है, वर्ष 1952 में 45% से गिरकर 2024 में 21.4% रह गया है,जो दर्शाता है कि मतदाताओं का कांग्रेस से विश्वास उठ गया है। इसलिए बगैर किसी एजेंडे के, कांग्रेस अब मतदाताओं का विश्वास लोकतंत्र से तोड़ना चाहती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकतंत्र और भारत की संस्थाओं को मजबूत किया है, कांग्रेस ने हमेशा लोकतान्त्रिक संस्थाओ का अपमान किया है। कांग्रेस भारत निर्वाचन आयोग का विरोध करके उसका अपमान करती है। मतपत्र धोखाधड़ी से लेकर ईवीएम के प्रचलन तक, अमिट स्याही से लेकर पर्यवेक्षकों तक, कड़े कानूनों तक, आदर्श आचार संहिता लागू करने से लेकर मतदाता सूची शुद्धिकरण तक, हर चुनौती से सीखकर, चुनाव आयोग एक समयानुकूल, निष्पक्ष संस्था के रूप में विकसित हुआ है। इसका इतिहास सिद्ध करता है कि यह केवल एक नियामक ही नहीं, बल्कि जनादेश का रक्षक भी है। ▪



(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

लक्ष्य - हर क्षेत्र में तिरंगा शान से लहराए

- **मैं एक मिशन के लिए जिया हूं, एम्बिशन के लिए नहीं।**
- **देश ने मुझे इतना कुछ दिया है, इसलिए देश के प्रति मेरी जिम्मेदारी भी सबसे बड़ी है।**



मैं न रुकूंगा, न थकूंगा, न अपने कर्तव्य पथ से डिगूंगा।
मेरे लिए कर्म ही सब कुछ है, कर्म ही मेरा धर्म है।

7 अक्टूबर, 2001 को जब गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी, तब सोचा नहीं था कि कभी ये पड़ाव भी आएगा। ''हेड ऑफ द गवर्नमेंट'' के तौर पर निरंतर सेवा करते हुए 25 वर्ष पूरे हो गए हैं। ये जनता जनार्दन के निरंतर आशीर्वाद का परिणाम है।

इस दौरान इतने सारे चुनाव हुए, चाहे वो विधानसभाओं में चुनाव हुए हों या लोकसभा के चुनाव, जनता ने हमेशा अपनी सेवा के लिए चुना। भारत के लोकतंत्र का, भारत के संविधान का वंदन करता हूं।

श्री विनायक मंदिर में मैंने परमात्मा के सामने देश के लिए प्रार्थना की, 140 करोड़ भारतवासियों के लिए प्रार्थना की और अपने लिए भी प्रार्थना की। प्रार्थना ये कि परमात्मा मुझे इतनी शक्ति और सामर्थ्य दीजिए कि मैं अपने देश के लिए और अधिक ऊर्जा के साथ काम कर सकूं। देशवासियों की और अधिक सेवा कर सकूं। दिन-रात सेवा कर सकूं। मैं जो कुछ हूं, जहां भी हूं, जिस दायित्व पर हूं, उसमें सबसे बड़ा योगदान जनता-जनार्दन का ही है। मेरे लिए जनार्दन भी ईश्वर का ही रूप है। लाखों-करोड़ों देशवासियों का विश्वास और लाखों कार्यकर्ताओं का परिश्रम ही मेरी सबसे बड़ी शक्ति रही है। देश ने मुझे बहुत कुछ दिया है इसलिए देश के लिए मेरा दायित्व भी सबसे अधिक है। और मैं हृदय से ये मानता हूं कि देश के हर नागरिक का मुझ पर सबसे बड़ा हक है। ये 25 वर्ष का जन-विश्वास, ये 25 वर्षों का अनुभव बहुत बड़ी पूंजी है। और ये पूंजी सिर्फ मोदी की नहीं है ये पूंजी देश की है। मां भारती की हर संतान इस पूंजी की अधिकारी है।

जब मैं वडनगर के स्कूल में पढ़ने जाता था तो मास्टरजी तरह-तरह से अलग-अलग पाठ पढ़ाते थे। और क्लास में सबसे पहले पहुंचने वाले स्टूडेंट्स में हमेशा मेरा नाम होता था। सीखने की वो ललक मेरे जीवन का हिस्सा बन गई। और मैं स्वयं को एक विद्यार्थी ही मानता हूं। हर दिन कुछ नया सीखने का प्रयास करता हूं। इसलिए मंदिर में मैंने मेरे लिए भी एक और प्रार्थना की। मैंने ईश्वर से मांगा कि मेरी सीखने की शक्ति कभी कम न हो। मैं जितना सीखूंगा, देश के लिए कुछ करने का सामर्थ्य उतना ही बढ़ेगा।

जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो केवल कृतज्ञता का भाव ही आता है।

- मैं कृतज्ञ हूं हर उस व्यक्ति, हर उस घटना के प्रति जिसने मुझे कुछ न कुछ सिखाया है।
- जिसने मुझे जिताया, उसने मुझे विनम्र होना सिखाया।
- जिसने मुझे गिराया, उसने मुझे फिर खड़ा होना सिखाया।
- शुभचिंतकों ने मुझे प्रोत्साहित किया और आलोचकों ने मुझे अपने भीतर झांकना सिखाया।
- जिसने मेरा साथ दिया, उसने मुझे विश्वास की शक्ति दिखाई।
- जिसने मेरा विरोध किया, उसने मुझे लोकतंत्र की शक्ति समझाई।
- हर संकट मेरे धैर्य की परीक्षा रहा।
- हर सफलता ने मेरे दायित्व बोध को विस्तार दिया और हर सिद्धि ने बड़े लक्ष्यों की तरफ बढ़ने का साहस दिया, जज्बा दिया।
- जीवन में कोई घटना व्यर्थ नहीं गई। हर

घटना ने मुझे सिखाया।
- मोरबी की बाढ़ ने दिन-रात सेवा कार्यों में जुटे रहना सिखाया, सिखाया सेवा करने का भाव।
- भुज के भूकंप ने पुनर्निर्माण के लिए डटे रहना सिखाया।
- चंद्रयान ने असफलता से उठना सिखाया।
- कोरोना महामारी ने राष्ट्र की सामूहिक चेतना का महत्व समझाया।
- मीडिया ने मुझे खट्टे-मीठे अनुभवों के बीच आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।
- जीवन के हर प्रवास ने नीतियों में संवेदना का रास्ता दिखाया।
- हर गांव, हर गरीब ने सिखाया कि साधन-संसाधन भले ही सीमित हों, लेकिन सपने बड़े होने चाहिए और हौसले बुलंद होने चाहिए।

वेद से विवेकानंद तक, जिस राष्ट्र ने महान विचारों का अनवरत अनुष्ठान किया है, जिस राष्ट्र का सांस्कृतिक अनुभव हजारों वर्षों का है, जिस राष्ट्र ने मनुष्य को मानवता का भरोसा दिलाया है, उस राष्ट्र की सेवा करते हुए कभी एकाकी महसूस नहीं हुआ। कभी लगा ही नहीं कि अकेला हूं। कोटि-कोटि स्वयंसेवक, जो भारत की सांस्कृतिक आत्मा के प्रहरी हैं, जिनके जीवन का एकमात्र ध्येय है मां भारती की निःस्वार्थ सेवा, जो इस मंत्र को लेकर जीते हैं, हर पल कहते हैं- हम सेवक हैं मानवता के, सेवा धर्म हमारा है। दीन दुखी की सेवा करना, निश्चित कर्म हमारा है। ऐसे कोटि-कोटि स्वयंसेवकों का, कार्यकर्ताओं का भी भरपूर साथ मिला।

ये दिन सिर्फ यादों के लिए नहीं है, ये अपने संकल्पों को नई ऊर्जा से भरने का दिन है। ये दिन उस वादे को दोहराने का दिन है, उस इरादे को व्यक्त करने का दिन है जो कहता है- हम करके रहेंगे, We will Do it!

लाल किले से ''सबका प्रयास'' की बात की थी। भारत को नई बुलंदियों पर पहुंचाने के लिए जो जोश, जो जज्बा चाहिए, वो कहता है- हम करके रहेंगे, We will Do it!

आप भी दोहराइए-
- विकसित भारत @ 2047- We will Do it! We will Do it!
- Top Three economy- We will Do it!
- आत्मनिर्भर भारत- We will Do it!
- ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब- We will Do it!
- ओलंपिक्स का आयोजन- We will Do it!
- अंतरिक्ष में कदम- We will Do it!

जिस राष्ट्र के लोगों की धमनियों में ऐसा आत्मविश्वास लहू बनकर दौड़ता है, उसे कोई रोक नहीं सकता।

सरकार के मुखिया के तौर पर 25 वर्षों की ये निरंतर यात्रा, लोग इसे उपलब्धि मानते हैं, लेकिन मैं इसे कैसे देखता हूं? ये व्यक्तिगत महिमामंडन का विषय नहीं है।

25 साल पहले, 50 वर्ष की आयु में, जंगलों में आदिवासियों की सेवा करते गुजरा, पहाड़ों में जिंदगी बिताई और भारतीय जनता पार्टी में संगठन की राह चुनी। मेरा राजनीतिक रिपोर्ट कार्ड सिर्फ संगठनकर्ता का था। चुनाव लड़ाए थे, लेकिन एक भी चुनाव लड़ा नहीं था। चुनावी राजनीति में चमकने की चाहत होती तो बहुत पहले ही मैदान में उतर सकता था। लेकिन ये मिजाज नहीं था। जीवन में क्या बनूंगा? मेरा क्या होगा? ये कभी सोचा ही नहीं! क्योंकि बाल्यकाल से जो शिक्षा दीक्षा मिली, वो शिक्षा दीक्षा यही थी कि ambition के लिए नहीं, मिशन के लिए जीने वाला इंसान रहा हूं। जो भी जिम्मेदारियां मिलीं, उन्हें निभाता चला गया। जीवन का एक ही ध्येय था- देश के लिए निःस्वार्थ कर्म। कर्म ही सब कुछ है। कर्म ही धर्म है। गीता ने सिखाया है- ''कर्मण्येवाधिकारस्ते।'' मेरा अधिकार मेरे कर्म पर है। इसलिए कर्म को अपना कर्तव्य मानता हूं- ''नियतं कुरु कर्म त्वम्।'' और हर कर्म पूरी क्षमता से करता हूं- ''योगः कर्मसु कौशलम्।'' गीता ने ये भी कहा है- ''तस्मादसक्तः सततं कार्यकर्म समाचर।'' निरंतर कर्म करो, बिना आसक्ति के कर्म करो, काम रुकना नहीं चाहिए, प्रयास रुकना नहीं चाहिए। इसीलिए मेरे लिए कर्म सिर्फ जिम्मेदारी नहीं है, यह देश के प्रति मेरी साधना है। कर्म देश के लिए, कर्म देशवासियों के लिए। और इसमें भाव यही है- ''मा फलेषु कदाचन।'' फल की चिंता नहीं, श्रेय की भी चिंता नहीं। देश ने अवसर दिया, लोगों ने विश्वास दिया, परिस्थितियों ने सीख दी, जिसकी वजह से मुझे देशवासियों की अविरल सेवा का अवसर मिल रहा है।

पद, प्रतिष्ठा, अधिकार, जब बात देश की होती है तो इन सबका कोई महत्व नहीं रहता। हमने इस अनादि राष्ट्र में जन्म लिया है, ये अहसास ही अमृत है। इसके सामने सत्ता सुख कुछ भी नहीं है। पद-प्रतिष्ठा तो दुनिया में कहीं भी मिल सकती है, लेकिन भारत जैसी पुण्य भूमि नहीं मिलेगी। वो भारत, जिसने अंधकार के युग में भी मानवता को ज्ञान दिया, मूल्यों का प्रकाश दिया, उस राष्ट्र की सेवा का अवसर मिलना ही अमूल्य है। इन 25 वर्षों का आकलन करना है तो ये इससे नहीं होगा कि मैं कहां पहुंचा, बल्कि असली मूल्यांकन इससे होगा कि मेरा देश कहां पहुंचा है।

जब मैं गुजरात में था तो एक मंत्र के साथ जीता था और वो मंत्र था- गुजरात के विकास से देश का विकास। लेकिन वो दौर चुनौतियों से भरा था। तब मेरे पास न तो सरकार चलाने का अनुभव था और न ही प्रशासनिक व्यवस्था का बहुत ज्ञान था। मेरे पास तब कुछ था तो वो था- जनता पर विश्वास। जनशक्ति पर ये भरोसा, सामाजिक कार्यकर्ता के नाते मेरे वर्षों के काम का निचोड़ था। इसी विश्वास को मैंने अपना सामर्थ्य बनाया। मैंने निर्णय लिए जनता को साथ लेकर, नीतियां बनाईं जनता को साथ लेकर, नीतियों को लागू किया जनता को साथ लेकर। और वही मंत्र, मैंने कहा- We will Do it! और जब जनता साथ हो तो परिणाम भी आते हैं। गुजरात ने करके दिखाया। आज गुजरात जहां पहुंचा है, उसका उदाहरण दुनिया देती है। गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में जो अनुभव मिला उसने मुझे बहुत कुछ सिखाया। जमीन पर समस्या क्या है? समाधान क्यों नहीं हो पाता? फाइल क्यों अटकती है? Last Mile Delivery कैसे सुनिश्चित होती है? ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर मैंने खोजा और फिर मैंने जो सीखा, वो अनुभव आज तक काम आ रहा है।

वर्ष 2014 में देश ने मेरे दायित्व का विस्तार किया। प्रधानसेवक के रूप में सेवा का दायरा बढ़ा दिया। और तब भी देश के सामने विकराल चुनौतियां मुंह बाए खड़ी थीं। चारों तरफ समस्याएं ही समस्याएं नजर आती थीं, देश का हर नागरिक नया रास्ता खोज रहा था। भारत की इकॉनॉमी को लेकर दुनिया कहने लगी थी- It is a gone case! तब ग्रोथ कहीं दिखती नहीं थी, महंगाई आसमान छू रही थी। घोर निराशा में डूबे देश को फिर एक नए विश्वास की जरूरत थी।

मैंने फिर वही काम किया जो मुझे आता था। कोटि-कोटि भारतीयों की जनशक्ति का आह्वान किया, उनके सामने फिर दोहराया- We will Do it! और आज 12 वर्ष बाद तस्वीर एकदम बदल गई है। तब एक संकट आता था तो भारत की इकॉनॉमी हिल जाती थी। आज संकट आता है तो भारत के सामर्थ्य की चर्चा होती



है, भारत की रेजिलिएंस की चर्चा होती है। तब Policy Paralysis की चर्चा होती थी और आज Reforms Express की चर्चा होती है। तब Import बढ़ाने के रास्ते खोजे जाते थे और आज Exports के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। तब हम अपनी जरूरत के मोबाइल फोन भी इंपोर्ट करते थे और आज Made in India मोबाइल फोन का जलवा है। तब पूरे भारत में Blackout, ये Global headline बनती थी और आज भारत की सोलर पावर कैपेसिटी के चर्चे होते हैं।

बदलाव की इस कहानी का एक और उदाहरण, शानदार उदाहरण खेती भी है। आजादी के बाद से लेकर अब तक, खेती की विकास दर अगर किसी दशक में निरंतर सबसे अधिक रही है, तो वो बीते 10 वर्ष हैं। साल 2015 से 2025 तक का दशक, इसने खेती की ग्रोथ के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। खेती के लिए जाने-जाने वाले बड़े देशों में भी इतनी तेज ग्रोथ नहीं रही। ये तभी होता है जब नीयत साफ होती है और नीति स्पष्ट होती है।

सबका साथ, सबका विकास, यही सुशासन का आधार रहा है। हमारे देश की एक बड़ी त्रासदी रही है कि राजनीति के लिए समाज को वोटों के हिसाब से बांट दिया गया। आप सोचिए, खेत में पानी नहीं आता तो किसको नुकसान होता है? क्या एक जाति के किसान ही इससे प्रभावित होते हैं? बिजली नहीं आती तो क्या सिर्फ एक समुदाय के घर में अंधेरा रहता है? इन सभी सवालों का जवाब है- नहीं। समस्या सबकी है तो समाधान भी सबके लिए होना चाहिए। और इसीलिए, हमने सुशासन को Saturation से जोड़ा। सैचुरेशन यानि हर लाभार्थी जुड़े, कोई पात्र छूटे नहीं, कोई हकदार पीछे न रहे और किसी के हक पर कोई डाका न डाल सके। यही सैचुरेशन है, यही बदलाव की असली गाथा है।

हमने इस देश में जन्म लिया, मां भारती की गोद में पलने-बढ़ने का सौभाग्य हमें मिला, ये हमारे ऊपर मां भारती का ऋण है, इस देश की पावन पुनीत माटी का ऋण है। क्या हर भारतीय का ये संकल्प नहीं होना चाहिए कि वो कर्तव्य की पराकाष्ठा से कुछ कर्ज उतारे? हमारे दिल की हर धड़कन में क्या एक ही संकल्प नहीं गूंजना चाहिए- हमें भारत के प्राचीन गौरव को पुनर्जीवित करना है!

जो भारत कभी विश्व की अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करता था, जिसके किस्से सुनकर दुनिया समृद्धि की कल्पना करती थी, समय का चक्र बदला, गुलामी का कालखंड आया, आक्रांताओं और लुटेरों ने उसी भारत को लूटकर तबाह कर दिया। जो भारत दुनिया को दिशा दिखाता था, उसके विश्वविद्यालय नष्ट कर दिए गए, उसके पुस्तकालय जला दिए गए। एक ऐसा समय भी आया जब छोटे-छोटे संकट भी विकराल होने लगे। भयावह भुखमरी, विदेशियों के हमले, संस्कृति, सम्मान और स्वाभिमान पर क्रूर प्रहार, ऊपर से ऐसी गरीबी और विभीषिकाएं, लेकिन तब भी मां भारती की संतानों का साहस नहीं टूटा। हर बार, बार-बार कोई दिग्दर्शक जन्म लेता रहा, सामान्य मानवी में नई सुबह का आत्मविश्वास जगाता रहा। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि एक दिन एक अद्भुत, गौरवशाली और महान भारत का उदय होगा। महर्षि अरविन्द ने भी कहा था कि भारत के भाग्य का सूरज जरूर उगेगा और उसकी रोशनी पूरे विश्व को आलोकित करेगी।

अदम्य साहस और अमिट जिजीविषा में तपे हमारे वो पूर्वज, हम उन्हीं की संतान हैं। उन्हीं के तप, त्याग और बलिदानों का परिणाम है कि आज हमारे पास एक ऐसा देश है जहां हमारे सपने स्वतंत्र हैं और उन्हें पूरा करने का सामर्थ्य भी हमारे पास है। आज हम खुद ही अपनी नियति के नियंता हैं। इसलिए, आज ये मां भारती के साथ अन्याय होगा अगर हम छोटे लक्ष्यों को लेकर चलेंगे। ये राष्ट्र के सामर्थ्य के साथ अन्याय होगा अगर हम आसान लक्ष्यों को लेकर चलेंगे। ये समय है जब हम एक देश के रूप में बड़े लक्ष्य रखें। ऐसे लक्ष्य जो अभूतपूर्व हों, जो असाधारण हों!

- विकसित भारत का लक्ष्य,
- आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य,
- इकॉनॉमी को टॉप थ्री में लाने का लक्ष्य,
- गरीबी का नामोनिशान मिटाने का लक्ष्य,
- ड्रग्स फ्री इंडिया बनाने का लक्ष्य।

हमें ऐसा भारत बनाना है कि

- टूरिज्म की बात हो तो दुनिया भारत का नाम ले।
- पढ़ाई की बात हो तो दुनिया भारत को चुने।
- मनोरंजन का डेस्टिनेशन भारत हो।
- हेल्थ एंड वेलनेस की प्राथमिकता भारत ही बने।
- स्पोर्ट्स का सिरमौर भारत हो।
- इनोवेशन का हब भारत हो।
- टेक्नोलॉजी में भारत का डंका पूरे विश्व में बजे!

लक्ष्य ऐसे हों कि हर क्षेत्र में तिरंगा शान से लहराए। आज विश्व में भारत के पायलट की चर्चा है। एक दिन वो भी आएगा जब दुनिया मेड इन इंडिया प्लेन की चर्चा करेगी।

ये लक्ष्य तभी पूरे होंगे जब वर्तमान में हम दूरदर्शी नीतियां भी बनाएं और परिश्रम की पराकाष्ठा भी करें। हमारे देश में समस्याएं हैं, लेकिन हमारे पास 140 करोड़ समाधान भी हैं। अब ये समय आराम का नहीं है, ये समय जोश के साथ आगे बढ़ने का है, खुद को देश के

लिए खपा देने का है। आज भारत जितना युवा है, आज भारत में जितने युवा हैं, वो इतिहास से मिला एक बहुत बड़ा मौका है। ये मौका हमें गंवाना नहीं है। युवा साथियों आपके दादा-दादी, नाना-नानी उस पीढ़ी के लोगों ने जो कष्ट झेले, वो आपको न झेलने पड़ें, आपकी संतानों के भाग्य में वो कष्ट न हों, इसके लिए हमें आज ही काम करना होगा और मैं वही कर रहा हूं।

कुछ लोग कहते हैं कि ये विकसित भारत का लक्ष्य तो बहुत दूर का लक्ष्य है। लेकिन मैं हर देशवासी को कहूंगा कि आप आज से ठीक सौ साल पहले के भारत को याद कीजिए। बीसवीं सदी का वो तीसरा दशक, 1920-30 का वो कालखंड, हजार साल की गुलामी का असर और आघात, टूटा हुआ मनोबल, गरीबी में जकड़ा भारत, समाज को बांटने के षड्यंत्रों से घिरा भारत, ऐसे में आजादी का भरोसा करना कितना मुश्किल रहा होगा? 100 साल पहले की कल्पना कीजिए, लोग लड़ तो रहे थे, अपने बलिदान दे रहे थे, लेकिन भारत फिर से उठ खड़ा होगा, इसकी कल्पना भी कितनी कठिन रही होगी? लेकिन इतिहास साक्षी है कि जो असंभव लगता था वो हुआ! करीब 20 साल बाद ही देश ने अंग्रेजों को खदेड़कर दिखा दिया। गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर भारत आजाद हुआ। इसलिए मेरा विश्वास है कि 2026 में हम विकसित भारत का जो सपना देख रहे हैं, वो जरूर पूरा होगा, अवश्य पूरा होगा। कोई कारण ही नहीं है कि भारत अब रुके! और तब तो, 100 साल पहले, तब तो हम 40 करोड़ से भी कम थे, आज हम 140 करोड़ से भी ज्यादा हैं। 140 करोड़ देशवासी, हम मिलकर 2047 का विकसित भारत बनाएंगे और जरूर बनाएंगे। We will Do it! We will Do it!

मेरा ये विश्वास देश की सिद्धियों से मजबूत हुआ है। यही भारतीय हैं जिन्होंने फ्रेजाइल फाइव इकॉनॉमी को टॉप फाइव बनाया। हमें वन ट्रिलियन डॉलर की इकॉनॉमी बनने में करीब 60 वर्ष लगे, लेकिन जब सही नीतियां मिलीं, सही दिशा मिली, तो उसी भारत ने 12 वर्षों में ही दो ट्रिलियन डॉलर से अधिक ग्रोथ करके दिखा दी। कोरोना का वो दौर याद कीजिए, दुनिया कहती थी कि भारत क्या ही कर लेगा, भारत तो जैसे मौत के ढेर पर बैठा है। लेकिन 140 करोड़ भारतीयों ने दुनिया को गलत सिद्ध किया। भारत ने खुद को भी बचाया और दुनिया के सौ से अधिक देशों में भी लाखों लोगों का जीवन बचाने में अहम भूमिका निभाई। इसीलिए हमें भारत के सामर्थ्य को कभी भी कम नहीं आंकना है।

पेरिस में हुई कॉप-21 की बैठक में भारत ने रिन्यूएबल एनर्जी के क्षेत्र में अपने संकल्पों को दुनिया के सामने रखा। तब भी भारत पर अविश्वास करने वाले बहुत थे। लेकिन भारत ने तय समय से पहले ही वो लक्ष्य हासिल किए। ऐसा करने वाला भारत, G-20 का इकलौता देश है।

विकसित भारत का हमारा सपना भी है, हमारा संकल्प भी है और उसे पूरा करने का हमारे पास सामर्थ्य भी है। आज देश अपनी चुनौतियों का स्थायी समाधान कर रहा है। जम्मू-कश्मीर में Article 370 की समस्या, ऐसा लगता था कि ये अंतहीन है और देश इसके दुष्प्रभावों से बाहर नहीं निकल पाएगा। लेकिन आज Article 370 की दीवार पूरी तरह टूट चुकी है। इसी तरह नक्सलवाद की समस्या को देश का दुर्भाग्य मान लिया गया था, लेकिन आज इसकी कमर तोड़ी जा चुकी है। आतंकवाद भारत के भाग्य को ही चुनौती दे रहा था। देशवासी ये मान चुके थे कि न तो ये आतंकवादी मानेंगे और न ही उनके आका मानेंगे! लेकिन ये भारत की अदम्य इच्छाशक्ति है, हमने घर में घुसकर मारा और दुश्मनों को बता दिया कि भारत की ताकत क्या है।

एक दशक में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकल सकते हैं, ये भी किसने सोचा था? लेकिन भारत ने ये करके दिखाया है। यानि जिसको कल्पना से परे समझा जाता था, वो सिद्धियां भारत ने हासिल की हैं। इसलिए मुझे 140 करोड़ भारतीयों के सामर्थ्य पर भरोसा है और 25 साल का मेरा अनुभव कहता है कि हम अपनी आंखों के सामने भारत को विकसित होते देखेंगे।

आज सवाल सिर्फ ये नहीं है कि 2047 में हमें कहां पहुंचना है। हमें आज ये तय करना है कि उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए अभी से क्या करना है। इसलिए आज देश हर वो कदम उठा रहा है जो विकसित भारत के लिए, आधुनिक भारत के लिए आवश्यक है। भारत के युवा स्टार्टअप्स से लेकर स्पोर्ट्स के मैदान तक छाए रहें, डिजास्टर मैनेजमेंट में भारत की दुनिया में पहचान बने, किसी हिंदुस्तानी के पैर चंद्रमा पर पड़ें, भारत जेनेटिक्स जैसी फील्ड में लीडर बने, भारत क्वांटम कंप्यूटिंग में सबसे आगे खड़ा हो, हम AI की फील्ड में ग्लोबल हब बनें, हमारी यूनिवर्सिटीज दुनिया की टॉप रैंकिंग में गिनी जाएं, मेड इन इंडिया उत्पादों का गौरव हो, दुनिया भारत का सामान खरीदने के लिए लालायित हो, दुनिया की डाइनिंग टेबल पर हमारे किसानों के उत्पाद हों, जब क्लाइमेट चेंज की बात हो, जब वॉटर गवर्नेंस की बात हो, गरीबों को Empower करने की बात हो, तो दुनिया भारत के सॉल्यूशन्स को अपनाए। आने वाले वर्षों में हमारी सामूहिक ऊर्जा, हमारा सामूहिक फोकस इसी दिशा में होना चाहिए।

भारत 140 करोड़ सपनों का भारत है। भारत असीमित ऊर्जा का, अनगिनत आकांक्षाओं का राष्ट्र है। सामर्थ्य की कोई कमी नहीं है, हमें बस हर कदम, हर प्रयास को जोड़ना है, हमें एक ध्येय, एक मकसद से जुटना है। हमें आजादी मिली क्योंकि हमारे देश के लोगों ने जान दी। अब जब विकसित भारत बनाना है तो हमें देश के लिए जीना होगा।

देश के लिए।
हम बढ़ेंगे तो देश के लिए,
हम सीखेंगे तो देश के लिए,
हमारे संकल्प होंगे देश के लिए,
हमारा परिश्रम होगा देश के लिए,
हमारी भक्ति होगी देश के लिए,
हमारी शक्ति होगी देश के लिए,
हम इनोवेट करेंगे देश के लिए,
हम रिसर्च करेंगे देश के लिए,
हम क्रिएट करेंगे देश के लिए,
हमारा प्रण होगा देश के लिए,
हम जिएंगे देश के लिए।

जब हम ये भावना लेकर चलेंगे तो कोई लक्ष्य असंभव नहीं रह जाएगा। हमें शपथ लेकर आगे बढ़ना है कि-

राष्ट्र प्रथम मेरा संकल्प रहेगा,
राष्ट्र समृद्धि मेरा प्रण रहेगा,
राष्ट्र की सेवा मेरा लक्ष्य रहेगा, और
'नागरिक देवो भव' का मंत्र मेरी राष्ट्र साधना का आधार रहेगा,
कर्म मेरा धर्म रहेगा,
कर्तव्य पालन मेरा प्रण रहेगा,
स्व से समष्टि तक,
स्वयं से वयम् तक,
मेरे जीवन का कण-कण,
क्षण-क्षण भारत भूमि को समर्पित रहेगा, और
जब तक भारत विकसित नहीं होता, तब तक मैं न रुकूंगा,
न थकूंगा,
न अपने पथ से डिगूंगा। ▪

मोदी जी के 25 वर्ष स्वर्णिम और युगांतरकारी - अमित शाह

- **7 अक्टूबर का दिन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में स्वर्णिम और युगांतरकारी है, जब एक साधारण परिवार में जन्मे मोदी जी ने लगातार 25 वर्षों तक मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहने का अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया।**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की 25 वर्षों की यह अनवरत यात्रा जनकल्याण, गरीब कल्याण और भारत के गौरव की यात्रा है।**
- **धारा 370 का अंत, नक्सलवाद की समाप्ति, राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण और 25 करोड़ लोगों का गरीबी से बाहर आना - ये सभी ऐतिहासिक कार्य इन्हीं 25 वर्षों में मोदी era में हुए।**



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में 25 वर्ष भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में स्वर्णिम और युगांतरकारी रहे हैं। इन वर्षों में गरीब कल्याण, सुरक्षित भारत, धारा 370 हटाने, नक्सलवाद समाप्त करने, श्रीराम जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ मंदिर निर्माण तथा इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार जैसे ऐतिहासिक कार्य हुए हैं।

7 अक्टूबर का दिन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक प्रकार से स्वर्णिम और युगांतरकारी है। गरीब से गरीब घर में जन्मे हमारे प्रिय नेता, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने गुणों और अपनी क्षमता के आधार पर करोड़ों-करोड़ों लोगों को साथ लेकर लगातार 25 साल मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहने का रिकॉर्ड बनाया है। जब भी भारत का इतिहास लिखा जाएगा, ये 25 साल स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाएंगे। इन 25 वर्षों में गरीबी से मुक्ति, सुरक्षित भारत, धारा 370 हटाना, नक्सलवाद समाप्त करना, श्रीराम जन्मभूमि और काशी विश्वनाथ का मंदिर बनाना, देश में इंफ्रास्ट्रक्चर को उच्चतम स्तर तक ले जाना और 25 करोड़ गरीबों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाना शामिल है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संवैधानिक प्रमुख के रूप में 25 वर्षों की यह अनवरत यात्रा भारत कल्याण, गरीब कल्याण और भारत गौरव की यात्रा है। इस यात्रा को यादगार बनाने के लिए देशभर के हर जिले में यह सेवा ज्योति यात्रा आयोजित की गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 25 साल, पहले गुजरात और फिर देश के करोड़ों-करोड़ों नागरिकों के कल्याण के 25 साल रहे हैं। ये भारत के गौरव के 25 साल रहे हैं। परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी दीर्घायु हों, उनका स्वास्थ्य अच्छा रहे और लंबे समय तक इस देश का नेतृत्व करते रहें। ■

श्री विजयादशमी उत्सव 2026 में पूजनीय सरसंघचालक जी का उद्‌बोधन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

श्री विजयादशमी उत्सव, नागपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी के कार्यक्रमों के समापन के अवसर पर विजयादशमी उत्सव मनाने के लिए हम एकत्रित हैं। यह वर्ष संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650 वे जन्म जयंती वर्ष के निमित्त कार्यक्रमों का वर्ष है। संघ शाखाओं में भी इस अवसर पर संत रविदास जी के जीवन और कार्य की जानकारी देने वाले कार्यक्रम हो रहे हैं। उनके द्वारा परिश्रम, तपस्या, त्याग व स्वयं के जीवन के उदाहरण से समाज में भक्ति, स्वधर्मनिष्ठा तथा सामाजिक समरसता का भाव जागरण, ऐसे समय किया गया, जब देश विदेशी आक्रांताओं के एतद्देशीय धर्म को मानने वाले देशवासियों पर अत्याचार से पीड़ित था। स्वयं के उपदेश तथा जीवन से संत रविदास जी की दी हुई सीख आज भी हम सबके लिए प्रेरक तथा पथदर्शक है। स्वधर्म रक्षा के लिए ही जिन महापुरुषों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया ऐसे दो महापुरुषों के भी स्मरण का यह वर्ष है। आर्यसमाज के तपस्वी संन्यासी, प्रखर धर्माभिमानी, ज्ञानी शिक्षाविद्, वीर स्वातंत्र्यसेनानी तथा शुद्धि आन्दोलन के जनक स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान को 100 साल पूरे हुए। उत्कल के वन प्रदेश में स्वयं रहकर जिन्होंने वहां के अपने समाज की निःस्वार्थ सेवा की और वहीं पर अपना बलिदान भी दिया ऐसे स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती जी महाराज की भी जन्म शताब्दी चल रही है। महात्मा फुले जी का भी 200वां जन्म जयंती वर्ष पिछले 11 अप्रैल से शुरू हो गया है। जिस स्व की रक्षा के लिए इन महापुरुषों के बलिदान हुए, उसी आत्मबोध को समाज में स्वदेशी मेलों के द्वारा जागृत करने का प्रयास करने वाले 'हिन्दू मेला' के प्रेरक व प्रवर्तक, बंग भूमि के स्वर्गीय श्रीमान राज नारायण बसु के भी जन्म का 200वां वर्ष चल रहा है ।

संघ का कार्य भी गत 100 वर्षों से भारत को इसी स्व के,अस्मिता के, ethos के आधार पर संगठित व बलसंपन्न करने के लिये चला है। संघ की शतकपूर्ति के उपलक्ष्य में, जीवन परिवर्तन की कारक जिन पांच पहलों को, पहले



स्वयंसेवकों में प्रवर्तित किया गया व बाद मे समाज में स्वयंसेवक प्रवर्तित करेंगे, उन में एक यही स्व का बोध व स्वदेशी के आचरण की पहल है।

अपने 'स्व' बोध की नींव

हमने अपने देश के संविधान में अपने आप को एक प्रजा के रूप मे, विविधता के बावजूद भावनात्मक दृष्टि से एकरस समाज के रूप में, 'हम भारत के लोग' ऐसा, संबोधित किया है। उस भावनात्मक बंधन को उत्तरोत्तर दृढ़ बनाते जाने का दिग्दर्शन भी स्पष्ट शब्दों में उसी संविधान के मार्गदर्शक तत्त्वों में है। उस भावनात्मक बंधन को जिस तत्व की प्रत्यक्ष अनुभूति जन्म देती है, वह अनुभूति तथा उसे स्पष्ट करने वाला विश्व का सर्वोत्कृष्ट तत्व ज्ञान हमारे पास होने पर भी; हमारा व्यवहार उससे एकदम अलग और निकृष्ट हुआ। इसीलिए विश्वगुरु पद से हम इतने नीचे गिरते आए कि अनेक शतकों तक हमें गुलामी झेलनी पड़ी। अनेक भीम प्रयासों से तथा बलिदानों से उन दुर्दिनों से मुक्त होकर अब हम फिर एक बार अपनी एकता व प्रगति की राह पर चल पड़े है। इसलिए हमें अपनी विस्मृति को दूर कर उस

तत्व को भी स्पष्ट रूप से समझना पड़ेगा, मन से स्वीकार करना पड़ेगा तथा उसके अनुरूप गुणवत्ता का स्वयं के जीवन के सभी आयामों में निर्माण करना पड़ेगा। देश की स्वाधीनता के लिये जितनी तपस्या व समर्पण हुआ उससे कहीं अधिक की आवश्यकता अब पड़ेगी, यह परिस्थिति को हम देखते हैं तो ध्यान में आता है।

भारत जैसे, मत, पंथ, संप्रदाय, प्रान्त, जाति, भाषा, खानपान, रीतिरिवाज, आदि विविधताओं से भरपूर देश में जो विचार इन सभी को स्वीकार करता है, सम्मान देता है, अपनेपन से देखता है, वही हमारी एकता का आधार बन सकता है। सौभाग्य से भारत में सनातन काल से चलती आई परम्परा, जो अनेक आध्यात्मिक महापुरुषों की प्रत्यक्ष अनुभूतियों से निरन्तर स्पष्ट व पुष्ट होती आयी है, वह हमें बताती है कि सृष्टि की विविधता जितनी स्वाभाविक परन्तु परिवर्तनशील है उतनी ही सम्पूर्ण अस्तित्व की एकता शाश्वत, अटल व अचल सत्य है। मनुष्य विचारशील प्राणी होने के नाते उस एकता को स्वयं में तथा जगत में अनुभव कर सकता है। यह करने से ही शाश्वत व नित्य सुख के खोज की जीवमात्र की यात्रा सफल व पूर्ण होती है।

''इसी सत्य को विविध पक्ष से
वेदों में हमने गाया था,
निकट बिठाकर इसी तत्व को
उपनिषदों में समझाया था।
मंदिर - मठ - गुरुद्वारे जाकर
यही ज्ञान सत्संग मिलेगा,''

सभी विविधताओं का सम्मान, स्वीकार, करते हुए उन को संरक्षण देने का भारत का स्वभाव तथा जो परिवर्तनीय एवं/अथवा कालविसंगत है उसे बदलते रहने का लचीलापन इसी सनातन दृष्टि का परिणाम है । जब-जब भारत के जनों में यह भाव सर्वोच्च रहा तब-तब भारत विश्व का सभी दृष्टि से आदर्श राष्ट्र रहा। जब आत्मविस्मृति, विघटन व परस्पर संपर्क टूटने के कारण हम बलहीन, संकुचित, अहंकारी अथवा भयग्रस्त हो गये, हमने इस आचरण को त्याग दिया, तब हमारी दुर्गति हुई। हमें अपने अस्तित्व व अस्मिता के इस आधार को फिर से स्मरण करते हुए संगठित व परस्पर हित के लिए कटिबद्ध होना होगा।

संघ शताब्दी के कार्यक्रम

शताब्दी के निमित्त संघ की शाखाओं के व स्वयंसेवकों के संपर्क के विस्तार के लिए कार्यक्रम किये गए। साथ-साथ देश में तथा विश्व में भी भारत, हिन्दू व संघ के बारे में व्यापक प्रबोधन की योजना को भी क्रियान्वित किया गया। कार्यक्रमों का अबतक प्राप्त हुआ वृत्त इस प्रकार है–

संपर्क अभियान - 4,61,527 ग्रामों एवं 41,076 नगरीय बस्तीयों में 10,19,88,511 घरों में संपर्क किया गया।

प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठी -1,117 जिलों में हुए गोष्ठियों में 4,26,497 नागरिक (महिला + पुरुष) उपस्थित रहे ।

सदभावना बैठक - 5,036 खण्डों में सम्पन्न हुई।

हिन्दू सम्मलेन - 34,187 मंडलों में सम्पन्न हुए।

युवा सम्मेलनों में 39,25,225 युवा उपस्थित रहे।

संघ के कुछ कार्यकर्ताओं के प्रवास पश्चिम के तथाकथित विकसित देशों में भी वहां के समाजों में भारत, हिंदुत्व तथा संघ के बारे में सही जानकारी देने की दृष्टि से हुए। वहां भी हमारी सनातन, सर्वसदभावी भारतीय संस्कृति, हिन्दु समाज की सर्वसमावेशकता, तथा संघ के उद्देश्य व कार्य की सही व सत्य जानकारी सब के सम्मुख रखी गयी। विश्व में भारत के प्रति एक कुतूहल जाग रहा है। जड़वाद, व्यक्तिवाद तथा संयम रहित उपभोग पर आधारित अधूरी दृष्टि के कारण भौतिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी वे देश चिंता में हैं। विविधताओं को कैसे संभालना, विकास व पर्यावरण को कैसे साथ चलाना, जो अपने जैसे नही है उनसे अपनेपन से कैसे बरतना, कुटुंबजीवन के तथा नई पीढ़ियों में संस्कारों के क्षरण को कैसे रोकना आदि समस्याओं का उत्तर उनके पास नहीं है। इसीलिए विश्व आज भूराजनैतिक तनावों के, आर्थिक अनिश्चितता के, पर्यावरणीय संकट के और वर्चस्व की लड़ाई में विनाश को देख रहा है। भारत के पास इन सब समस्याओं के सारे उत्तर हैं यह वे जानते हैं। इस लिए हमारे कार्यकर्ताओं के कथनों को वहां अच्छी तरह सुना गया, व चर्चाएं भी चल पड़ी है। देश में तथा विश्व में शताब्दी के निमित्त प्रारम्भ हुआ सब प्रकार का संवाद आगे भी सतत व निरंतर चलता रहे ऐसी योजना बनाने में कार्यकर्ता लगे हैं ।

प्रश्न परिवर्तन की पाचों पहलों का यथा - समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण, स्व बोध व स्वदेशी और नागरिक अनुशासन - समाज के सभी वर्गों तथा स्तरों में स्वागत हुआ है। विश्व के अन्य देशों में भी इसकी आवश्यकता अनुभव की गयी है। यह केवल एक वर्षभर का कार्यक्रम नहीं अपितु जीवन में आचरण का परिवर्तन लाने वाली व्यवहार की शैली है। प्रत्यक्ष कृति से आदत व आदतों से स्वभाव बनाने वाले यह कार्य जीवन के सभी आयामों में सतत चलाने होंगे, तब परिवर्तन आयेगा। हमारे समाज में संस्कारों के द्वारा इस प्रकार के, विश्व की धारणा करने वाले धार्मिक जीवन की आदतों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता रहा है।

विवेकशील आचरण की आवश्यकता

वर्तमान काल में परिवार के बड़ों से, विद्यालयों के पाठ्यक्रम से अथवा समाज के वातावरण से यह संस्कार मिलना दिन-प्रतिदिन कम हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी की प्रगति के कारण सब प्रकार की जानकारी, समाचार समाज माध्यमों के द्वारा सबको मिलती है। अनेक देशों में नई पीढ़ी को उन माध्यमों से मिलती हुई जानकारी बिना उचित-अनुचित का विवेक किये नई पीढ़ी ग्रहण करती है। उसके दुष्परिणामों का अनुभव ले चुकने के बाद उन देशों ने उन माध्यमों पर कुछ अनुशासन और निर्बंध लागू किये है। हमारे अपने देश में भी इस प्रकार की आवश्यकता, विशेषतः 'OTT platforms' को लेकर, समाज में अनुभव की जा रही है। शासन प्रशासन को इसका विचार करना चाहिये। साथ ही जानकारी स्वैर रूप में मिलती हो तो भी उचित-अनुचित का विवेक करना नई पीढ़ी को सिखाना पड़ेगा। उस विवेक के अनुपस्थिति के कारण व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में कई प्रकार के दुष्परिणाम देखने को मिलते है। इस विवेक के अभाव में ही विश्वभर में नई पीढ़ी नशीली दवाओं की आदत की शिकार हो रही है। नशा एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है और उसके परिहार के लिए समय रहते शासन-प्रशासन तथा समाज को प्रयास प्रारम्भ करने चाहिए। समाज की वर्तमान अभिभावक पीढ़ी को यह विवेक नई पीढ़ी को देना पड़ेगा व नई पीढ़ी को अपनेआप को ऐसी आदत निर्माण करने वाले सभी प्रवृत्तियों से दूर रखना पडेगा। इस दृष्टि से भारत में इस समस्या का निराकरण करने वाले सभी को साथ लेकर देशभर में इस समस्या का निरास करने वाला एक देशव्यापी प्रतिरोध खड़ा हो इसलिए स्वयंसेवक प्रयास करेंगे।

आने वाले समय में परम वैभव संपन्न विश्वगुरु भारत के निर्माण का बड़ा दायित्व नई पीढ़ी के कंधे पर ही आने वाला है। इस चुनौती को स्वीकार कर सफलता पूर्वक उसका उत्तर देने के लिए हमारे युवाओं को सब प्रकार से सन्नद्ध होना चाहिए।

संतुलित व समग्र विकास की दृष्टि

विज्ञान और तकनीकी की प्रगति मनुष्यों को भौतिक दृष्टि से सुखी जीवन जीने में, जीवन में ज्ञान और तर्क के आधार पर अपने व्यवहार को निर्दोष करने में मदद करती है। इसलिए नए ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी का स्वागत और स्वीकार करना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि तकनीकी केवल साधन है। केवल उपभोगवादी अथवा जड़वादी दृष्टिकोण से विकास होता है तो सुख सुविधा के साथ उससे बड़ी हानि मोल लेनी पड़ती है। हाल ही में नेपाल में जिस भयंकर त्रासदी को झेलना पडा, हजारों मनुष्यों की बली चढ़ गयी, उसके मूल में कहीं ना कहीं सम्पूर्ण हिमालय के क्षेत्र में जो भारत, तिब्बत, भूटान, चीन ऐसे अनेक देशों से गुजरता है, में चले ऐसे एकांगी विकास का परिणाम है। इतनी बड़ी मात्रा में मनुष्य हानि का दुःख हम सभी को अनुभव होता है और त्रासदी के बाद के पीड़ितों को राहत पहुंचाना आदि कार्यों में तो हम सब लगते ही है परन्तु विकास की समग्र व संतुलित दृष्टि निर्माण होना आवश्यक है। साधन का योग्य दिशा में उपयोग करने वाला, उपयोग के औचित्य, अनौचित्य को तय करने वाला तो मनुष्य होता है। इसलिए ज्ञान के या तकनीकी के साथ-साथ ही उसका उचित उपयोग हो ऐसा विवेक और उसके उपयोग का नैतिक व भौतिक अनुशासन भी सीखकर आचरण में लाना चाहिए। अन्यथा परमाणुओं के रचना के ज्ञान से स्वच्छ ऊर्जा से ज्यादा जीवन संहारक अस्त्र निकलेंगे व कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे अत्यंत उपयोगी तंत्रज्ञान से भी मनुष्य को भ्रमित करने वाले, ठगने वाले, झूठ के उपक्रम निकलते रहेंगे।

भारत की सनातन, अपनी समग्रता व एकात्मकता के कारण बनी जीवन दृष्टि इसीलिए समन्वय व संयम के संस्कारों की संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में देखना चाहती है। उसको हमारे पूर्वजों ने 'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' ऐसा संबोधित किया है । भारत को इस दृष्टि के आधार पर समग्र, एकात्म विकास का अपना नया प्रतिमान उदाहरण के रूप में दुनिया के सामने खड़ा करना ही होगा ।

हिन्दू भाव व हिन्दू स्वभाव - एकता का आधार

हमारे राष्ट्र की चेतना यही सनातन दृष्टि है जिसे आज हम भारत के लोगों सहित सारा विश्व हिन्दू दृष्टि के नाम से जानता है। कोई विशिष्ट पूजा पद्धति, कोई विशिष्ट खान-पान, रहन-सहन, कोई सामाजिक या राजनीतिक मतवाद किसी विशिष्ट जाति, भाषा, प्रान्त इस की अनिवार्यता इसमें नहीं हैं। इन सब से उपर आध्यात्मिकता, मानवता तथा विश्वबन्धुत्व ही इस के लक्षण है। भारतीयों में इस भाव के विद्यमान होने से ही 'भा' याने ज्ञान के प्रकाश में रत भारत यह भारतीयता की एक परिभाषा बनी है। पूरे विश्व को जोड़ सकने वाले व जोड़ना चाहने वाले इस हिंदु भाव का स्मरण व पोषण भारत के प्रगति व एकता की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत में इस भाव का रूप उत्कट भारत भक्ति, हम सभी भारतीयों में अपनी समान पूर्वज परंपरा का गौरव एवं आदर्श तथा भारत की सनातन संस्कृति के मूल्यबोध के अनुरूप स्वयं के जीवन को गढ़ते जाना यह है। प्राचीन काल से भारत भूमि पर निवास करने वाला जनसमूह इसी दृष्टि को लेकर एक समाज के नाते जीता आया है ।

हम सभी भारतवासियों की एकता - स्वाभाविक व बिना शर्त

हम सब का परस्पर नाता व भारत के साथ सम्बन्ध यह एक जीवमान सम्बन्ध हैं जो हृदय का होने से बिना शर्त है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहें' ऐसा एकतरफा है। अपनेपन के, आत्मीयता के अथवा रिश्ते-नातों के संबंधों में कोई शर्तें नही होती। बस, उन संबंधों के आधार पर पक्का रहना होता है। हमारे स्वाधीनता सेनानियों का राष्ट्र के प्रति ऐसा ही सम्पूर्ण बिन शर्त समर्पण रहा, तभी ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी हिंदु भाव को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सुसंगठित व बलसंपन्न समाज बनाने के लिए कार्य कर रहा है । व्यक्ति जीवन से विश्व जीवन तक की धारणा, प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा भी बिना सामर्थ्य के संभव नही। अतएव संगठित व बलसंपन्न हिन्दु समाज की बात करना या उसके लिए कार्य करना सर्व पंथ समादर की भावना अथवा राष्ट्र की भावनिक एकात्मकता के विरुद्ध नही है; हिंदू समाज का विचार व स्वभाव समावेशक होने के नाते ऐसा कार्य हम सब की भावनिक एकात्मता, सदभावना व सदाचार का पोषक ही होगा यह बात समझनी चाहिए। पीढ़ी दर पीढ़ी मिलता रहा यह स्वभाव व संस्कार ही कैप्टेन स्मित मच्छार को अपनी प्राणों की बाजी लगाकर मनुष्यों के संरक्षण के लिए स्वयं को झोंक देने की प्रेरणा देता है।

सदभावनापूर्ण व्यवहार आवश्यक

यह केवल विचार या वाणी की बात नहीं है। हम सभी के आचरण में यह भाव प्रकट होना चाहिए। हमारा भारत विशाल है। प्रकृति व पर्यावरण के विविध रूपों से सजा है। विविध पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति, खानपान व रीति रिवाजों के मानने वाले समूहों से भरा बहुरंगी परंतु एक समाज है। परस्पर व्यवहार में, मन वचन कर्म में सदभावना और अपनापन होना व दिखना चाहिए। गत काल के इतिहास से मनमे पड़ी एक दूसरे के प्रति आशंकाएं हमें दूर रखती है। इतिहास के उन तथ्यों को स्वीकार करते हुए भी गांठे सुलझ जाएँ, नयी न पड़े, ऐसा व्यवहार हमारा चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर हमें उकसाकर झगड़े खड़े करने-कराने वाले लोगों से दूर रहना चाहिए। इतने बड़े व विविधतापूर्ण समाज में यह वातावरण उत्पन्न होने में समय लगेगा। परन्तु देश व विश्व के कल्याण की इच्छा रखने वाले सभी को धैर्यपूर्वक अपने आप को तथा समाज को सम्हालते हुए कार्य करते रहना पड़ेगा। समाज के लोगों से बरतते हुए, हम सर्व साधारण व्यक्तियों से लेकर तो शासन-प्रशासन के लोगों तक, विशेषकर कोई विशिष्ठ अभियान अथवा नीति को समाज में लागू करने की बात होती है, तब अपना व्यवहार भद्र रहे, अपनेपन का रहे, नागरिक व्यक्तियों के सम्मान आदि का लिहाज करने वाला होना चाहिए यह ध्यान रखना चाहिए ।

इधर-उधर घटने वाली कुछ अवांच्छित तथा/ अथवा अप्रत्याशित घटनाओं को; जिन में संघ का न सम्बन्ध है न समर्थन; ले कर संघ की सदभावना या हेतु की प्रामाणिकता पर संदेह उत्पन्न करने के प्रयास भी होते रहते है। संघ के कार्य का आधार शुद्ध सात्त्विक प्रेम है। संघ का कार्य स्वयंसेवकों के समर्पण एवं सेवा - परिश्रम के कारण चलता है। संघ को अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं चाहिए। एक सत्य को लेकर उसकी प्रतिस्थापना के लिये श्रद्धा

विश्वास पूर्वक स्वयंसेवक लक्ष्य पूर्ण होने तक कार्य करते रहेंगे।

आप सब की अच्छी तरह समझी इन बातों को इस लिए दोहरा रहा हूं क्योंकि समझदार लोग भी विचलित हों ऐसा वातावरण है अथवा खड़ा किया जा रहा है। भारत सहित सारे विश्व में जो जो भद्रता, मांगल्य, सांस्कृतिक व मानवीय संस्कार है, वह सारा नष्ट-भ्रष्ट, उद्ध्वस्त करने की आसुरी प्रतिज्ञा लेकर पश्चिम से एक आंधी चली है। विश्व भर के तथाकथित प्रगत देश भी उस से त्रस्त, असहाय है। परन्तु पिछले दशकों में भारत ने स्वयं की शक्ति तथा सुनीति के कारण विश्व में धीरे धीरे अपना स्थान बनाया है। भारत के समाज का पुरुषार्थ सुदृढ़ नीतियाँ, नेतृत्व, देशाभिमान तथा विश्व के प्रति अपने दायित्व के बोध की जागृति के कारण सभी क्षेत्रों में यशस्वी हो रहा है। भारत की इस प्रकार की प्रगति के कारण विश्व के राष्ट्रों में अराजकता खड़ी कर अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिए सहाय्यक हो सकने वाले अपने पिट्ठुओं को वहां स्थापित करने का षडयंत्र करने वाली ताकतों के खेल बंद होंगे। इस वस्तुस्थिति को ये आसुरी ताकतें जानती है। इसलिए भारत ही उस का निर्णायक व सब से बलवान प्रतिस्पर्धी और अंतिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। भारत, हिंदू व संघ को किस प्रकार तोड़ सकते हैं (dismantling) इस का विचार कर योजना बना कर वे कार्य करती हैं। उन्हीं की प्रकृति के कुछ लोग इसमें उन्हें सहायता के लिये मिल जाते हैं। क्षुद्र सत्ता स्वार्थ तथा विवेकहीनता के कारण कुछ महत्वाकांक्षी नेता लोग भी शामिल होते है। अपने इतने बड़े समाज में समस्याएँ तो है। व्यवस्था की कमियाँ भी ढेर सारी होगी। उनके चलते आंदोलनों का होना भी स्वाभाविक ही है। परन्तु आंदोलन समाधान देने के लिए होने चाहिए। आन्दोलन करने वाला समाज का कोई समूह हो, शांति व सुव्यवस्था कायम रखने के लिए कार्यवाही करने वाला शासन-प्रशासन या राजनीतिक नेतागण हो, अपने एक अखंड समाज में हमारी करनी के कारण किसी प्रकार की अनबन, द्वेष, त्वेष, मलाल या विभाजन पैदा नहीं होना चाहिए, भावनाएं तीव्र होने पर भी हमारे संविधान कानून की मर्यादा में, बोल चाल चलन के भद्र व्यवहार के संकेतों की मर्यादा में हमारी कृतियाँ हों, यह ध्यान रखना चाहिए। वोट, सस्ती लोकप्रियता अथवा राजनीतिक लाभ का लोभ हमारे विवेक व सदभावना पर हावी न हो यह चिंता करनी ही पड़ेगी।

समाज के उद्यम से समाधान

समाज की सब समस्याएं शासन ही सुलझा सकता है अथवा आन्दोलनों से ही समस्याएं सुलझती है ऐसा भी अनुभव नहीं है। समाज की सक्रियता व आपसी संवाद के आधार पर भी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

संघ के स्वयंसेवक समाज में इस प्रकार का सामाजिक उद्यम खड़ा करने का प्रयास करते है। ग्रामीण विद्यालयों को ध्यान में रखते हुए स्वयंसेवकों के ऐसे प्रयासों का अनुभव उत्साहवर्धक है। 21 प्रान्तों के 210 जिलों में लगभग 1296 विद्यालयों में यह देखा गया कि जहाँ ग्रामवासियों का सहभाग व स्वयंसेवकों का साथ रहा वहां छात्रों की उपस्थिति, सीखने का स्तर तथा अभिभावकों की सहभागिता में सुधार आया। समाज ने शिक्षा सहायता तथा आधारभूत सुविधाओं के साथ साथ खेल व सांस्कृतिक तथा मूल्य आधारित गतिविधियों में भी योगदान दिया। ग्रामवासियों के सम्मिलित प्रयासों के आधार पर गावों के समग्र विकास के प्रयास तो हजारों ग्रामों में चल ही रहे है। देश भर में स्वयंसेवकों द्वारा चलने वाले सभी सेवा कार्यक्रमों में अपने देशबंधुओं में स्वाभिमान, स्वावलम्बन तथा राष्ट्र के जीवन में सहयोग - सहभाग की भावना बलवती बने; तथा उसे चरितार्थ करने की शक्ति एवं क्षमता उन्हें प्राप्त हो यह प्रयास होता है।

सजगता की आवश्यकता

इन प्रयासों के पीछे, समाज व देश को चलाने की जिम्मेदारी हमारी भी है, क्योंकि यह देश व समाज मेरा अपना है, यह अपनेपन की प्रेरणा रहती है। आंदोलनों के पीछे भी यही प्रेरणा होनी चाहिए। परन्तु जब ऐसी स्थिति न होकर आंदोलन राजनीति का साधन बन जाता है, किसी व्यक्ति, समूह या विचार के प्रति विरोधी शत्रुभाव लेकर चलता है तब इसका लाभ भारत को दबाना चाहने वाली शक्तियां लेती है। मतभेदों को और गहरा बनाकर मनभेद उत्पन्न करना, समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अन्याय ग्रस्तता की (victimhood) भावना उत्पन्न करना आदि करते हुए देश में देश की व्यवस्थाओं के बारे में अश्रद्धा उत्पन्न करना, कलह, उग्र असंतोष, अलगाव, अव्यवस्था व अराजकता का वातावरण बनाना यह उन की कार्यपद्धति है। भारत को दबाये रखना चाहने वाली विश्व की शक्तियां भी कभी कभी इसमें अपना खेल करती रहती है। श्रीमती आशा भोसले जी के गाए, श्री पी. सावळराम रचित एक बहुत पुराने मराठी गीत की आखरी पंक्तियाँ याद आती है।

''वाढवीत भेदभावा दुष्टतेचा फिरतो कावा
गाठूनिया भोळ्या जीवा अंधारात घालिल घावा''
(भोले-भाले लोगों को पकड़ कर भेद भाव बढ़ाते हुए दुष्टता अंधेरे में से आघात कर रही है।)
इसलिए - ''चित्त नित्य सावध ठेवा एक लक्ष्य लावून डोळे''
(सावधान हों कर लक्ष्य पर केंद्रित हो जाएँ।)

स्पष्ट है कि ऐसी विभेदकारी प्रवृत्तियों के द्वारा निर्मित बुद्धिभेद के चपेट से बचते हुए अपनी परस्पर सदभावना की रक्षा करनी होगी। सावधान रह कर किसी प्रकार से उद्वेलित, उत्तेजित न होते हुए, भारत को विश्वगुरु पद पर देखने की अपनी आकांक्षा व लक्ष्य नित्य ध्यान में रखते हुए हमें प्रयासरत रहना होगा । आत्मीयता, अनुशासन तथा अपने राष्ट्रीय ध्येय के प्रति निष्ठा पर मजबूती से टिका समाज ही एकता को पाता है, तथा अपराजेय शक्ति को पाता है। संघ की यह प्रतीति है कि अपने समाज ने प्राचीन काल में अस्तित्व की एकता के सत्य को साक्षात किया, व इसी एकता की अनुभूति समय-समय पर विश्व को देने हेतु सभी का स्वीकार, सम्मान व प्रतिष्ठा करने वाले बहुरूप परन्तु एकरस जीवन को हमारा समाज जीता आया है।

एकता के सूत्रों पर दृढ़ रहें

हमारे समाज के इस जीवन ध्येय को हमने ध्यान में रखा तब हम सभी विजयी हुए। जब लॉर्ड कर्जन ने बंगाल को हिंदू से मुसलमान को अलग करने के लिए विभाजित करना चाहा तब एक भूमि व एक समाज को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का विरोध समाज से डट कर हुआ, ब्रिटिश सत्ता को अपना विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। उसी एकता व देशभक्ति के प्रतीक के रूप मे उस समय 'वन्दे मातरम्' का उदय हुआ । विभाजन परास्त हो गया। ऐसा 1947 में क्यों नही हो पाया? क्यों कि हम विशिष्ट है इसलिए हम अलग थलग है, हम अलग दिखते है इसलिए अलग ही है यह विचार; हमें बांट कर लड़ाते रखना चाहने

वालों ने हमारे मन में बिठा दिया। सांप्रदायिक कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव से हमने भी यह मन बना लिया कि अलग दिखते है इसलिए वास्तव मे भी हम एक नही, अलग ही है। अलगाव, राजनीतिक वर्चस्व की लालच तथा स्वार्थ सिद्धि के संयुक्त जुनून में हम, हमें एक बनाकर रखने वाले आधारों को क्रमशः नकारते चले गए। तुष्टीकरण की मानसिकता के कारण हमें तोड़ने वाली इस मानसिकता को हवा मिलती गई। देश विभाजन तक हो गया। लेकिन जिस शान्ति तथा अलग, स्वायत्त अस्तित्व के सुख की आशा दिखा कर यह दुष्टता का विभाजनकारी खेल किया गया, वह सुख-शान्ति तो मिली नहीं; उल्टे सीमा पर तथा देश में सदा के लिए अशांति, परस्पर अविश्वास, असुरक्षा व छोटे-छोटे कारणों से कलह हमने मोल लिया।

बंग भंग के विभाजनकारी षडयंत्र को परास्त करने वाला वन्देमातरम आज भी वही एकता की प्रेरणा देने में सशक्त है। वह अपना राष्ट्रगीत है। उसे स्वाभिमान से, उच्च कंठ से तथा संपूर्ण गाने में कोई संकोच या विरोध नहीं होना चाहिए।

भारत की मातृभूमि के नाते भक्ति, हमारे समान भारतीय पूर्वजों के जीवन का गौरव व अनुकरण तथा हमारी सनातन भारतीय संस्कृति के वैश्विक मानवीय मूल्यों के अनुसार अपने जीवन को ढालना यह हम सबको सदा एक रखते आये है। सभी पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति आदि विविधताओं के अविरोधी तथा उनके परे यह सारे आधार है। इनके नित्य परिशीलन से इनको समझना व मन से अपनाना हमारी एकता के साथ साथ हम प्रत्येक की विशिष्टता को भी पुष्ट करते रहेगा। अपनी छोटी पहचानों पर खतरे की आशंकाओं से अथवा उनके अहंकार में भ्रमित हो कर; हमारी एकता के इन आधारों को छोड़ कर, बार बार वहीं ठोकर खाने की गलती हमें नहीं करनी चाहिए ।

अपने अपने छोटे अहंकार, अपने स्वयं की तथा अन्य लोगों की उपासनाओं के बारे में पाले हुए भ्रम तथा विविधता को अलगाव मानने की प्रवृत्ति को हमें त्यागना ही पड़ेगा। भारत भक्ति, पूर्वज गौरव तथा भारतीय संस्कृति के हम सभी को जोड़ने वाले इस त्रिसूत्र को मन से अपनाते हुए देश के लिए जीने की राह पर बढ़ना होगा।

भारत का वैश्विक दायित्व व हमारे कर्तव्य

जिन समस्याओं के कारण आज विश्व त्रस्त एवं आतंकित है, उनके मूल में जीवन के दृष्टिकोण का अधूरापन है, वरना पुरुषार्थ के मामले में हम भी शेष विश्व से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन बातों को सीखने के साथ साथ अपनी राष्ट्रीयता का स्पष्ट स्वरूप समझते हुए उसको अंगीकार कर, अपनी एकता व गुणवत्ता को संजोकर, हम संगठित पुरुषार्थ में जुट जाए यह आवश्यक है। धर्म तत्व से विकास के पथ को सर्वांग परिपूर्ण बना कर दुनिया को सुख और शांति की नई राह दे सकने वाला भारत खड़ा करना है। हमें अपने राष्ट्रीय मूल्यों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व को एक नया विकास पथ अपने उदाहरण से देना है। हम जीवन में जो भी करेंगे, वह गुणवत्ता में उत्कृष्ट ही होगा, समाज व देश की सुरक्षा, एकात्मता, सामाजिक न्याय एवं प्रगति - प्रतिष्ठा के लिए उचित ही होगा यह सजगता रखनी होगी । भारत का परम वैभव तथा विश्वगुरुत्व हममे से प्रत्येक के पुरुषार्थ से सिद्ध होनेवाला है। दूसरा कोई भी पर्याय अथवा छोटा रास्ता (shortcut) उपलब्ध नहीं है। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवन व्यवहार में नित्य छोटी-छोटी सत्कृतियों के द्वारा परिवर्तन लाते हुए सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है। पंचपरिवर्तन की पहलें व स्वयंसेवकों द्वारा चलायी गयी गतिविधियाँ इसी पद्धति से व्यक्ति को देशसेवा व भक्ति की राह पर कदम कदम बढ़ाती है।

अपने कार्य के शतवार्षिकी के कार्यक्रमों को व लक्ष्यों को पूर्ण करने के पश्चात समाज की यह संगठित पुरुषार्थी विजयशालिनी शक्ति खड़ी करने की ओर संघ बढ़ेगा।

''साध्य करना है हमे केशव प्रदर्शित ध्येय सपना।
बस उसी की पूर्ति के हित हो समर्पित जन्म अपना।।
तुष्ट माँ होगी तभी तो विश्व में सम्मान पा कर।
बढ़ रहे है चरण अगणित बस इसी धुन में निरंतर।।
ध्येय के पथ पर निरंतर''।।

।। भारत माता की जय ।। ▪

विकसित भारत, विकसित म.प्र.



अखिलेश जैन, सीए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विकसित भारत@2047 के लक्ष्य की सिद्धि के लिए डबल इंजन की सरकारें हर क्षेत्र में भरसक प्रयास कर रही हैं। भारत की राजनीति को मोदी जी के संकल्पों ने नई दिशा प्रदान की है, विकसित भारत@2047 के संकल्प ने हर क्षेत्र, हर भूभाग, हर मंत्रालय को अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करने का अमूल्य अवसर प्रदान किया है। खुशी की बात है विकास की दौड़ में शामिल होने का सीधा-सीधा लाभ जनता को प्राप्त होता है।

जबलपुर, भोपाल और इंदौर को जोड़ने वाला इकोनॉमिक कॉरिडोर खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र उद्योग और पर्यटन सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रदेश के प्रमुख आर्थिक केंद्रों के विकास को गति देगा। निवेश की संभावनाओं को बल मिलेगा। औद्योगिक विकास का लाभ स्थानीय युवाओं को रोजगार के रूप में मिलेगा। प्रदेश की देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मप्र सरकार के प्रयासों से उद्यमियों, युवाओं, स्वरोजगार व पेशवरों को अवसर प्राप्त होंगे। प्रस्तावित इकोनॉमिक कॉरिडोर पलायन रोकने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। देश के नक्शे में जबलपुर-इंदौर-भोपाल अपनी उपस्थिति उभरते औद्योगिक-आर्थिक क्षेत्र के रूप में दर्ज करवाने में सफल होंगे। ▪

(लेखक भाजपा म.प्र. के कोषाध्यक्ष हैं)

कार्यकर्ता और विचारधारा सबसे महत्वपूर्ण - हेमंत खण्डेलवाल

- **आगामी चुनावों में अपने जिले की सभी विधानसभा सीटें जीतने के लक्ष्य के साथ जुटें कार्यकर्ता।**
- **मीसाबंदियों का त्याग और समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है।**
- **भाजपा में पद नहीं, कार्यकर्ता और विचारधारा सबसे महत्वपूर्ण। संगठन की असली ताकत उसका कार्यकर्ता और उसकी विचारधारा**
- **प्रत्येक बूथ को सशक्त बनाकर संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं कार्यकर्ता।**
- **सुरक्षित, समृद्ध और विकसित भारत बनाने के लिए भाजपा संगठन को मजबूत बनाएं।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में केंद्र और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। सरकार गरीबों और जनजातीय परिवारों को सम्मानजनक जीवन उपलब्ध कराने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। भाजपा में कोई पद महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि कार्यकर्ता और विचारधारा संगठन की असली ताकत हैं। मीसाबंदियों का त्याग, संघर्ष और समर्पण आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। समस्त कार्यकर्ता पूरी निष्ठा, मेहनत और समर्पण के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, प्रत्येक बूथ को सशक्त बनाएं और संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के संकल्प के साथ कार्य करें। कार्यकर्ता आगामी चुनावों में जिले की सभी विधानसभा सीटों पर विजय प्राप्त करने के लक्ष्य के साथ एकजुट होकर जुटें तथा केंद्र और प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाएं।



प्रधानमंत्री मोदी जी और डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा योजनाओं का लाभ।

गरीबों और जनजातीय परिवारों को सम्मानजनक जीवन देने के लिए प्रतिबद्ध है केन्द्र और प्रदेश सरकार।

मीसाबंदियों का त्याग और समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। हमें अपने गौरवशाली इतिहास को याद रखते हुए उनसे प्रेरणा लेकर संगठन को मजबूत बनाने और आने वाली पीढ़ी तक संघर्ष व समर्पण के संस्कार पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। संगठन की असली ताकत समर्पित कार्यकर्ता हैं। प्रत्येक कार्यकर्ता अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए हर बूथ को मजबूत बनाने में जुटें। आगामी चुनावों में अपने-अपने जिलों में सभी सीटों पर जीत का लक्ष्य लेकर एकजुटता से कार्य करना चाहिए। कांग्रेस शासन के दौरान लोकतंत्र की रक्षा के लिए अनेक कार्यकर्ताओं ने 19 महीने तक जेल में रहना स्वीकार किया, लेकिन अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। सभी लोकतंत्र सेनानियों ने उस समय संगठन के लिए संघर्ष किया, जब सत्ता में आने की कोई उम्मीद नहीं थी। ऐसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का सम्मान करना और उनके त्याग और बलिदान को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है। जब हम लोकतंत्र सेनानियों के घर जाते हैं, तो हमारा सिर सम्मान से झुकता है, क्योंकि उनके परिवारों ने देश और विचारधारा के लिए कठिन परिस्थितियों में त्याग किया है। मालवा और निमाड़ वह क्षेत्र है जहां वर्ष 1962 और 1971 के दौर में जब जनसंघ के लिए राजनीतिक परिस्थितियां बेहद कठिन थीं, तब भी कार्यकर्ताओं ने विचारधारा की लौ जलाए रखी। वर्ष 1962 में प्रदेश में जनसंघ को मिली चार सीटें उस समय एक बड़ी उपलब्धि थीं। यदि हम अपनी पुरानी शक्ति, समर्पण और संगठनात्मक परंपरा को पहचानकर आगे बढ़ेंगे, तो निश्चित रूप से और अधिक मजबूती प्राप्त करेंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सार्वजनिक

जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने पर सेवा संकल्प अभियान चलाया जा रहा है, जिसके माध्यम से पार्टी में सेवा और जनकल्याण से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित, समृद्ध और विकसित राष्ट्र सौंपने के लिए भाजपा संगठन को मजबूत बनाएं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश बहुत तेजी से विकास कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी आर्थिक और सामरिक पहचान मजबूत की है। देश की अर्थव्यवस्था, उद्योग, आधारभूत संरचना, बिजली, निर्यात और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आज भारत दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और आने वाले वर्षों में और अधिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

विकास का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होता है, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने गरीबों और आदिवासी परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराने का संकल्प लेकर प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से लाखों परिवारों के जीवन में बदलाव लाने का काम किया है। महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाने के लिए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत करोड़ों गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। किसानों की फसल प्राकृतिक आपदाओं से खराब होने पर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की गई। गरीब परिवारों को गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु आयुष्मान भारत योजना शुरू की गई, जिससे पात्र परिवारों को अस्पतालों में उपचार की सुविधा मिल रही है। स्वच्छ भारत अभियान, जनधन योजना और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण जैसी योजनाओं ने देश के विकास को नई गति दी है। आज सरकारी योजनाओं की राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुंच रही है। यह पारदर्शिता और सुशासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

युवा पीढ़ी को बताएं कि कांग्रेस के शासनकाल के समय मध्यप्रदेश की क्या स्थिति थी और भाजपा की सरकार बनने के बाद मध्यप्रदेश किस तरह प्रगति कर रहा है। हमें देश की आर्थिक प्रगति, आधारभूत संरचना, स्वास्थ्य, शिक्षा और जनकल्याणकारी योजनाओं के संबंध में प्रमाणिक तथ्यों के साथ लोगों के साथ संवाद करना चाहिए। कार्यकर्ताओं को इन विषयों की जानकारी लेकर जनता के बीच जाना चाहिए और देश की विकास यात्रा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

भाजपा में कोई भी व्यक्ति केवल सत्ता या पद प्राप्त करने के लिए कार्य नहीं करता। आज कोई प्रदेश अध्यक्ष है, कोई विधायक है और कल कोई दूसरा इन दायित्वों पर होगा, लेकिन संगठन की असली ताकत उसका कार्यकर्ता और उसकी विचारधारा है। किसी पद पर न होने का अर्थ यह कतई नहीं है कि कार्यकर्ता की भूमिका कम हो जाती है। प्रत्येक कार्यकर्ता संगठन की मजबूती में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए सभी कार्यकर्ताओं को अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा, मेहनत और समर्पण के साथ करना चाहिए। आज हम जो कार्य कर रहे हैं, उसका परिणाम आने वाली पीढ़ियों को दिखाई देगा। आज से 50 वर्ष बाद भी देश और समाज को गर्व होना चाहिए कि हमने राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के साथ संगठन और विचारधारा को मजबूत करने का काम किया। इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक बूथ मजबूत हो, संगठन सशक्त बने और कार्यकर्ता समाज के बीच निरंतर सक्रिय रहें। सभी कार्यकर्ताओं को संगठन को और अधिक मजबूत बनाने, सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरी मेहनत और निष्ठा से निभाने तथा जनसेवा के कार्यों में सक्रिय रहना चाहिए। ▪

अराजक राजनीति उजागर होगी - चंद्रशेखर

कांग्रेस ने अपने कार्यों और तौर-तरीकों से देश को नुकसान पहुंचाया है। कांग्रेस की अराजक राजनीति को पार्टी कार्यकर्ता जनता के सामने उजागर करें। पार्टी कार्यकर्ता संगठन को मजबूत बनाने के साथ जन-जन तक विचारधारा को पहुंचाने का कार्य करें। विपक्ष अब आंदोलनों की आड़ में देश में अराजकता की स्थिति पैदा करने का प्रयास कर रही है। लोकतंत्र बचाने के नाम पर संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाना विपक्ष की राजनीति का हिस्सा बन गया है। भाजपा 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' अभियान के माध्यम से कांग्रेस की नीतियों और अराजक राजनीति को जनता के सामने उजागर करेगी।

कांग्रेस ने प्रारंभ से जिस राजनीतिक



मॉडल पर कार्य किया, उससे देश को बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है। कांग्रेस की नीतियों ने समाज में विभिन्न प्रकार के भेदभाव को बढ़ावा दिया, जबकि भाजपा ने आंदोलनों और जनजागरण के माध्यम से बेहतर व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया। चुनावी पराजय के बाद कांग्रेस ईवीएम पर सवाल उठाती है और लोकतंत्र बचाने के नाम पर संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर प्रहार करती है। कार्यकर्ताओं को जनता के बीच जाकर इन विषयों पर तथ्य परक संवाद करना है। भाजपा का लक्ष्य ही देश और समाज के हितों के लिए कार्य करना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश में नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। भाजपा सरकार निर्णायक नेतृत्व और ईमानदार शासन की दिशा में लगातार काम कर रही है। डिजिटल तकनीक के विस्तार, राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने, स्वदेशी संसाधनों को बढ़ावा देने तथा गरीब कल्याण की योजनाओं को प्राथमिकता देने जैसे कार्य सरकार की कार्यशैली के प्रमुख आधार हैं। भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं पुनरुत्थान की दिशा में भी व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं। ▪

प्रवास एवं संवाद आवश्यक - चंद्रशेखर

- **जनसेवा से जनविश्वास मजबूत करें कार्यकर्ता, संगठनात्मक प्रवास और जनसंपर्क को दें प्राथमिकता।**
- **संगठनात्मक प्रवास और नियमित संवाद से मजबूत होगा संगठन।**
- **तथ्यों, तैयारी और संवाद के साथ जनता के बीच पहुंचें कार्यकर्ता।**



भाजपा को सर्वस्पर्शी संगठन बनाना हमारा लक्ष्य, कार्यकर्ता संगठन की रीढ़ हैं।

संगठन की मजबूती सक्रियता, समन्वय और समाज के साथ निरंतर संवाद से सुनिश्चित होती है।

कार्यकर्ता संगठन की रीढ़ हैं और भाजपा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने वाला सर्वस्पर्शी संगठन बनाना हमारा लक्ष्य है। संगठन की वास्तविक मजबूती कार्यकर्ताओं की सक्रियता, आपसी समन्वय, अनुशासित कार्यपद्धति और समाज के साथ निरंतर संवाद से सुनिश्चित होती है। कार्यकर्ताओं को संगठन को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने, जनसंपर्क का दायरा बढ़ाने और जनसेवा के माध्यम से जनता के विश्वास को और मजबूत करना चाहिए। भारत भूमि में जन्म लेना सौभाग्य की बात है और देशभक्ति व समाजसेवा के उद्देश्य से कार्य करने वाले संगठन का हिस्सा बनना गौरव के साथ बड़ी जिम्मेदारी भी है। भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता बनना और निरंतर संगठन के लिए समर्पित रहना उन असंख्य कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या, संघर्ष, आंदोलनों और यात्राओं की गौरवशाली परंपरा से जुड़ना है, जिन्होंने संगठन को आज इस ऊंचाई तक पहुंचाया है। प्रत्येक कार्यकर्ता को जनता के बीच सक्रिय रहकर सेवा और संगठन के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाना है। संगठन की मजबूती केवल पदों और बैठकों तक सीमित नहीं है, बल्कि कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी, परस्पर समन्वय और समाज के साथ सतत संवाद ही इसकी असली ताकत है।

संगठन में कोई दायित्व छोटा या बड़ा नहीं होता, बल्कि प्रत्येक कार्यकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पार्टी की विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता, निर्धारित कार्यपद्धति का पालन, नियमित बैठकें और संगठनात्मक प्रवास संगठन को नई ऊर्जा एवं मजबूती प्रदान करते हैं। जिन क्षेत्रों में संगठन की पहुंच अपेक्षाकृत कम है, वहां योजनाबद्ध तरीके से विस्तार करते हुए संगठनात्मक गतिविधियों को अधिक प्रभावी और व्यवस्थित बनाने की आवश्यकता है।

संगठन की प्रत्येक गतिविधि स्पष्ट कार्ययोजना, बेहतर समन्वय और सामूहिक जिम्मेदारी के साथ संचालित होनी चाहिए। बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करना और प्रत्येक कार्यकर्ता की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है। भाजपा को सर्वस्पर्शी संगठन बनाने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचना, उनकी समस्याओं को समझना और उनके समाधान के लिए संवेदनशीलता के साथ कार्य करना आवश्यक है।

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में चुनौतियां केवल चुनावी प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं हैं। सामाजिक मुद्दों, वैचारिक विमर्श और जनसंवाद के विभिन्न स्तरों पर भी कार्यकर्ताओं को सजग, सक्रिय और संवादशील रहना होगा। कार्यकर्ताओं को तथ्यों एवं पूरी तैयारी के साथ अपनी बात जनता के सामने रखनी चाहिए, ताकि पार्टी की विचारधारा, नीतियों और जनकल्याणकारी कार्यों को प्रभावी ढंग से समाज तक पहुंचाया जा सके। जनसेवा के कार्यों के माध्यम से जनता के विश्वास को बनाए रखना और उसे निरंतर मजबूत करना प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है। जनता के बीच निरंतर संपर्क, उनकी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और सेवा कार्यों में सक्रिय भागीदारी ही संगठन को समाज से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। ■

कार्यों व विचारधारा को जनता तक पहुंचाएं - डॉ. मोहन यादव

- **सोशल मीडिया के जरिए संगठन व सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाएं।**
- **कांग्रेस हमेशा से लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ करती रही है। कांग्रेस की असलियत जनता को बताएं।**
- **भाजपा कार्यकर्ता लोकतंत्र के सच्चे सिपाही, लोकतंत्र को बचाने के लिए कार्य कर रहे हैं।**

शरद पूर्णिमा पर अमृत की वर्षा होती है, इसलिए सोशल मीडिया की कार्यशाला में जो अमृत की वर्षा हुई है, उस अमृत को लेकर सोशल मीडिया कार्यकर्ता गांव-गांव जाएं और संगठन व सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाएं। आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल क्रांति का युग है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम अपने विचारों, संस्कारों और सकारात्मक कार्यों को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। हमारे विचार अमृत के समान हैं, जिनके माध्यम से हम समाज में सकारात्मकता का संचार कर सकते हैं और अपनी वैचारिक पहचान स्थापित कर सकते हैं। सोशल मीडिया कुछ ही मिनटों



में किसी विषय को व्यापक चर्चा का केंद्र बना सकता है, इसलिए तथ्यों के साथ संगठन की बात व सरकार के कार्यों को सोशल मीडिया के सहारे जनता तक पहुंचाएं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भाजपा ने जनसंपर्क के नए आयाम स्थापित किए हैं। आज देश में लोकतंत्र, संवैधानिक संस्थाओं और राजनीतिक विमर्श को लेकर विभिन्न प्रकार की चर्चाएं हो रही हैं। कांग्रेस के इतिहास, आपातकाल और लोकतांत्रिक संस्थाओं से जुड़े उसके निर्णयों का उल्लेख करते हुए हमें तथ्यों के आधार पर अपनी बात जनता के सामने रखनी चाहिए।

कांग्रेस देश में अराजकता फैलाकर सत्ता में आना चाह रही है। कांग्रेस पहले भी देश में आपातकाल लगाकर लोकतंत्र का गला घोंट चुकी है। सत्ता के बिना बेचैन कांग्रेस एक बार फिर देश के लोकतंत्र और संवैधानिक संस्थाओं को कठघरे में खड़ा कर रही है। कांग्रेस जब-जब सत्ता से बाहर होती है, संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाती है। कांग्रेस पार्टी और उसके नेता देश में अराजकता का माहौल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। पार्टी कार्यकर्ता सोशल मीडिया के जरिए तथ्यों और ऐतिहासिक संदर्भों के साथ जनता को वास्तविक स्थिति से अवगत कराएं। कांग्रेस की असलियत जनता तक पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया के कार्यकर्ताओं और डिजिटल योद्धाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें अपनी बात संयमित, प्रभावी और प्रमाणिक तरीके से रखनी है, ताकि जनता तक सही जानकारी पहुंचे और भ्रामक सूचनाओं का तथ्यात्मक जवाब दिया जा सके। कार्यशाला से प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर सभी कार्यकर्ता डिजिटल माध्यमों पर संगठन की विचारधारा, सरकार के जनकल्याणकारी कार्यों और सकारात्मक उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ मैदान में उतरेंगे। ■

भ्रामक प्रचार का तथ्यों और तर्कों से जवाब दें - हेमंत खण्डेलवाल

- **कांग्रेस ने देश में वर्षों तक शासन किया, लेकिन विकास की सही दिशा नहीं दी।**
- **पार्टी कार्यकर्ता विपक्ष की झूठ को तथ्यों के साथ सोशल मीडिया के जरिए जनता तक पहुंचाएं।**
- **विपक्ष के नैरेटिव का तथ्यात्मक जवाब देना कार्यकर्ताओं का दायित्व।**



भाजपा कार्यकर्ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विजन, कार्यों और भाजपा की विचारधारा को सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाएं। सोशल मीडिया जनसंवाद और जनमत निर्माण का प्रभावी माध्यम है। विपक्ष विभिन्न मुद्दों पर भ्रम फैलाकर गलत नैरेटिव स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। ऐसे में भाजपा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि वे तथ्यों,

तर्कों और प्रमाणिक जानकारी के साथ विपक्ष के आरोपों का जवाब दें तथा केंद्र और प्रदेश सरकार के कार्यों, जनकल्याणकारी योजनाओं और संगठनात्मक गतिविधियों को प्रभावी ढंग से जनता के सामने रखें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आत्मनिर्भरता और विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। कार्यकर्ता सरकार की उपलब्धियों और राष्ट्रहित में किए जा रहे प्रयासों को जनता तक पहुंचाकर संगठन को और अधिक सशक्त बनाएं। भाजपा कार्यकर्ता विपक्ष के भ्रामक प्रचार को तथ्यों के साथ चुनौती देते हुए सोशल मीडिया पर अपनी सक्रियता और संवाद को निरंतर बढ़ाएं।

कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल आरोपों के माध्यम से जनता को भ्रमित करने और अपने पक्ष में नैरेटिव बनाने का प्रयास कर रहे हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं को इस चुनौती का सामना पूरी सजगता, सक्रियता और जिम्मेदारी के साथ करना होगा। सोशल मीडिया पर केवल प्रतिक्रिया देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही जानकारी, प्रमाणिक तथ्यों और तर्कपूर्ण संवाद के माध्यम से जनता का विश्वास जीतना आवश्यक है। कार्यकर्ता अपनी विचारधारा, सरकार के कार्यों और संगठन की गतिविधियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करें। भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्रवाद की विचारधारा से प्रेरित होकर काम करते हैं और विपक्ष के किसी भी भ्रामक प्रचार को तथ्यों के आधार पर जवाब देने में सक्षम हैं। प्रत्येक सोशल मीडिया कार्यकर्ता अपने दायित्व को समझते हुए पूरी निष्ठा से कार्य करे। ▪

कांग्रेस का असली मकसद देश को टुकड़े-टुकड़े करना है - बिप्लब कुमार देब

- **कांग्रेस पार्टी में न नेता हैं न नीति, झूठ फैलाकर सत्ता में आना चाह रहा एक परिवार।**
- **कांग्रेस पार्टी पर एक परिवार का कब्जा, जो अपना नाम व सरनेम तक सही नहीं बताते।**
- **भाजपा कार्यकर्ता आधारित दल, संगठन की राय ही कार्यकर्ता की राय हो।**

कांग्रेस पार्टी का असली मकसद देश को टुकड़े-टुकड़े करना है। मंदिरों के खिलाफ बोलने वाले, कांग्रेस पार्टी के एक नेता यात्रा निकाल रहे हैं। कांग्रेस पार्टी में न नेता बचे हैं और न ही संगठन। कांग्रेस पार्टी में सभी नेताओं की अपनी-अपनी राय होती है, उस पार्टी की अपनी कोई विचारधारा नहीं है। देशभर में कांग्रेस पार्टी अपना औचित्य खोती जा रही है। मध्यप्रदेश में कांग्रेस पार्टी पूरी तरह से समाप्त होने की स्थिति में है। कांग्रेस नेता सत्ता प्राप्ति के लिए तरह-तरह के नैरेटिव सेट करने का प्रयास करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। कांग्रेस टुकड़े-टुकड़े गैंग के साथ हिडन एजेंडे पर कार्य करती है। भाजपा कार्यकर्ता राष्ट्रप्रथम की विचारधारा



को लेकर देश की सेवा के लिए राजनीति में आए हैं। भाजपा कार्यकर्ता कांग्रेस के किसी भी राष्ट्र विरोधी मंसूबो को कामयाब नहीं होने देंगे। कांग्रेस पार्टी सोशल मीडिया के जरिए देश में एक झूठा नैरेटिव सेट करने का प्रयास कर रही है। सोशल मीडिया के सभी कार्यकर्ताओं को तथ्यों और तर्कों के साथ सरकार और संगठन के कार्यों को जनता तक पहुंचाना है और जनता को कांग्रेस की सच्चाई से भी अवगत कराना है।

भाजपा कार्यकर्ता आधारित दल है। भाजपा जनसंघ के समय से जिस विचारधारा को लेकर चली है, आज भी उसी विचारधारा को आगे बढ़ा रही है। भाजपा ने विचारधारा से कभी समझौता नहीं किया। मध्यप्रदेश देश का हृदय प्रदेश है। मध्यप्रदेश बड़ा राज्य है। मध्यप्रदेश भाजपा का संगठन देशभर में एक आदर्श संगठन के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए हैं। हमें मध्यप्रदेश के संगठन की इस पहचान को बनाए रखने के लिए सोशल मीडिया पर सक्रियता बनाए रखनी है। भाजपा में सभी कार्यकर्ता हैं, दायित्व अलग-अलग हैं। सभी कार्यकर्ता अपने-अपने दायित्व को समझें और दिये गए दायित्व को पूरी गंभीरता से निर्वहन कर संगठन को बुलंदियों तक पहुंचाएं। सभी सोशल मीडिया के कार्यकर्ता डिजिटल योद्धा हैं, जिन पर संगठन और सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी है। सभी कार्यकर्ता ऐसा कार्य करें कि उत्कृष्ट उदाहरण बन जाए। भाजपा कार्यकर्ता मध्यप्रदेश में ऐसा कार्य करेंगे कि प्रदेश में कांग्रेस का कोई नाम लेने वाला नहीं रहेगा। ▪

भाजपा के कार्य राष्ट्रनीति और विचारधारा हेतु- चंद्रशेखर

- **कांग्रेस वंशवाद, जातिवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार की जननी है।**
- **कांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं का भारतीय संस्कृति और परंपराओं से कोई लेना-देना नहीं है।**



भाजपा राजनीति नहीं राष्ट्रनीति के लिए कार्य करती हैं। भाजपा कार्यकर्ता व्यक्ति नहीं विचारधारा के लिए कार्य करते हैं। कांग्रेस पार्टी भारत में वंशवाद, जातिवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार की जननी है। कांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं का भारतीय संस्कृति और परंपराओं से कोई लेना-देना नहीं है। देश के आजाद होने के बाद कांग्रेस पार्टी ने नव निर्माण के नाम पर देश की संस्कृति, परंपराओं को कमजोर करने का कार्य किया। कांग्रेस ने देश की संस्कृति और परंपराओं को कभी महत्व नहीं दिया। वह तुष्टिकरण के नाम पर देश को बांटने का षड्यंत्र रचने का कार्य करती रही है। कांग्रेस पार्टी आज भी देश में अराजकता फैलाना चाहती है। पार्टी कार्यकर्ता युवाओं को बताएं कि कांग्रेस पार्टी ने देश में शासन किया, लेकिन उसने राजनीति में आदर्श स्थापित करने की बजाय वंशवाद स्थापित किया। देश को आगे ले जाने की बजाय जातिवाद के नाम पर बांटने और आपस में लड़ाने का षड्यंत्र किया। धार्मिक स्थलों के पुनर्निर्माण का कार्य हो या विकास का कोई कार्य कांग्रेस ने हमेशा अच्छे कार्यों में रोड़ा अटकाने का कार्य किया है। भाजपा के सोशल मीडिया कार्यकर्ता तथ्यों और आंकड़ों के साथ भाजपा सरकार और संगठन के कार्यों को जनता तक पहुंचाने के साथ कांग्रेस और विपक्षी दलों की असलियत जनता तक पहुंचाएं। ■

सोशल मीडिया राजनीति का अभिन्न भाग- दीपक हस्के

- **संगठन के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं सोशल मीडिया के कार्यकर्ता।**
- **समाचार और नैरेटिव में अंतर को समझना होगा।**



मध्यप्रदेश संगठन की दृष्टि से देश के महत्वपूर्ण और सशक्त राज्यों में शामिल है। प्रदेश में सोशल मीडिया के क्षेत्र में भी नए प्रयोग हुए हैं और दूसरे राज्यों ने यहां के अनुभवों से सीख ली है। सोशल मीडिया राजनीति का अभिन्न अंग बन चुका है। बदलती तकनीक और लोगों की रुचियों के अनुरूप कार्यकर्ताओं को अपनी कार्यशैली में निरंतर बदलाव लाना होगा। वर्ष 2014 से लेकर पिछले लोकसभा चुनावों में सोशल मीडिया का प्रभाव दिखाई दिया है। अब नए डिजिटल प्लेटफॉर्म की संभावनाओं को पहचानना आवश्यक है क्योंकि आज का युवा वर्ग तक उसी के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। सोशल मीडिया की ताकत केवल फॉलोअर्स की संख्या में नहीं, बल्कि लोगों के साथ निरंतर संवाद और वास्तविक जुड़ाव में निहित है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में पार्टी से जुड़े कम से कम 100 डिजिटल साथियों की टीम तैयार करें और उन्हें उनकी क्षमता एवं रुचि के अनुसार अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपते हुए प्रशिक्षित करें। संगठन से जुड़े प्रभावशाली व्यक्तियों की क्षमताओं और अनुभवों का उपयोग कर सोशल मीडिया पर संवाद को अधिक प्रभावी बनाएं। सोशल मीडिया पर केवल कार्यक्रमों की तस्वीरें पोस्ट करना या नेताओं के दौरों की जानकारी साझा करना पर्याप्त नहीं है। प्रत्येक कार्यक्रम और गतिविधि के माध्यम से ऐसा संदेश जनता तक पहुंचना चाहिए, जो लोगों के जीवन, उनकी अपेक्षाओं और सरकार की योजनाओं से जुड़ा हो।

समाचार और नैरेटिव में अंतर है। किसी योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को भूमि अधिकार प्रमाण-पत्र देना समाचार है, लेकिन उस अधिकार से लाभार्थी के जीवन में आने वाले बदलाव, परिवार के भविष्य और आर्थिक संभावनाओं को सामने लाना प्रभावी नैरेटिव है। इसी प्रकार केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं के वास्तविक लाभ को लोगों के अनुभवों और स्थानीय उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। विपक्ष किसी विषय को बार-बार उठाकर उसे व्यापक चर्चा का हिस्सा बनाने का प्रयास करता है। ऐसे में तथ्यों के आधार पर अपनी बात रखना और जनता के सामने वास्तविक स्थिति स्पष्ट करना आवश्यक है। सोशल मीडिया पर किसी विषय की पहुंच बढ़ाने के लिए निरंतरता, प्रभावी प्रस्तुति और सही प्लेटफॉर्म का चयन महत्वपूर्ण है।

कार्यकर्ता दिनभर सोशल मीडिया पर चल रहे विषयों का अध्ययन करें, स्थानीय मुद्दों को समझें, युवाओं की पसंद के अनुरूप रचनात्मक कंटेंट तैयार करें और उसे योजनाबद्ध तरीके से प्रसारित करें। संगठनात्मक गतिविधियों को डिजिटल माध्यमों से व्यापक समाज तक पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया की टीमों को सक्रिय, तकनीकी रूप से दक्ष और परिणामों का नियमित आकलन करने वाला बनाना आवश्यक है। ■

स्थानीय मुद्दों के जरिए प्रभावी नैरेटिव गढ़ें- शिवानंद द्विवेदी

- **तथ्यात्मक और प्रभावी नैरेटिव निर्माण में सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका।**

वर्तमान दौर में सोशल मीडिया पर नैरेटिव की महत्वपूर्ण भूमिका है। आम जनमानस के बीच हमारी विचारधारा, संस्कार और नीतियों को लेकर होने वाली चर्चा नैरेटिव का प्रतिबिंब होती है। कई बार विपक्ष तथ्यों से परे विषयों को चर्चा में लाता है, ऐसे में कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि वे तथ्यों को समझकर भ्रामक नैरेटिव का तथ्यात्मक जवाब दें। मध्यप्रदेश के सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं की संगठन के प्रति निष्ठा, कर्मठता और समर्पण सराहनीय है। कार्यकर्ता प्रतिदिन संगठन एवं वरिष्ठ नेताओं के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट और संगठन के विभिन्न समूहों में साझा होने वाली सामग्री से अपडेट रहें, ताकि दिनभर के लिए पार्टी के संदेश और प्राथमिकताओं को समझ सकें। सोशल मीडिया पर प्रत्येक विषय पर प्रतिक्रिया देने के बजाय उसकी प्रासंगिकता, तथ्यों और संभावित प्रभाव का आकलन करना आवश्यक है। स्थानीय समस्याओं, विकास कार्यों और केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों की वास्तविक कहानियों को सोशल मीडिया पर प्रमुखता से साझा करना है। स्थानीय लोगों के अनुभवों पर आधारित वीडियो और प्रामाणिक सामग्री जनता के बीच अधिक विश्वसनीयता स्थापित करते हैं।

कार्यकर्ता स्थानीय स्तर पर प्रभावी सामग्री तैयार कर उसे मंडल, जिला और प्रदेश स्तर तक पहुंचाएं, जिससे संगठन के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने और प्रभावी नैरेटिव निर्माण में मदद मिल सके। ■

प्रभावी नैरेटिव निर्माण में निभाएं भूमिका - निशांत खरे

प्रदेश भर में निकलने वाली पदयात्राओं और संगठनात्मक अभियानों में हम प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होते हैं, लेकिन सोशल मीडिया के माध्यम से इन अभियानों की पहुंच लाखों लोगों तक बनाने की जिम्मेदारी कार्यकर्ताओं की है। सोशल मीडिया के जिला, संभाग और प्रदेश स्तर के पदाधिकारी अपनी सक्रियता और प्रभाव से संगठनात्मक गतिविधियों को व्यापक पहचान दिला सकते हैं। सोशल मीडिया पर केवल कंटेंट पोस्ट करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही ऑडियंस की पहचान कर सही प्लेटफॉर्म पर प्रभावी और प्रामाणिक सामग्री पहुंचाना जरूरी है। सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं को प्रत्येक माह के अंत में अपने जिले की सोशल मीडिया ऑडिट रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। इसमें पार्टी के कंटेंट की पहुंच, उसकी प्रभावशीलता, स्थानीय मुद्दों पर तैयार सामग्री, विपक्ष द्वारा चलाए गए नैरेटिव और दोनों पक्षों के कंटेंट के प्रदर्शन का विश्लेषण शामिल होना चाहिए। संगठन का काम केवल पोस्ट साझा करवाना नहीं, बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की गतिविधियों का अध्ययन करना, प्रभावशाली लोगों और स्थानीय इन्फ्लुएंसर्स से संवाद स्थापित करना तथा जनहित के विषयों को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करना भी है। इसमें सोशल मीडिया की अहम भूमिका है। इसलिए कार्यकर्ता योजनाबद्ध रणनीति, नियमित समीक्षा और संगठनात्मक समन्वय के साथ कार्य करें। ■



मौत से ठन गई

अटल बिहारी वाजपेयी

ठन गई!
मौत से ठन गई!

जूझने का मेरा कोई इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था,

रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,
यों लगा जिन्दगी से बड़ी हो गई।

मौत की उम्र क्या? दो पल भी नहीं,
जिन्दगी-सिलसिला, आज कल की नहीं,

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?

तू दबे पाँव, चोरी-छिपे से न आ,
सामने वार कर, फिर मुझे आजमा।

मौत से बेखबर, जिन्दगी का सफर,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर,

बात ऐसी नहीं कि कोई गम ही नहीं,
दर्द अपने-पराए कुछ कम भी नहीं।

प्यार इतना परायों से मुझको मिला,
न अपनों से बाकी है कोई गिला,

हर चुनौती से दो हाथ मैंने किये,
आँधियों में जलाए हैं बुझते दिए,

आज झकझोरता तेज तूफान है,
नाव भँवरों की बाँहों में मेहमान है।

पार पाने का कायम मगर हौसला,
देख तूफां का तेवर तरी तन गई।

मौत से ठन गई।

SIR - सारे उत्तर

1. इस बार जिन भी राज्यों में SIR की प्रक्रिया हुई, वहाँ मतदाताओं को इस प्रक्रिया के लिए कम से **कम 100 से 158 दिन [4 से 5 महीने]** का समय मिला है।

2. देश के **95 करोड़ मतदाताओं में से 82 करोड़ (88 प्रतिशत) मतदाताओं** ने इस प्रक्रिया के तहत अपना गणना फॉर्म [enumeration form] भरकर अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाया और **देश के जिम्मेदार मतदाता** होने का परिचय दिया।

   a. लगभग **13 करोड़ मतदाताओं** के नाम अंतिम मतदाता सूची में नहीं आए क्योंकि वे **ASDD (Absent, Shift, Dead Duplicate)** सूची में थे। इनमें से **2.89 करोड़ मृत** मतदाता थे और **1.01 करोड़ डुप्लीकेट** मतदाता थे। बाकी मतदाताओं के घर BLO और सभी **राजनीतिक** दल जिनके कार्यकर्ता इस प्रक्रिया में भाग लिया वे तीन-तीन बार गए, लेकिन इसके बावजूद ऐसे मतदाताओं के फॉर्म नहीं भरे गए। इससे संकेत मिलता है कि ये मतदाता अनुपस्थित थे या किसी अन्य स्थान पर चले गए थे।

   b. लेकिन अभी भी ऐसे मतदाता अपना **फॉर्म 6** भर कर वोटर बन सकते है।

   c. जिस **फॉर्म-7** को लेकर विपक्ष सवाल उठा रहा है, वह नाम हटाने की एक **वैधानिक प्रक्रिया** है। पूरे देश के **95 करोड़** मतदाताओं में से केवल **29 लाख** मतदाताओं के नाम **फॉर्म-7** के माध्यम से हटाए गए। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन **29 लाख फॉर्मों** में सभी राजनीतिक दलों (भाजपा, कांग्रेस, टीएमसी,जेडीयू, बीएसपी-राजद) और स्वयं मतदाताओं द्वारा पूरे देश में भरे गए फॉर्म शामिल हैं।

3. इसके बावजूद, **दो करोड़ से** अधिक मतदाताओं ने **फॉर्म-6** के माध्यम से मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करवाया।

4. पूरे देश में अब तक यह प्रक्रिया लगभग **9 लाख** से अधिक बूथों पर हुई है। इसमें विभिन्न सरकारों के लगभग **11 लाख** से अधिक सरकारी अधिकारी (आईएएस, पीसीएस से लेकर अध्यापक तक) इस प्रक्रिया की निगरानी और संचालन की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

5. **भाजपा एवं कांग्रेस के लगभग 9-9 लाख BLA** और अन्य राजनीतिक दलों के **BLA** को मिलाकर **लगभग 25 लाख** से अधिक राजनीतिक दलों द्वारा अधिकृत कार्यकर्ताओं ने इस प्रक्रिया में हिस्सा लिया। अर्थात लगभग **45 लाख लोग इस SIR प्रक्रिया में शामिल हुए।**

6. **विपक्ष इस प्रक्रिया पर सवाल उठाकर क्या अपनी ही पार्टियों के लाखों कार्यकर्ताओं पर वोट चोरी का आरोप लगा रहा है?**

7. **कांग्रेस नेता राहुल गांधी और आम आदमी पाटी के नेता अरविंद केजरीवाल** सहित विभिन्न विपक्षी दलों के नेता बार-बार मतदाता सूची पर सवाल उठा रहे थे। लेकिन अब जब मतदाता सूची को शुद्ध करने की प्रक्रिया चल रही है, तो वे इसका विरोध कर रहे हैं।

8. **तमिलनाडु और केरल** में कांग्रेस गठबंधन के दलों ने SIR को एक **महत्वपूर्ण उपलब्धि** मानते हुए अपनी जीत के संदर्भ में इसे **लोकतंत्र की दिशा में एक प्रभावी कदम बताया है।**

9. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने **27 मई 2026** के अपने फैसले में चुनाव आयोग द्वारा किये गए SIR प्रकिया की वैधता को बरकरार रखा, कोर्ट ने कहाः- **चुनाव सिर्फ वोट डालने का दिन नहीं, उसकी नींव साफ और भरोसेमंद मतदाता सूची है।**

1. SIR क्या है

SIR मतदाता सूची की गहन जाँच और शुद्धिकरण की प्रक्रिया है जो **आजादी से अब तक 8 बार** हो चुकी है जिसमे **अधिकतम बार कांग्रेस के प्रधानमंत्री** थे। इसमें अनुपस्थित, स्थायी रूप से स्थानांतरित, मृत और दोहरे पंजीकरण वाले मतदाताओं **(ASDD)** की पहचान कर उन्हें हटाया जाता है। नाम, पते और अन्य गलत विवरण सुधारे जाते हैं। छूटे हुए पात्र नागरिकों एवं नव मतदाताओं के नाम जोड़े जाते हैं।
चुनाव आयोग यह कार्य संविधान के **अनुच्छेद 324** और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, **1950 की धारा 21** के तहत करता है। **अनुच्छेद 326** पात्र वयस्क भारतीय नागरिकों के मतदाता के रूप में पंजीकरण का आधार देता है।

2. मतदाता सूची कैसे तैयार होती है

- BLO घर घर जाकर मतदाताओं को **गणना फॉर्म** देते हैं। मतदाता अपनी जानकारी भरकर फॉर्म जमा करते हैं।
- फॉर्म में दी गई जानकारी का उपलब्ध रिकॉर्ड से मिलान किया जाता है। जहाँ आवश्यक हो, संबंधित दस्तावेज माँगे जाते हैं।
- गणना के आधार पर प्रारूप मतदाता सूची प्रकाशित की जाती है। लोग इसमें अपना नाम और विवरण देख सकते हैं।
- नाम छूटने, गलत विवरण होने या किसी नाम पर आपत्ति होने पर आवेदन दिया जा सकता है। संबंधित अधिकारी जाँच और आवश्यक सुनवाई के बाद निर्णय लेते हैं।
- दावों और आपत्तियों पर निर्णय के बाद अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित की जाती है।

3. SIR कितनी बार हुआ है

SIR 2025 के पूर्व निम्न वर्ष में किया गया है - 1952-56, 1957, 1961, 1965-66, 1983-84, 1987-89, 1992-95 और 2002-2004।

वर्ष या अवधि	केंद्र में सत्तारूढ़ दल या गठबंधन	प्रधानमंत्री	मुख्य चुनाव आयुक्त
1952-56	कांग्रेस	जवाहर लाल नेहरू	सुकुमार सेन
1957	कांग्रेस	जवाहर लाल नेहरू	सुकुमार सेन
1961	कांग्रेस	जवाहर लाल नेहरू	के वी के सुंदरम
1965	कांग्रेस	लाल बहादुर शास्त्री	के वी के सुंदरम
1966	कांग्रेस	लाल बहादुर शास्त्री → गुलजारीलाल नंदा → इंदिरा गाँधी	के वी के सुंदरम
1983-84	कांग्रेस	इंदिरा गाँधी → राजीव गाँधी	आर के त्रिवेदी
1987-89	कांग्रेस - जनता दल के नेतृत्व वाला राष्ट्रीय मोर्चा	राजीव गाँधी → वी पी सिंह	आर वी एस पेरी शास्त्री
1992-95	कांग्रेस	पी वी नरसिंह राव	टी एन शेषन
2002-04	भाजपा के नेतृत्व वाला NDA → कांग्रेस के नेतृत्व वाला UPA	श्री अटल बिहारी वाजपेयी → मनमोहन सिंह	जे एम लिंगदोह → टी एस कृष्णमूर्ति

4. तीन सदस्यीय चुनाव आयोग कब बना

समय	केंद्र सरकार	क्या बदला
जनवरी 1990	वी पी सिंह सरकार राष्ट्रीय मोर्चा	दोनों चुनाव आयुक्तों के पद समाप्त हुए। आयोग फिर एक सदस्यीय बना।
1 अक्टूबर 1993	पी वी नरसिंह राव सरकार कांग्रेस	दो चुनाव आयुक्त दोबारा नियुक्त हुए। इसके बाद से तीन सदस्यीय ढाँचा जारी है।

5. आयोग के भीतर मतभेदों का प्रमुख इतिहास

वर्ष	मतभेद का मुद्दा	निर्णय या संबंधित पक्ष का जवाब
1993-95	शेषन ने दो नए आयुक्तों की नियुक्ति और बहुमत से निर्णय लेने के प्रावधान को चुनौती दी। उनका आरोप था कि उनके अधिकार सीमित किए जा रहे थे।	केंद्र सरकार ने आरोप खारिज किया। 14 जुलाई 1995 को सुप्रीम कोर्ट ने तीन सदस्यीय व्यवस्था और बहुमत वाले प्रावधान को सही ठहराया।
2009	एन गोपालस्वामी ने नवीन चावला पर पक्षपात का आरोप लगाया। उन्होंने चावला को हटाने की सिफारिश की।	राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने केंद्र सरकार की सलाह पर सिफारिश स्वीकार नहीं की। दोषी चावाल बाद में मुख्य चुनाव आयुक्त बने।

6. पूर्व चुनाव आयुक्तों और कांग्रेस से जुड़े तथ्य

INDIA गठबंधन के संदर्भ में दिए गए ये उदाहरण मुख्य रूप से कांग्रेस से जुड़े हैं। ये घटनाएँ 2023 में गठबंधन बनने से पहले की हैं।

नाम और मुख्य चुनाव आयुक्त का कार्यकाल	संबंध का स्वरूप	संबंधित तथ्य
सुकुमार सेन 1950-58	पारिवारिक संबंध	छोटे भाई अशोक कुमार सेन 1957 में कांग्रेस के लोकसभा सांसद बने। उसी वर्ष नेहरू सरकार में कानून मंत्री बने।
आर के त्रिवेदी 1982-85	बाद में राज्यपाल नियुक्त हुए	1986-90 में गुजरात के राज्यपाल रहे। उनकी नियुक्ति राजीव गांधी सरकार के समय हुई थी।
वी एस रमादेवी 1990	बाद में राज्यपाल नियुक्त हुई	हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक की राज्यपाल बनीं। कर्नाटक में दिसंबर 1999 की नियुक्ति के समय केंद्र में वाजपेयी की NDA सरकार थी।

नाम और मुख्य चुनाव आयुक्त का कार्यकाल	संबंध का स्वरूप	संबंधित तथ्य
टी एन शेषन 1990-96	प्रत्यक्ष राजनीतिक जुड़ाव	पद छोड़ने के बाद 1999 में गांधीनगर से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा। श्री लालकृष्ण आडवाणी से हार गए।
एम एस गिल 1996-2001	प्रत्यक्ष राजनीतिक जुड़ाव	सेवानिवृत्ति के बाद कांग्रेस में शामिल हुए। 2004-16 तक पंजाब से राज्यसभा सांसद रहे। UPA सरकार में युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री बने।
नवीन चावला 2009-10	ट्रस्टों को सहायता और पक्षपात के आरोप	परिवार से जुड़े ट्रस्टों को कांग्रेस सांसदों की सांसद निधि से धन मिला। कांग्रेस ने इसे सामाजिक कार्यों के लिए सहायता बताया। गोपालस्वामी ने आंतरिक जानकारी देने और बेल्जियम के सम्मान वाले मामले में सोनिया गांधी को नोटिस का विरोध करने के आरोप लगाए। चावला ने सूचना लीक करने का आरोप नकारा। उन्हें हटाने की सिफारिश स्वीकार नहीं हुई।

7. SIR पर सकारात्मक टिप्पणी

विषय के नाम	बयान	पद	राज्य
रमेश चेन्निथला	केरलम में SIR उपयोगी रहा, क्योंकि पहले CPM फर्जी वोट डलवाती थी।	केरलम की कांग्रेस गठबंधन सरकार के गृह मंत्री	केरलम
मैथ्यू कुजलनादन	उनके अनुसार, SIR से CPI(M) द्वारा प्रबंधित फर्जी मतदाताओं को हटाया गया, जिससे उन्हें भी फायदा हुआ।	कांग्रेस विधायक मूवाट्टुपुझा केरलम	
शशि थरूर	शशि थरूर ने माना कि मतदाता सूची में दोहराव वाली प्रविष्टियाँ, मृत मतदाताओं के नाम और कई जगह पंजीकरण जैसी समस्याएँ हैं। **उन्होंने SIR का समर्थन करते हुए कहा** कि इस प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से किया जाना चाहिए और मतदाता सूची को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल तकनीक का इस्तेमाल होना चाहिए।	कांग्रेस लोकसभा सांसद, तिरुवनंतपुरम केरलम	
के. जी. अरुणराज	SIR कराना आवश्यक और महत्वपूर्ण है।	कांग्रेस - TVK गठबंधन की तमिलनाडु सरकार में स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण मंत्री	तमिलनाडु
सचिन पायलट	SIR को लेकर उन्होंने कहा, ''अगर कोई इस देश में अवैध रूप से रह रहा है, तो उसे हटाया जाना चाहिए।''	कांग्रेस महासचिव एवं विधायक, राजस्थान, कांग्रेस	राजस्थान
अरविन्द केजरीवाल	अरविन्द केजरीवाल 2015 में कह रहे थे की दिल्ली में 11लाख डुप्लीकेट वोटर्स हैं	पूर्व मुख्यमंत्री, आम आदमी पार्टी	दिल्ली

8. SIR पर अन्य सहायक समाचार व कांग्रेस की असलियत

खबर	विवरण
42 पूर्व न्यायाधीशों ने चुनाव आयोग का समर्थन किया, लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाने की अपील की	1. 42 पूर्व न्यायाधीशों ने एक खुले पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसमें चुनाव आयोग और अन्य संवैधानिक संस्थाओं पर लगाए जा रहे आरोपों को लेकर चिंता जताई गई। 2. उन्होंने बिना ठोस सबूत के लगाए जा रहे ''वोट चोरी'' के आरोपों पर सवाल उठाए और कानून के तहत कराई जा रही विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) प्रक्रिया का समर्थन किया। 3. पूर्व न्यायाधीशों ने चेतावनी दी कि संवैधानिक संस्थाओं पर बार-बार आरोप लगाने से जनता का उन पर भरोसा कम हो सकता है। 4. उन्होंने राजनीतिक दलों से अपील की कि वे अपनी शिकायतें संवैधानिक और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उठाएँ।

कांग्रेस के "वोट चोरी" झूठ का काउंटर-नैरेटिव

1. कांग्रेस का झूठा "वोट चोरी" नैरेटिव

- विपक्षी दल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास कार्यों से ध्यान भटकाने के लिए चुनाव आयोग पर हमला कर रहे हैं। वे डर पैदा कर रहे हैं और विकास से वोट चोरी की ओर ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहे हैं।
- यह कोई नई रणनीति नहीं है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के सत्ता में आने के बाद से ही विपक्ष भारत को बदलने वाले ऐतिहासिक सुधारों पर निशाना साध रहा है। **राफेल, ईवीएम और अब वोट चोरी के आरोप** लगाकर विपक्षी दल हर कदम पर मतदाताओं को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- कांग्रेस का वोट शेयर लगातार गिर रहा है, **वर्ष 1952 में 45% से गिरकर 2024 में 21.4% रह गया है,जो दर्शाता है** कि मतदाताओं का कांग्रेस से विश्वास उठ गया है। इसलिए बगैर किसी एजेंडे के, कांग्रेस अब मतदाताओं का विश्वास लोकतंत्र से तोड़ना चाहती है।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकतंत्र और भारत की संस्थाओं को मजबूत किया है, कांग्रेस ने हमेशा लोकतान्त्रिक संस्थाओ का अपमान कियाः कांग्रेस भारत निर्वाचन आयोग का विरोध करके उसका अपमान करती है (राहुल गांधी अमेरिका में भारत निर्वाचन आयोग के खिलाफ झूठे दावे करते हैं), मोदी सरकार में SIR की निष्पक्ष प्रक्रिया की शुरुआत हुई और चुनाव कानून (संशोधन) विधेयक, 2021 के माध्यम से चुनाव कानूनों में संशोधन किया गया है।

2. ECI की विश्वसनीयता को मजबूत करना

- भारतीय चुनाव आयोग भारतीय लोकतंत्र की रीढ़ हैः पिछले **70 वर्षों में, चुनाव आयोग ने 400+ विधानसभा चुनाव और 20 आम चुनाव** संपन्न कराए हैं। दुनिया की **1/6 आबादी** के लिए चुनाव प्रबंधन का अनुभव, चुनाव आयोग को वैश्विक लोकतंत्र के सबसे महत्वपूर्ण संरक्षकों में से एक बनाता है। आम चुनावों में औसत मतदान प्रतिशत में वृद्धि और राजनीतिक दलों की संख्या में वृद्धि के कारण, **पिछले 10 वर्षों में चुनावी लोकतंत्र** और भी मजबूत हुआ है।
- **मतपत्र धोखाधड़ी से लेकर ईवीएम के प्रचलन तक, अमिट स्याही से लेकर पर्यवेक्षकों तक, कड़े कानूनों तक, आदर्श आचार संहिता लागू करने से लेकर मतदाता सूची शुद्धिकरण तक, हर चुनौती से सीखकर, चुनाव आयोग एक समयानुकूल, निष्पक्ष संस्था के रूप में विकसित हुआ है।** इसका इतिहास सिद्ध करता है कि यह केवल एक नियामक ही नहीं, बल्कि **जनादेश का रक्षक** भी है।
- **कोई भी आपका वोट नहीं चुरा सकताः चुनाव आयोग पहचान, सत्यापन, दावे, आपत्तियों से लेकर अंतिम प्रकाशन तक, चरण-दर-चरण,सहभागी प्रक्रिया का पालन करता है।** प्रत्येक नागरिक प्रविष्टियों की जाँच, आपत्ति और सुधार कर सकता है; मतदाताओं से कुछ भी छिपा नहीं है।
- मतदाताओं को यह समझना चाहिए जब चुनाव प्रक्रिया में लगभग 70 चरणों का पालन किया जाता है और वोटों को आसानी से हटाया नहीं जा सकता। अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित होने और व्यापक रूप से साझा किए जाने के बाद भी, असामान्य विलोपन दर (जैसे, किसी मतदान केंद्र पर 2% से अधिक हो) के मामले में, निर्वाचन अधिकारी द्वारा व्यक्तिगत जांच की जाती है, जिससे उचित प्रक्रिया सुनिश्चित होती है और मतदाताओं को मनमाने ढंग से हटाए जाने से रोका जा सकता है।
- कांग्रेस ने हमेशा इस निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया को नुकसान पहुंचाया हैः वर्ष 1952 में, उन्होंने कम्युनिस्टों के साथ मिलकर डॉ. आंबेडकर की चुनावी हार की साजिश रची, 1957 में, बेगूसराय में भारत के पहले बूथ पर कांग्रेस समर्थकों ने कब्जा किया, और फिर 1967 में, कांग्रेस ने निर्विरोध जीत और प्रतिद्वंद्वियों को हराकर जम्मू-कश्मीर की 61 सीटें जीत लीं। 1975 में, न्यायमूर्ति सिन्हा ने इंदिरा गाँधी को दो मामलों में सरकारी अधिकारियों और सरकारी मशीनरी के प्रयोग करने के जिए चुनावों में दोषी ठहराते हुए, छह साल के लिए किसी भी सार्वजनिक पद पर रहने के अयोग्य घोषित कर दिया। कांग्रेस और नेशनल कॉफ्रेंस ने बड़े पैमाने पर धांधली के जरिए 1987 के कश्मीर चुनाव में फिर से जीत हासिल की थी। देश में कई दर्जन चुनी हुई सरकारों को कांग्रेस द्वारा बेवजह अपने स्वार्थ के लिए भंग किया गया है।

9. कांग्रेस द्वारा की गईं अनियमिताएँ

वर्ष	प्रदेश /केंद्र स्तरीय	घटना	प्रमुख विवाद
1972	प्रदेशः पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल चुनाव में धांधली का आरोप	1972 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस (आर) ने भारी जीत हासिल की। CPI(M) के 14 निर्वाचित सदस्यों ने चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए 1972 से 1977 तक विधानसभा में बैठने से इनकार कर दिया। 1977 में संसद में दिए गए एक जवाब में भी आरोप दर्ज किया गया कि चुनाव में पहले से बनाई गई योजना के तहत धाँधली की गई थी।

वर्ष	प्रदेश /केंद्र स्तरीय	घटना	प्रमुख विवाद
1975	केंद्र स्तरीय	रायबरेली चुनाव मामला	इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति सिन्हा ने इंदिरा गांधी को चुनाव में भ्रष्ट आचरण का दोषी ठहराया था। उन्होंने 1971 के लोकसभा चुनाव को रद्द कर दिया और छह साल तक चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी। याचिका में आरोप लगाया गया था कि उनके चुनाव एजेंट सरकारी कर्मचारी थे और चुनाव प्रचार के लिए सरकारी अधिकारियों का इस्तेमाल किया गया था।
1975-1977	केंद्र स्तरीय	आपातकाल और शाह आयोग की जाँच	इंदिरा गांधी के शासनकाल में आपातकाल के दौरान सरकारी शक्तियों के दुरुपयोग की जाँच की गई थी। शाह आयोग ने इस दौरान हुई ज्यादतियों की पड़ताल की, जो चुनावी निष्पक्षता और राजनीतिक स्वतंत्रता से जुड़ी चिंताओं को समझने का संदर्भ प्रदान करती है।
1980	केंद्र स्तरीय (9 प्रदेश)	नौ राज्यों की सरकारों को बर्खास्त करना	सत्ता में वापस आने के बाद इंदिरा गांधी ने राजस्थान, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, तमिलनाडु,उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की नौ गैर-कांग्रेसी सरकारों को बर्खास्त कर दिया। इसके पीछे तर्क दिया गया कि लोकसभा चुनाव के नतीजों के बाद इन राज्यों की विधानसभाएँ जनता की इच्छा का प्रतिनिधित्व नहीं करती थीं। आलोचकों ने इसे संवैधानिक आपात स्थिति के बजाय राजनीतिक बदले की कार्रवाई और सत्ता का दुरुपयोग बताया।
1980-1983	केंद्र स्तरीय	सोनिया गांधी का भारतीय नागरिकता मिलने से पहले मतदाता सूची में नाम शामिल होने का मामला	शिकायतों और कानूनी याचिकाओं में आरोप लगाया गया कि सोनिया गांधी का नाम 1980 में नई दिल्ली की मतदाता सूची में गलत तरीके से दर्ज किया गया था,जबकि आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार उन्हें 1983 में भारतीय नागरिकता मिली थी। बाद में 1982 में उनका नाम मतदाता सूची से हटा दिया गया। इस मामले को लेकर मतदाता सूची तैयार करने में प्रशासनिक लापरवाही और जनप्रतिनिधित्व कानून के तहत मतदाता बनने की पात्रता पर लंबे समय तक राजनीतिक और कानूनी बहस हुई।
1983	प्रदेश स्तरीय - असम	असम में चुनाव कराने का फैसला और नेल्ली नरसंहार	मतदाता सूची में संशोधन किए बिना चुनाव कराने के कांग्रेस के फैसले का विरोध हुआ था। चुनाव के बहिष्कार की अपील और हिंसा की चेतावनियों के बावजूद चुनाव कराए गए। नेल्ली में हुई हिंसा में लगभग 1,800 बंगाली भाषी मुसलमान मारे गए। इस घटना की जाँच के लिए गठित आयोग की रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई।
1987	प्रदेश स्तरीयः जम्मू-कश्मीर	1987 के कश्मीर चुनाव में धांधली	1987 के जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव में धांधली होने की बात व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है। बाद में उग्रवाद से जुड़े कई लोग मुस्लिम यूनाइटेड फ्रंट (MUF) के समर्थक थे, जो विपक्षी गठबंधन था। आरोप लगा कि नेशनल कॉफ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन ने चुनाव में धांधली की और MUF के कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया।
1989	केंद्र स्तरीय	बूथ कैप्चरिंग और चुनाव में धांधली - संसदीय रिकॉर्ड	आम चुनावों के दौरान बूथ कैप्चरिंग और मतदान में कथित अनियमितताओं से जुड़े सवाल और रिकॉर्ड संसद में दर्ज किए गए हैं। किसी राजनीतिक दल को इसके लिए जिम्मेदार ठहराने से पहले संबंधित मामले और उपलब्ध सबूतों की अलग से जाँच करना जरूरी है।
1993	केंद्र स्तरीय	JMM रिश्वत मामला - संसद में विश्वास मत	जुलाई 1993 में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव की कांग्रेस के नेतृत्व वाली अल्पमत सरकार के खिलाफ लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव लाया गया। 28 जुलाई को सरकार ने 265 के मुकाबले 251 वोटों से यह प्रस्ताव जीत लिया। बाद में आरोप लगे कि झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) और जनता दल के एक गुट के सांसदों ने अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ वोट देने के बदले रिश्वत ली थी। इस मामले में नरसिम्हा राव और अन्य राजनीतिक नेताओं के नाम भी सामने आए। 1998 में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि सांसदों को अपने संसदीय वोट से जुड़े कुछ कृत्यों के लिए अभियोजन से छूट प्राप्त है। हालांकि, 4 मार्च 2024 को सुप्रीम कोर्ट की सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने इस फैसले को पलट दिया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि वोट के बदले रिश्वत लेने के मामले में सांसदों और विधायकों को संसदीय विशेषाधिकार के तहत कानूनी कार्रवाई से छूट नहीं मिल सकती। यह मामला राजनीतिक भ्रष्टाचार, सांसदों की जवाबदेही और संसदीय विशेषाधिकारों की सीमाओं से जुड़ा एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।
2018	प्रदेश स्तरीय - कर्नाटक	कर्नाटक के राजराजेश्वरी नगर में वोटर ID कार्ड जब्त होने का मामला	कर्नाटक विधानसभा चुनाव से पहले हजारों वोटर ID कार्ड जब्त किए गए थे। इस घटना के बाद चुनाव में गड़बडी के आरोप लगे और मामले की जाँच शुरू हुई, जिसमें कुछ राजनीतिक हस्तियों के नाम भी सामने आए।

Q1: क्या SIR में 13 करोड़ लोगों के वोट काट दिए गए हैं?

जवाब: नहीं। यह कहना कि SIR में 13 करोड़ लोगों के वोट काट दिए गए, बिल्कुल गलत है।

SIR की प्रक्रिया में पहले Draft Electoral Roll तैयार होता है। इस Draft Roll में लगभग 13 करोड़ electors को Absent, Shifted, Dead और Duplicate (ASDD) के रूप में mark किया गया है। इसमें लगभग 2.8 करोड़ Dead, 3 करोड़ Absent/ Untraceable, 6.3 करोड़ Permanently Shifted और करीब 1 करोड़ electors Multiple Places पर enrolled यानी Duplicate पाए गए हैं।यह Draft Roll सभी Political Parties और उनके लगभग 20 लाख Booth Level Agents (BLAs) के साथ साझा किया जाता है, ताकि वे इन entries को verify कर सकें। इसके अलावा इस दौरान हर eligible elector को Claims and Objections दाखिल करने का अधिकार है। इसलिए Draft Roll में किसी नाम का mark होना और उसका final electoral roll से हट जाना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। SIR का उद्देश्य किसी eligible voter का नाम हटाना नहीं, बल्कि हर eligible voter को electoral roll में शामिल करना और electoral roll की त्रुटियों को दूर करना है।

Q2: क्या Form 6 में बदलाव किए गए हैं? इसकी सच्चाई क्या है?

जवाब: Form 6 में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

SIR के दौरान Election Commission ने, Chief Election Commissioner और दोनों Election Commissioners की सर्वसम्मति से, SIR Order जारी किया था। इसमें Declaration Form भी है। मतदाताओं की सुविधा के लिए Form 6 और Declaration Form को एक साथ जोड़ा गया, ताकि उन्हें अलग-अलग प्रकिया से न गुजरना पड़े और दो बार OTP की प्रक्रिया न करनी पड़े। Form 6 वही है; आवश्यक Declaration को उसी प्रक्रिया के साथ जोड़ा गया है ताकि मतदाताओं के लिए प्रक्रिया आसान हो। और महत्वपूर्ण बात यह है कि 27 मई 2026 को Supreme Court ने SIR के इस order की वैधता को सही ठहराया। बात बस इतनी है की Form 6 में कोई बदलाव नहीं हुआ है; Declaration Form को Form 6 की प्रक्रिया के साथ जोड़ा गया है ताकि मतदाता को सुविधा हो और दो बार OTP की जरूरत न पड़े।

Q3: क्या Electoral Roll Database को Centralised कर दिया गया है?

जवाब: बिल्कुल नहीं। Electoral Roll Database पहले भी Decentralised था और आज भी Decentralised ही है। इसका सरल कारण है कि Electoral रोल हर राज्य के ERO द्वारा, CEO की देखरेख में, तैयार और maintain किया जाता है। इसलिए इसकी व्यवस्था शुरू से ही Decentralised रही है।

सच्चाई यह है कि ECINET के ERONET module के तहत Electoral Roll Database को कभी भी Centralised नहीं किया गया है। हर State का Electoral Roll Database पहले की तरह Decentralised ही है और EROs के सभी statutory और procedural अधिकार पहले की तरह बरकरार है। System digital हुआ है, लेकिन Electoral Roll की statutory authority और decentralized structure में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

Q4: क्या Gen Z के वोट add करने में कोई समस्या है?

जवाब: बिल्कुल नहीं। बल्कि पहले की तुलना में प्रक्रिया और आसान बनाई गई है।

जो भी युवा 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुका है या करने वाला है, वह चार qualifying dates-1 January, 1 April, 1 July और 1 October के आधार पर Electoral Roll में अपना नाम जुड़वा सकता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि eligible voter को SSR या SIR जैसी किसी revision का इंतजार करने की जरूरत नहीं है। किसी भी समय हमारे Gen Z Electors फॉर्म 6 भरकर अपना नाम Electoral Roll में add करा सकता है। 24 June 2025, यानी SIR शुरू होने के बाद से अब तक, लगभग 2.37 करोड़ नए Gen Z voters (18-28 आयु वर्ग) Electoral Roll में पहले ही जोड़े जा चुके हैं, और लगातार जुड़ रहे है। Election Commission Gen Z voters के लिए लगातार special camps और Electoral Literacy Clubs (ELCs) के माध्यम से awareness programmes भी आयोजित करता है, ताकि युवा मतदाता आसानी से Electoral Roll में अपना नाम जुड़वा सकें और अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग कर सकें।

Gen Z के लिए Electoral Roll में नाम जुड़वाने की प्रक्रिया खुली, आसान और लगातार उपलब्ध है। और एक सबसे अहम बात, ECI के electoral roll में कुल 17.38 crore Gen Z (18-28 आयु वर्ग) के मतदाता हैं। हर महीने 16 लाख Gen Z वोटर लिस्ट में add हो रहे है। मतलब हर दिन 50 हजार से भी ज्यादा।

Q 5: क्या ECI में धांधली हुई है? क्या ECI के फैसले CEC ने दोनों, Election Commissioners को bypass करके अकेले लिए?

जवाब: यह एक पूरी तरह भ्रामक narrative है। आइए इसे सरल भाषा में समझते हैं।

Election Commission of India एक तीन सदस्यीय Commission है - एक Chief Election Commissioner और दो Election Commissioners। Chief Election Commissioner and Other Election Commissioners Act, 2023 की Section 18(1) के तहत Commission अपने कामकाज की प्रक्रिया और Chief Election Commissioner तथा अन्य Election Commissioners के बीच काम के allocation की व्यवस्था सर्वसम्मति से तय कर सकता है। इसी के तहत ECI के नाम से जारी होने वाले letters और orders, Transaction of Business Rules तथा Commission द्वारा तय delegation of powers के अनुसार जारी होते हैं। Commission के स्तर पर निर्णय के बाद Commission के अधिकृत officers उन निणयों को communicate और implement करते हैं। महत्वपूर्ण बात

यह है कि Commission द्वारा लिए गए सभी निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए हैं- यानी तीनों Commissioners की approval से।

यह भी समझना जरूरी है कि किसी decision के draft stage पर Commissioners द्वारा questions, observations या suggestions देना कोई असामान्य बात नहीं है। यह किसी भी संस्थान की सामान्य deliberative और administrative process का हिस्सा है। इसका उद्देश्य निर्णय को और बेहतर बनाना और electoral process में सुधार करना है। हर observation को ''dissent'' और हर draft-stage query को ''decision'' के खिलाफ जाना बताना सही नहीं है। Final decision और उससे पहले की deliberation-दोनों अलग-अलग चीजें हैं। ECI में decision-making एक निधारित कानूनी और procedural framework के तहत होता है। Commissioners और Commission के officers द्वारा दिए गए inputs और observations Decision -making process का हिस्सा है। इन्हें अपने-आप में ''धांधली'' या CEC द्वारा बाकी Commissioners को bypass कहना पूरी तरह गलत है और ये बस लोगो को भ्रमित किए जाने के लिए अफवाह फैलाने की एक नाकाम कोशिश है।

Q6: क्या SIR ''Vote Chori'' करने का तरीका है और क्या BJP ने Bihar और West Bengal के चुनाव ''Vote Chori'' से जीते?

जवाब: सबसे पहले, ''Vote Chori'' जैसी कोई चीज नहीं होती। यह एक fake और mischievous narrative को फैलाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा toolkit word है।

इसे समझने के लिए Electoral Roll तैयार होने से लेकर मतदान और counting तक की पूरी प्रक्रिया को समझना जरूरी है।

- **SIR में इलेक्टोरल रोल कैसे बनता है?** Electoral Roll को तैयार करने की प्रक्रिया में BLOs द्वारा field/ house-to-house verification किया जाता है। इसके साथ Political Parties के लगभग 20 लाख Booth Level Agents (BLAs) भी Electoral Roll की प्रक्रिया को closely observe करते हैं। इन्हें केवल नाम के लिए नहीं रखा गया है। BLAs इस पूरी प्रक्रिया में एक तरह से concurrent auditor की भूमिका निभाते हैं। Draft stage पर Draft Electoral Roll के साथ Absent, Shifted, Dead और Duplicate (ASDD) marked lists भी Political Parties और उनके BLAs को उपलब्ध कराई जाती हैं, ताकि वो इसे अपने स्तर पर verify कर सके। यही जानकारी public domain में भी उपलब्ध रहती है। Claims and Objections की प्रक्रिया में कोई भी एलिजिबल elector draft roll entries पर Claim या objection कर सकते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं के बाद Final Electoral Roll प्रकाशित होता है। और बात यहीं खत्म नहीं होती। ERO के decision के खिलाफ appeal का भी प्रावधान है।
- **किसी का नाम मनमाने तरीके से delete नहीं किया जा सकता।** Electoral Roll से deletion एक prescribed legal process के तहत होता है। ERO को उपलब्ध material, verification और निर्धारित procedure के आधार पर निर्णय लेना होता है।

  यानी Electoral Roll की प्रक्रिया में एक तरफ BLOs field verification करते हैं, तो दूसरी तरफ Political Parties के लगभग 20 लाख BLAs concurrent scrutiny करते हैं। इसके ऊपर claims, objections और appeals की व्यवस्था भी है।अब सोचिए- जब इतनी व्यापक verification और concurrent auditing की व्यवस्था मौजूद है, तो ''Vote Chori'' कैसे हो सकता है।
- **मतदान के दिन भी कैंडिडेट्स के political एजेंट्स के द्वारा scrutiny जारी रहती है।** Polling station पर candidates के Polling Agents मौजूद रहते हैं और polling process को observe करते हैं। साथ ही ECI की new initiative जो तीनों कमिश्नर्स के सर्वसम्मति से ली गई जिसमें 100 प्रतिशत polling stations की webcasting की व्यवस्था की गई वो polling प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी बनाती है। Bihar aur West Bengal में voting % आजादी के बाद सबसे अधिक था, साथ ही आजतक के सबसे अधिक संख्या में भी लोगों ने वोट किया। Counting में भी candidates के representatives मौजूद रहते हैं। Counting process में candidates के Counting Agents मौजूद रहते हैं और counting के प्रक्रिया को observe करते हैं। यानी Electoral Roll → Verification → Claims & Objections → Final Roll → Polling→ Counting–हर महत्वपूर्ण stage पर political parties, candidates और उनके representatives की मौजूदगी और scrutiny रहती है। सीधी बात यह है की Electoral Roll बनाना कोई बंद कमरे की प्रक्रिया नहीं है। इसमें BLOs की field verification, लगभग 20 लाख BLAs की concurrent scrutiny- हर चरण पर safeguards है। भारत की चुनावी व्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी और व्यापक रूप से scrutinised democratic processes में से एक है। इसे समझने के लिए narrative नहीं, पूरी प्रक्रिया को देखना चाहिए।

Q7 : CEC के सिलेक्शन पैनल से चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया को हटा दिया ताकि BJP वोट चोरी हो सके?

जवाब: यह आरोप पूरी तरीके से झूठा और बेबुनियाद है।

2023 के कानून से पहले भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति केंद्र सरकार के सिफारिश पर राष्ट्रपति करते थे। कोई भी कानून इसके लिए उपलब्ध नहीं था। सुप्रीम कोर्ट ने Anoop Baranwal Vs Union of India, में आदेश दिया कि मुख्य चुनाव

आयुक्त और चुनाव आयुक्त की नियुक्ति के लिए कानून होना चाहिए। और तब तक चीफ जस्टिस के साथ एक committee का temporary provision किया गया Parliament के द्वारा कुछ ही महीनों में एक नया कानून लाया गया जिसमे नई कमेटी का गठन हुआ जिसमें प्रधानमंत्री, प्रधानमंत्री द्वारा Appointed एक मंत्री और Leader of opposition पार्ट होंगे। जो पहले के प्रक्रिया के मुकाबले में अच्छी एक committee बेस्ड प्रक्रिया है। जहाँ पहले नियुक्ति केवल सरकार के हिसाब से होती थी अब एक कमेटी है जिसमें LOP भी शामिल किए गए हैं। जो की एक बेहतर व्यवस्था है।

Q8 : क्या Field Officers का ECINET App पर access restricted कर दिया गया था?

जवाब: बिल्कुल नहीं।

पूरी सच्चाई यह है कि ECINET पर statutory authorities और field officers के access पर ऐसी कोई restriction नहीं लगाई गई है, जिससे वे अपने statutory functions perform न कर सकें।

SIR की घोषणा के बाद से अब तक ECINET और उसके विभिन्न modules पर field officers के 109 training sessions already आयोजित किए जा चुके हैं और ये training लगातार जारी है। इन sessions में AEROs, EROs, DEOs और CEOs ने भाग लिया है। इन training sessions के दौरान access restriction को लेकर ऐसी कोई complaint या concern कभी सामने नहीं आया।

महत्वपूर्ण बातः ECINET एक decentralised platform है, जो Representation of the People Act, 1950, Representation of the People Act, 1951 और ECI द्वारा समय-समय पर जारी instructions के अनुरूप काम करता है। BLOs, AEROs, EROs, DEOs और CEOs अपने Unique ID और Password के माध्यम से ECINET पर अपने निर्धारित statutory functions perform कर सकते हैं। इसके अलावा, ECINET में strict data-security protocols, IT security checks और audit Controls लागू है, ताकि unauthorised access, tampering या manipulation को रोका जा सके। यह access रोकने की व्यवस्था नहीं, बल्कि data security और accountability सुनिश्चित करते हुए field officers को एक safe and secure digital environment उपलब्ध कराने की व्यवस्था है, ताकि वे अपनी सभी statutory responsibilities सुचारू रूप से पूरी कर सकें। ECINET पर ''field officers को access से रोक दिया गया'' कहना पूरी तरह गलत है। Field officials अपने निर्धारित roles और statutory responsibilities ECINET platform के माध्यम से सुचारू रूप से perform कर रहे हैं।

Q9: Was the ECINET app/ software rejecting genuine voters, as in the case of 97 voters of Goa?

जवाब: बिल्कुल गलत।

ECINET app/software का उद्देश्य voters को reject करना नहीं, बल्कि eligible electors के Registration और inclusion को आसान बनाना है। Voter registration और Electoral Roll management को facilitate करना इसके core functions में से एक है।ECINET में EROs के लिए provision है कि final publication of Electoral Roll से पहले, law और ECI instructions के अनुसार, electors को inclusion या exclusion के लिए mark किया जा सकता है। Goa के 97 cases में कुछ inadvertent mistakes EROs की तरफ से हुई थीं। यह ECINET software द्वारा genuine voters को reject करने का मामला बिल्कुल नहीं था। ECI की clear instruction है कि कोई भी eligible elector छूटना नहीं चाहिए। इसी के तहत February 2026 में published final Electoral Roll में शामिल न हो पाए इन 97 cases को अलग से लिया गया और BLOs द्वारा house-to-house visits करके Form 6 complete कराया गया। इनमें से कई electors को अब Electoral Roll में शामिल किया जा चुका है, जबकि remaining cases prescribed procedure के अनुसार process किए जा रहे हैं।

ECINET कभी भी किसी genuine voters को reject नहीं करता। यह Electoral Roll management और voter registration को facilitate करने वाला secure digital platform है, जो election officials द्वारा prescribed law और procedure के अनुसार लिए गए decisions को efficiently implement करने में मदद करता है। ECINET app पूरी तरह applicable laws, Electoral Rules और ECI instructions के accordance में designed है।

Point wise rebuttal of points raised by Congress'Jairam Ramesh

Q 10 : SIR को लेकर प्रस्तावित उपाय इस बात को स्वीकार करना है कि पूरी process fail रही है, और छोटे-मोटे उपाय बड़े पैमाने पर मताधिकार छीनने के संकट को कम नहीं कर पाएंगे।

जवाब: अतिरिक्त उपाय failure को स्वीकार करना नहीं है, बल्कि मतदाताओं को लगातार बेहतर सुविधा देने की तरफ उठाया गया कदम है। SIR में कई stages की व्यवस्था हैः Enumeration, Draft Roll, Claims & Objections, और किसी भी नाम को हटाने से पहले Notice और Hearing। आयोग का लक्ष्य है कि कोई भी eligible voter छूटे नहीं।

- Enumeration phase में BLO द्वारा घर-घर जाकर लोगों के Enumeration Form भरवाने और submit कराने के लिए कम से कम 3 visits का प्रावधान है।
- चुनाव आयोग ने हाल ही में मतदाताओं की और अधिक सहूलियत के लिए Notice phase के दौरान भी BLO को घर भेजने का फैसला किया है, जो एक सराहनीय कदम है।

- मतदाताओं के लिए दी जाने वाली सुविधा को गलत बताना इनकी citizen-विरोधी मानसिकता को दर्शाता है।
- 5.43 करोड़ का आंकड़ा पूरी तरह काल्पनिक और गलत है।
- SIR का एक ही objective है: हर eligible voter को Electoral Roll में जोड़ना, और Absent/ Untraceable, Dead, Duplicate, Permanently Shifted, Foreigner और Illegal entries को Electoral Roll से हटाना।

Q11: मतदाता सूची तैयार करने में ECINet सॉफ्टवेयर की केंद्रिय भूमिका, उसके जरिए सही मतदाताओं के नाम हटाए जाने और EROs के अधिकारों को गैरकानूनी तरीके से दरकिनार किए जाने से इनकार नहीं किया गया है, और इनके समाधान के लिए कोई उपाय प्रस्तावित नहीं किया गया।

जवाब: ECINet एक technical platform है, जो officers को उनके statutory functions पूरे करने के लिए एक safe और secure digital environment उपलब्ध कराता है।

- मतदाता सूची में किसी भी नाम को जोड़ने या हटाने का निर्णय केवल ERO द्वारा, Representation of the People Act, 1950 और Registration of Electors Rules, 1960 के तहत, notice और hearing के बाद लिया जाता है।
- ECINet पर ERO या किसी भी officer को उनके statutory functions पूरे करने से कभी restrict नहीं किया गया है। यह आरोप पूरी तरह गलत है।
- Committee बनाना ECINet को और अधिक पारदर्शी रूप से प्रस्तुत करने के लिए लगातार उठाए जा रहे कदमों का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

Q12: कैबिनेट सचिव को लिखे गए पत्र पर दिया गया स्पष्टीकरण जितना बताता है, उससे कहीं ज्यादा छिपाता है। आयोग ने कहा कि पत्र केवल deputation पर तैनात एक अधिकारी के कामकाज से जुड़ा था, IT Division के किसी policy matter से नहीं। लेकिन यह पत्र IT Division पर निगरानी हटाने वाले आदेश के बाद लिखा गया, और मामला IT Division के अपारदर्शी कामकाज तथा ECINet के जरिए statutory safeguards को दरकिनार करने से जुड़ा था। इन मुद्दों का समाधान नहीं हुआ।

जवाब: चुनाव आयोग ने इस विषय पर स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर दी है। ये आरोप इनका narrative समाप्त हो जाने की बौखलाहट में लगाए गए बेतुके आरोप हैं।

- पत्र एक administrative matter था, जो deputation पर तैनात एक अधिकारी की service से जुड़ा था।
- इसका चुनाव आयोग या IT Division के किसी नीतिगत फैसले से कहीं कोई लेना-देना नहीं है।

Q13: मतदाता सूची तैयार करने में AI के बड़े पैमाने पर इस्तेमाल को लेकर पारदर्शिता की कमी खतरनाक है। दिल्ली में SIR से सामने आया कि मतदाताओं को हटाने के लिए AI का इस्तेमाल हो रहा है, और दिल्ली के CEO ने कहा कि कुछ notices ''system-generated'' थे। नवंबर 2025 में पश्चिम बंगाल के CEO ने AI के इस्तेमाल की बात स्वीकार की थी, लेकिन जुलाई 2026 में आयोग ने UN Special Rapporteurs से कहा कि किसी भी चरण में AI का इस्तेमाल नहीं होता। आयोग को AI पर पूरी पारदर्शिता बरतनी चाहिए और इसके इस्तेमाल पर पुनर्विचार करना चाहिए।

जवाब: यह एकदम झूठा और मनगढ़ंत आरोप है। मतदाता सूची तैयार करने की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार से AI का use नहीं होता।

- हर निर्णय ERO द्वारा, Representation of the People Act, 1950 के तहत due process of law के अनुसार ही लिया जाता है।
- Notice भी ERO द्वारा ही due process of law के अनुसार issue किया जाता है। यही प्रक्रिया पूरे देश में अपनाई जाती है।
- इस प्रक्रिया में ECINet केवल एक secure digital platform है, जो EROs को उनके statutory functions पूरे करने में सहायता करता है।
- Statements को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करके झूठे आरोप लगाना और भ्रम की स्थिति पैदा करना इनकी कोशिश है।

Q14: Form 6 में किए गए गैरकानूनी बदलाव से इनकार नहीं किया गया है, और इसके बचाव की कमजोर कोशिश ने और सवाल खड़े कर दिए हैं। आयोग ने 27 मई 2026 के Supreme Court के फैसले का सहारा लिया,जिसमें Form 6 में नया Declaration जोड़ने की अनुमति दी गई थी। लेकिन जुलाई में यह बदलाव केवल SIR के लिए नहीं, बल्कि सभी मतदाताओं के online Form 6 में किया गया। उसी फैसले में यह भी कहा गया कि ECI बिना तर्कसंगत आधार के statutory process से अलग नहीं जा सकता। साथ ही, non-SIR Form 6 का रास्ता भ्रामक है, क्योंकि SSR 2024 से रूका हुआ है और कोई non-SIR Electoral Roll प्रकाशित ही नहीं हो रहा।

जवाब: पहली बात, जब Form 6 में कोई बदलाव हुआ ही नहीं है, तो उस बदलाव का सवाल ही कहां उठता है।

- चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया है कि Form 6 में कोई बदलाव नहीं किया गया है।
- SIR में Form 6 के साथ एक Declaration Form अलग से जोड़ा गया है, जिसे तीनों Commissioners ने सर्वसम्मति से approve किया।
- साथ ही, माननीय Supreme Court ने भी 27 मई 2026 के अपने फैसले में इसे पूरी तरह कानूनी और सही माना है।
- चुनाव आयोग ने यह भी स्पष्ट किया है कि SIR के अलावा Form 6 की स्थिति वैसी ही रहेगी। कोई बदलाव नहीं है, जैसा पहले था वैसा ही आज भी है।

Q15: बुनियादी प्रक्रियाओं का पालन करने का वादा अपने आप में इस बात को

स्वीकार करना है कि अब तक उनकी अनदेखी होती रही है, और यह बेहद हैरान करने वाला है। आयोग अब वादा कर रहा है कि उसकी meetings से पहले Agenda circulate किया जाएगा और Performance Appraisals समय पर पूरे किए जाएंगे। आरोप है कि खुद Election Commissioners को अंधेरे में रखा जा रहा था और उन्हें कई बातों, की जानकारी media से मिल रही थी। एक संवैधानिक संस्था में कानून और प्रक्रियाओं की ऐसी अनदेखी बेहद चिंताजनक है।

जवाब:

- Meetings से पहले Agenda circulate करना और Performance Appraisals समय पर पूरे करना आयोग की सामान्य कार्यप्रणाली का हिस्सा है। इसे दोहराना कोई नया वादा नहीं, बल्कि व्यवस्था को और मजबूत करने का कदम है।
- Election Commissioners को अंधेरे में रखने का आरोप पूरी तरह निराधार है। आयोग के सभी फैसले तीनों Commissioners ने हमेशा सर्वसम्मति से लिए हैं।
- आयोग की आंतरिक कार्य प्रणाली को लेकर अटकलों के आधार पर आरोप लगाना एक संवैधानिक संस्था की छवि खराब करने की एक नाकाम और frustrated कोशिश है।

Point wise rebuttal of points raised by Congress Working Committee

Q16: पक्षपात, ''Vote Chori'' और Model Code of Conduct (MCC) के selective enforcement के आरोप

वास्तविकता:

- संविधान के Article 324 के तहत चुनावों का superintendence, direction और control केवल भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के पास है।
- आयोग सरकार और हर राजनीतिक दल से स्वतंत्र होकर काम करता है।
- चुनाव लाखों अधिकारियों द्वारा statutory प्रक्रियाओं के तहत कराए जाते हैं।
- मतदाता सूची बनाने, मतदान और मतगणना सहित हर चरण पर उम्मीदवार और राजनीतिक दलों के agents हमेशा मौजूद रहते हैं।
- ''Vote Chori'' शब्द का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है। यह असल में एक narrative गढ़ने के लिए toolkit का शब्द है।
- मतदाता पंजीकरण प्रक्रिया का राजनीतिक दलों के 20 लाख से अधिक Booth Level Agents (BLAs) द्वारा साथ-साथ audit किया जाता है।
- पूरी मतदान प्रक्रिया का उम्मीदवारों के polling agents द्वारा audit किया जाता है, और सभी मतदान केंद्रों की 100 प्रतिशत webcasting की जाती है।
- Model Code of Conduct सभी दलों पर समान रूप से लागू होता है। cVIGIL पर मिली शिकायतों सहित सभी शिकायतों पर, दल चाहे कोई भी हो, कार्रवाई की जाती है।

Q17: EVMs की विश्वसनीयता पर संदेह

वास्तविकता:

EVMs standalone machines है। ये किसी भी network से जुड़ी नहीं होतीं। हर चरण पर राजनीतिक दल, उम्मीदवार और उनके agents मौजूद रहते हैं।

- First Level Checking (FLC) राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में की जाती है।
- राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की मौजूदगी में machines का दो बार randomization किया जाता है।
- मतदान के दिन, वास्तविक मतदान शुरू होने से पहले उम्मीदवारों के agents की मौजूदगी में mock poll कराया जाता है।
- हर विधानसभा क्षेत्र में randomly चुने गए पाँच मतदान केंद्रों की VVPAT slips का मिलान EVM count से किया जाता है।
- सुप्रीम कोर्ट ने EVMs की कई बार जाँच की है और उनकी विश्वसनीयता को बरकरार रखा है। सबसे हाल में यह Association for Democratic Reforms vs ECI (अप्रैल 2024) में हुआ।
- उम्मीदवारों के पास EVMs की burnt memory के verification की माँग करने का mechanism भी उपलब्ध है।

Q18 : मतदाता सूची में मनमाने ढंग से नाम जोड़ना और हटाना; मतदाता सूची पर कुछ BJP-backed अधिकारियों, का नियंत्रण

वास्तविकता:

- मतदाता सूची Electoral Registration Officers (EROs) द्वारा तैयार की जाती है। EROs RP Act, 1950 की Section 13B के तहत statutory अधिकारी हैं, और quasi-judicial authority

के रूप में काम करते हैं।

- मतदाता सूची तैयार करने में Booth Level Officers (BLOs) और सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के 20 लाख से अधिक Booth Level Agents (BLAs) शामिल होते हैं।
- Draft roll और ASD (Absent, Shifted, Dead) list सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को दी जाती है। दलों द्वारा खुद नियुक्त BLAs भी concurrent auditors के रूप में इनकी जाँच करते हैं।
- कोई भी व्यक्ति या दल निर्धारित अवधि में दावे और आपत्तियाँ दर्ज कर सकता है।
- ERO के निणर्य से असंतुष्ट कोई भी व्यक्ति RP Act, 1950 की Section 24 के तहत पहले District Magistrate और फिर Chief Electoral Officer के पास अपील कर सकता है।
- SIR के दौरान छूट गए लोग और नए मतदाता अब भी Form 6 के जरिए अपना नाम जुड़वा सकते हैं, क्योंकि मतदाता सूची को update करना एक सतत प्रक्रिया है।

Q19 : ''One-man show'' और Election Commissioners की आपत्तियाँ

वास्तविकता:

- निर्वाचन आयोग एक multi-member body है। इसका कामकाज Chief Election Commissioner and Other Election Commissioners (Appointment, Conditions of Service and Term of Office) Act, 2023 में दिए गए कानूनी प्रावधानों के अनुसार होता है।
- सभी निर्णय तीनों Commissioners द्वारा सर्वसम्मति से लिए गए हैं।
- ECI ने अपने press notes के जरिए इसे दो बार दोहराया है, और ये press notes तीनों Commissioners द्वारा सर्वसम्मति से जारी किए गए थे।

Q20: SIR की संवैधानिकता

वास्तविकता:

- बिहार में SIR, Phase 2 में 12 राज्यों और Phase 3 में 19 राज्यों में SIR के आदेश तीनों Commissioners द्वारा सर्वसम्मति से जारी किए गए थे।
- आयोग संविधान के Article 324 और RP Act, 1950 की Section 21(3) के तहत SIR कराता है। Section 21(3) आयोग को किसी भी समय special revision का निर्देश देने का अधिकार देती है।
- माननीय सुप्रीम कोर्ट ने 26 मई 2026 के अपने आदेश में बिहार में SIR की वैधता को बरकरार रखा है।

Q21: SIR ने 13 करोड़ 30 लाख भारतीयों, के नाम मतदाता सूची से हटा दिए हैं

वास्तविकता:

- 13.30 करोड़ का आँकड़ा भ्रामक है। यह draft stage का आँकड़ा है,जिसमें entries को मृत, अनुपिस्थत, स्थायी रूप से स्थानांतरित, duplicate/ multiple या untraced (2.8 cr dead, 3 cr absent and untraceable, 6.3 cr permanently shifted, 1 cr is already enrolled) के रूप में चिन्हित किया गया है। मतदाता सूची की शुद्धता बनाए रखने के लिए अयोग्य entries हटाना कानूनन आवश्यक है।
- यह सूची सभी राजनीतिक दलों के 20 लाख से अधिक Booth Level Agents के साथ साझा की गई। CEOs ने भी इसे सभी राजनीतिक दलों के साथ साझा किया, ताकि इसकी दोबारा जाँच हो सके।
- यह सारा data सार्वजनिक रूप से भी उपलब्ध है, ताकि कोई भी व्यक्ति किसी गलत inclusion या exclusion के विरुद्य दावे और आपत्तियाँ दर्ज कर सके।
- वास्तविक आकँड़े SIR पूरा होने के बाद ही पता चल सकते हैं। SIR का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर पात्र मतदाता का नाम दर्ज हो, और अनुपस्थित, untraceable, स्थायी रूप से स्थानांतरित, duplicate, विदेशी नागरिक तथा अन्य अमान्य entries हटाई जाएँ।

Q22: Form 6 में किए गए बदलाव ''अनधिकृत'' और ''अवैध'' हैं, और यह GenZ मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करने का तरीका है।

तथ्य: यह दावा पूरी तरह से गलत और भ्रामक है।

Form 6 में कोई बदलाव नहीं किया गया है। SIR के दौरान मतदाताओं की सुविधा के लिए Declaration Form को Form 6 के साथ जोड़ा गया है, ताकि मतदाता को केवल एक बार ही फॉर्म भरना पड़े।

- यह निर्णय तीनों निर्वाचन आयुक्तों द्वारा सर्वसम्मति से लिया गया है।
- माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 26 मई के अपने आदेश में Declaration Form सहित SIR से जुड़े पूरे आदेश को वैध ठहराया है।
- GenZ मतदाताओं की बात करें तो, SIR शुरू होने (24 जून 2025) से अब तक, यानी पिछले 15 महीनों में, 2.37 करोड़ GenZ मतदाता मतदाता सूची में जोड़े गए हैं। यानी हर महीने लगभग16 लाख और हर दिन लगभग 50 हजार GenZ मतदाता जुड़ रहे हैं।
- हाल ही में निर्वाचन आयोग ने युवा मतदाताओं के लिए विशेष शिविर शुरू करने का निर्णय भी लिया है।
- इसके साथ ही, Electoral Literacy Clubs (ELC) और अन्य माध्यमों से GenZ और पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं को लगातार जागरूक किया जा रहा है और उनके नाम मतदाता सूची में जोड़े जा रहे हैं।

Q 23: Bela Esatate चांदनी चौक के एक पोलिंग स्टेशन (Part No. 38, J.J. बेला एस्टेट, विजय घाट) में SIR से पहले 729 वोटर थे और अब सिर्फ एक वोटर बचा है। योग्य वोटर, का वोट देने का अधिकार छीन लिया गया है।

Reality: किसी भी वोटर का वोट देने का अधिकार नहीं छीना जा रहा है। पूरी स्थिति इस प्रकार है:

- बेला एस्टेट के अनाधिकृत घरों/ settlements को 2022-23 में demolition drive में हटा दिया गया था और resettlement के तहत वहाँ के निवासी दूसरी जगहों पर shift हो गए।
- Representation of the People Act, 1950 के Section 19 के अनुसार, किसी पोलिगं एरिया की वोटर लिस्ट में नाम दर्ज कराने के लिए व्यक्ति का वहाँ ''ordinarily resident'' होना जरूरी है। इसलिए जो वोटर अब उस पते पर नहीं रहते, उनका नाम उस Part की वोटर लिस्ट में नहीं रह सकता।
- House-to-house enumeration के दौरान BLO को ज्यादातर वोटर अपने registered पते पर नहीं मिले, क्योंकि वे वहाँ से shift हो चुके थे।
- BLO और ERO की special outreach drive के जरिए लगभग 500 प्रभावित वोटर अपने नए पते पर नाम जुड़वाने के लिए Form-6 पहले ही जमा कर चुके हैं।
- इलाके का कोई भी योग्य वोटर, जिसने अभी तक apply नहीं किया है, जरूरी documents के साथ Form-6 जमा कर सकता है। ERO, चांदनी चौक इस काम में पूरी मदद कर रहे हैं।
- SIR का उद्देश्य यह पक्का करना है कि हर

योग्य elector का नाम वोटर लिस्ट में जुड़े और कोई भी गलत एंट्री न रहे।

Points from the Press Note issued by ECI as on 26 September 2026

मतदाताओं की सहूलियत का विशेष ध्यान रखा जाएगा, ताकि हर पात्र मतदाता का नाम आसानी से मतदाता सूची में जोड़ा जा सके।

- **अब ERO/AERO दफ्तर जाने की जरूरत नहीं:** SIR के दौरान जिन लोगों को अनमैप्ड होने या तार्किक विसंगति के लिए नोटिस मिला है, उनके घर BLO खुद जाकर दस्तावेज लेंगे और ERO के निर्णय के लिए ECINet पर अपलोड करेंगे।
- **सुनवाई सिर्फ विशेष परिस्थिति में:** ERO के तय करने पर ही सुनवाई होगी, वह भी यथासंभव ऑनलाइन। जरूरत हो तो मतदाता परिवार के किसी भी वयस्क सदस्य को अपनी ओर से सुनवाई में शामिल होने के लिए अधिकृत कर सकता है।
- **कोई भी योग्य मतदाता छूटे ना :** रैन बसेरों में रहने वालों, मजदूरों, गरीबों और बेघर लोगों के लिए DEO आवश्यकतानुसार पर्याप्त हेल्प डेस्क और विशेष कैंप लगाएंगे।

दिल्ली और महाराष्ट्र में दावे-आपत्तियों, की समय-सीमा बढ़ाई गई है, और छूटे हुए व नए मतदाताओं के लिए विशेष अभियान चलेगा, ताकि कोई भी पात्र मतदाता सूची से बाहर न रहे।

- **दिल्ली :** CEO दिल्ली के अनुरोध पर दावे और आपत्तियाँ दाखिल करने की अवधि 30 अक्टूबर 2026 तक बढ़ा दी गई है। नोटिसों और दावे-आपत्तियों का निपटारा 30 नवंबर 2026 तक होगा।
- **महाराष्ट्र:** CEO महाराष्ट्र के अनुरोध पर दावे और आपत्तियाँ दाखिल करने की अवधि 12 अक्टूबर 2026 तक बढ़ा दी गई है। नोटिसों और दावे-आपत्तियों का निपटारा 10 नवंबर 2026 तक होगा।
- **साथ ही एक जरूरी बात, जो सबको पता होनी चाहिए:** यदि किसी पात्र मतदाता का नाम SIR के दौरान या उसके बाद छूट गया है, या कोई युवा व पहली बार का मतदाता है, तो वह Continuous Updation प्रक्रिया के तहत अपने ERO के पास आवेदन करके आसानी से अपना नाम जुड़वा सकता है।

SIR के सभी आदेश आयोग की सर्वसम्मति से जारी हुए और सर्वोच्च न्यायालय ने इन्हें बरकरार रखा है।

- **20 राज्यों / केन्द्र शासित प्रदेशों में SIR पूरा:** बिहार और पश्चिम बंगाल सहित 20 राज्यों/ केन्द्र शासित प्रदेशों में SIR पूरा हो चुका है।
- **सभी आदेश सर्वसम्मति से:** 24 जून 2025 का SIR आदेश, 27 अक्टूबर 2025 को 12 राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों का कार्यक्रम और 14 मई 2026 को 19 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों का कार्यक्रम, ये सभी आयोग की सर्वसम्मति से जारी हुए थे।
- **सुप्रीम कोर्ट का समर्थन:** माननीय सुप्रीम कोर्ट ने 27 मई 2026 के अपने आदेश में SIR आदेश को बरकरार रखा है।
- **फॉर्म 6 घोषणा पत्र:** SIR के लिए फॉर्म 6 के साथ लगे घोषणा पत्र को भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने बरकरार रखा है। SIR अवधि के बाहर निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम, 1960 के तहत लागू फॉर्म ही इस्तेमाल होंगे।
- **हर पात्र मतदाता को मतदाता सूची में जोड़ने के लिए चुनाव आयोग संकल्पबद्ध, गोवा इसका उदाहरण:** CEO गोवा के निर्देश पर BLO छूटे हुए मतदाताओं के घर जाकर उनके फॉर्म ले रहे हैं। 97 में से 81 मतदाता नाम जुड़वाने के लिए फॉर्म 6 भर चुके हैं।
- **अंतिम आकंड़े:** मतदाताओं की कुल संख्या का अंतिम आकंड़ा फे ज-III के शेष12 राज्यों में अंतिम प्रकाशन के बाद ही पता चलेगा।

ECINET की पारदर्शिता सुनिश्चित करने और उसे और मजबूत बनाने के लिए अहम कदम।

- **भूमिका के अनुसार access:** फील्ड अधिकारियों को ECINET पर उनकी वैधानिक शक्तियों के अनुसार ही भूमिका-आधारित पहुँच (role-based access) दी गई है।
- **स्वतंत्र विशेषज्ञ के साथ समीक्षा समिति:** वरिष्ठ उप चुनाव आयुक्त (Sr. DEC) की अध्यक्षता में एक समिति बनेगी, जिसमें IIT/ IIIT के एक स्वतंत्र विशेषज्ञ भी होंगे। यह समिति जाँचेगी कि ECINET अधिनियमों और नियमों के प्रावधानों के अनुरूप है, और अपनी रिपोर्ट आयोग को सौंपेगी।
- **फील्ड की जरूरतों के अनुसार सुधार:** पिछले कुछ महीनों में राज्यों के CEO से मिले सुझावों के आधार पर पोर्टल में कई सुधार पहले ही किए जा चुके हैं। फील्ड अधिकारियों को आगे भी कोई और लचीलापन चाहिए, तो वह भी लागू किया जाएगा।
- **नई IT पहलों पर व्यापक विचार:** सभी नए IT मॉड्यूल और पोर्टल पर पहले अधिकारियों की समिति (Committee of Officers, COO) में चर्चा होगी। इसके बाद उन्हें आयोग की मंजूरी दी जाएगी।

आयोग की कार्यप्रणाली को और व्यवस्थित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम

- **बैठकों का एजेंण्डा और मिनट्स:** आयोग की सभी बैठकों का एजेंडा पहले से भेजा जाएगा, और उनके मिनट्स जारी किए जाएंगे।
- **सभी अधिकारियों की APAR तय समय-** सीमा यानी हर साल 31 दिसंबर तक पूरी की जाएगी।
- अधिकारियों की विदेश यात्राओं के लिए आयोग की मंजूरी ली जाएगी।

कैबिनेट सचिव को लिखे गए पत्र का आयोग या IT विभाग के नीतिगत मामलों, से कोई लेना-देना नहीं।

- **अधिकारी के कामकाज से जुड़ा पत्र:** यह पत्र आयोग में प्रतिनियुक्ति पर आए एक अधिकारी के कामकाज से संबंधित था।
- **कार्य-पुनर्वितरण आदेश लागू नहीं हुए:** संबंधित अधिकारी ने कार्य-पुनर्वितरण के जो आदेश जारी किए थे, वे दो आयुक्तों के आदेशों के बाद वास्तव में लागू नहीं हुए।
- **IT विभाग पर DEC की निगरानी:** IT विभाग पर उप चुनाव आयुक्त (DEC) की निगरानी वास्तव में कभी वापस नहीं ली गई। ▪

मन की बात में लोकशक्ति की आराधना

12 वर्ष पहले, विजयादशमी के पावन अवसर पर, 'मन की बात' की शुरुआत हुई थी। तब से ये यात्रा निरंतर जारी है। 'मन की बात' देश के सामान्य मानवी के परिश्रम, उसके पराक्रम, उसकी प्रतिबद्धता, उसके समर्पण और सेवा-भाव का गौरवगान करने का एक शुभ अवसर रहा है। हमारे देश में सदियों से तीर्थ यात्रा की परंपरा रही है। 'मन की बात' भी देश के लोगों के प्रयासों को करीब से जानने की और उनके योगदान को नमन करने की एक तीर्थ यात्रा से कम नहीं है।

जो लोग समाज और राष्ट्र के लिए जीते हैं, वे अपने आप में एक तीर्थ के ही स्वरूप हैं। 12 वर्षों में देश के हर कोने से ऐसे अनेक लोग सामने आए हैं जिनकी असाधारण कार्यों की ओर सामान्य रूप से समाज का ध्यान नहीं जाता। 'मन की बात' ने ऐसी अनगिनत प्रेरक कहानियों को सामने लाने का काम किया है।

इस कार्यक्रम के माध्यम से एक तरह से देश की लोकशक्ति की आराधना होती है। इस माध्यम से देश के हर परिवार से जुड़ने का अवसर मिलता है। सैंकड़ों ऐसे संदेश मिलते हैं जिनमें लोग बताते हैं कि 'मन की बात' सुनकर उन्हें ऐसा लगता है, जैसे उनके बीच उनके परिवार में बैठकर एक परिवार के सदस्य की तरह उन सबसे संवाद कर रहा हूँ। सभी श्रोताओं की ये आत्मीयता, ये स्नेह बहुत अमूल्य पूंजी है।

हमारे देश में ऐसे अनेक पारंपरिक हुनर हैं, जो पीढ़ियों से हमारी पहचान का हिस्सा रहे हैं, और सुखद ये है कि अब इन परंपराओं से जुड़कर अनेकविध नए प्रयोग भी हो रहे हैं, इन्हें आज के समय के अनुरूप आगे बढ़ाया जा रहा है। पंजाब में ऐसा ही एक प्रयास काफी समय से चल रहा है, यहाँ 'खेती विरासत मिशन' नाम की एक संस्था ने organic farming और पारंपरिक कृषि के तौर-तरीकों को नया जीवन देना शुरू किया। इस टीम के लोग पंजाब के मालवा क्षेत्र में कपास की प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना चाहते थे। इस पहल को नाम दिया गया 'नव-त्रिन्जन'। इस पहल के तहत यहाँ बिना chemical का इस्तेमाल किए organic कपास उगाई जाती है। यहाँ प्राकृतिक



रंगों वाली कपास भी उगाई जाती है इससे तैयार धागे और कपड़े को रंगने के लिए अलग से chemical इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ती। इससे पर्यावरण की कितनी बड़ी मदद हो रही है। कुछ साल पहले 'नव-त्रिन्जन' ने एक weaving स्कूल भी शुरू किया। इसका लक्ष्य है बुनकरी के हुनर को नई पीढ़ी तक पहुंचाना। इस स्कूल ने भी बहुत सारी महिलाओं की लोगों की जिंदगी बदल दी है। रमनदीप कौर जी इसकी एक मिसाल हैं। पहले वो मजदूर के रूप में काम करती थीं, लेकिन स्कूल में training के बाद उनकी पहचान एक कुशल बुनकर के तौर पर है। रेखा रानी जी ने तो training लेने से पहले कभी handloom देखा तक नहीं था। उनके द्वारा बनी गई शॉल भारत की माननीय राष्ट्रपति जी को भेंट की गई है। इसी तरह सुनेहा देवी जी पहले घरों में काम करती थीं, लेकिन आज वे handloom पर अदभुत fabric तैयार कर रहीं हैं। रजनी कौर जी पहले खेतों में मजदूरी पर निर्भर थीं, अब नए हुनर से उन्हें घर चलाने में काफी मदद मिली है। स्कूल से training के बाद ऐसी अनेक महिलाएं अब स्वदेशी organic cotton से बने धागों का इस्तेमाल कर शॉल, तौलिए और दूसरे कपड़े तैयार कर रही हैं। इन प्रयासों से उनके जीवन में खुशहाली आ रही है।

कुछ महीने पहले National Handloom Day पर मुझे भी इस टीम से मिलने का अवसर मिला था। उस दौरान मैंने काम के प्रति उनके जुनून और समर्पण का अनुभव किया था।

हमारे यहां प्रकृति के प्रति सम्मान की बहुत पुरानी परंपरा रही है। हमारे पूर्वजों ने हमें सिखाया है कि अपने आस-पास स्वच्छता रखना, जल-स्त्रोतों की देखभाल करना ये हमारी अपनी जिम्मेदारी है। देश के कितने ही लोग इसी भावना को अपना जीवन बनाए हुए हैं। यही भाव उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल में भी देखने को मिलता है। यहां लोगों ने मिलकर एक नदी को नया जीवन देने का प्रयास किया है। ये नदी है 'हेवल' (Havel)। कुछ समय पहले हेवल (Havel) नदी में पानी कम होने लगा था। आस-पास के प्राकृतिक जल-स्त्रोत भी सूख रहे थे। ऐसे में स्थानीय प्रशासन और गांव के लोगों ने मिलकर हेवल (Havel) नदी को बचाने का अभियान चलाया। इस दौरान बारिश का पानी रोकने के उपाय हुए, जमीन में पानी पहुंचाने के लिए काम हुआ और बड़ी संख्या में पौधे लगाए गए। आज इस प्रयास से हेवल (Havel) नदी को नया जीवनदान मिला है और साथ ही दर्जनों प्राकृतिक जल-स्त्रोतों के पुनर्जीवन में भी मदद मिली है।

जब समाज ऐसी भावना से एकजुट होता है तो बदलाव की Guarantee पक्की हो जाती है। इसकी एक झलक हम अपने त्योहारों में भी देखते हैं। कुछ ही दिन बाद दीवाली और छठ का पावन पर्व आने वाला है। इसके लिए जगह-जगह साफ-सफाई का अभियान चलाया

जा रहा है। ये जरूरी है कि हम जहां रहते हैं, वहां की स्वच्छता का ध्यान रखें। हमारे छोटे-छोटे प्रयास ही हमारे आस-पास बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

त्योहारों के इस मौसम में आप सभी ने अपने आस-पास एक बदलाव जरूर महसूस किया होगा। अब लोग खरीदारी करते समय स्वदेशी उत्पादों को बहुत महत्व देने लगे हैं। 'Vocal for Local' की ये भावना अब हमारे उत्पादों को दुनिया के बाजारों तक पहुंचा रही है। बिहार के पूर्णिया का मखाना अब Greece पहुँच रहा है। कर्नाटका के कलबुर्गी की अरहर दाल अब मालदीव जा रही है, यानि, भारत के किसानों के लिए दुनिया में नए बाजार खुल रहे हैं।

Local उत्पादों की चर्चा करते हुए, एक और विषय की तरफ आपका ध्यान ले जाना चाहता हूं। किसी भी उत्पाद की Quality के साथ ही उसकी packaging भी बहुत मायने रखती है। कई बार हम बाजार में कोई चीज देखते हैं, तो उसकी अच्छी packaging देखकर ही उसे हाथ में उठाते हैं। हम packaging देखकर ही उस product के बारे में जानना चाहते हैं। इसी बात को समझते हुए अब packaging पर भी जोर दिया जा रहा है।

महाराष्ट्र में आदिवासी समुदायों ने अपने बनाए उत्पादों की packaging उस पर बहुत focus किया है। यहां 'शबरी नेचुरल्स' के जरिए शहद, महुआ, चिरौंजी और बांस से बने उत्पाद बाजार में लाए जा रहे हैं। इनकी packaging पर आदिवासी कला की छाप है। इस packaging को जापान का प्रतिष्ठित 'Good Design Award' मिला है। हमारे युवा भी इस क्षेत्र में नए प्रयोग कर रहे हैं। कर्नाटका का 'बैंबू' start-up. बांस और खेती से निकलने वाले अवशेषों से packaging material बना रहा है।

जब स्थानीय उत्पादों की बात होती है तो खादी की चर्चा स्वाभाविक है। इस बार गांधी जयंती पर सिर्फ एक दिन में खादी ग्रामोद्योग के उत्पादों इसकी बिक्री 28 करोड़ रुपये से अधिक की रही। ये पिछले साल से भी डेढ़ करोड़ रुपये और ज्यादा ही है, यानि, खादी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ती जा रही है और इसका लाभ उन लोगों तक भी पहुंच रहा है, जिनके हुनर और मेहनत से खादी Handicraft जैसी अनेक चीजें तैयार होती हैं।

त्योहारों पर हम अपने परिवार और प्रियजनों के लिए बहुत कुछ खरीदते हैं। इस बार भी खरीदारी करते समय स्थानीय कारीगरों के बनाए उत्पादों को प्राथमिकता दीजिए। आपकी खरीदारी से उनका उत्साह बढ़ेगा। आपका ये अपनापन 'Vocal for Local' अभियान को और आगे ले जाएगा, और, जितना 'Vocal for Local' अभियान आगे बढ़ेगा, उतनी ही तेजी से आत्मनिर्भर भारत का सपना भी पूरा होगा और इसलिए आप स्थानीय कारीगरों के बनाए उत्पादों को प्राथमिकता दीजिए, प्रमुखता दीजिए।

हमारे देश के लोगों की एक बड़ी विशेषता है। हम नई Technology को बहुत जल्दी अपना लेते हैं। हम सहज रूप से Technology को अपनी दैनिक जिंदगी का हिस्सा भी बना लेते हैं। 'e-Sanjeevani योजना' इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है। इससे पता चलता है कि लोगों के जीवन को आसान बनाने में Technology का कैसे बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके जरिए अब तक करीब 50 करोड़ Tele-Consultation किए जा चुके हैं। यह आंकड़ा बहुत बड़ा है। Technology की ताकत, हमारे डॉक्टरों के सेवाभाव, और देशवासियों के विश्वास का यह बेहतरीन उदाहरण है।

e-Sanjeevani सेवा अपने विशाल network के जरिए देश के दूरदराज के इलाकों में भी पहुंच चुकी है। अंडमान-निकोबार के बाराटाँग द्वीप में जारवा जनजाति के ओहो-ताहाने को तेज बुखार था। सांस लेने में भी परेशानी हो रही थी। ऐसे में local health workers ने e-Sanjeevani के जरिए expert doctor से संपर्क किया। उस बच्चे को निमोनिया था और जैसे ही वो expert doctor की निगरानी में आया, उसकी स्थिति में तेजी से सुधार होने लगा।

लक्षद्वीप के कल्पेनी में करीब 60 साल के कुन्ही कोया जी की तबीयत एक दिन अचानक बिगड़ गई थी। तब समुद्र के उस पार कवरत्ती में बैठे अनुभवी doctor से e-Sanjeevani के जरिए संपर्क किया गया। उन अनुभवी doctor ने local medical team को guide किया और कुन्ही कोया जी को राहत पहुंचाई। लद्दाख के जांस्कर में कुंजांग डोलमा जी को गर्भावस्था के दौरान कुछ complications हो गए थे। इस स्थिति में e-Sanjeevani उनके काम आई और specialist doctor ने तुरंत उनकी मदद की। नागालैंड के पेरेन में 12 साल के मुशेम उनको कान में infection और बुखार था। उन्हें भी e-Sanjeevani का फायदा हुआ। Expert Doctor ने तुरंत उनकी बीमारी पकड़ली और सही दवाइयां सुझाईं।

एक समय था डॉक्टर को दिखाने में छोटी-सी स्वास्थ्य जांच में भी लोगों को काफी समय लग जाता था, बहुत कठिनाइयाँ आती थी। आज देशभर में लगभग 1 लाख 90 हजार आयुष्मान आरोग्य मंदिर लोगों के जीवन में नई-नई सुविधाएं लेकर आए हैं। ये आरोग्य मंदिर एक प्रकार से, पंचायतों के wellness centre के रूप में विकसित हो रहे हैं। सबसे सुखद बात यह है कि अब गाँवों के लोग भी नियमित जांच करवा रहे हैं, ताकि वे स्वस्थ रहें। और इसमें e-sanjivini बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है।

इस महीने की शुरुआत में चेन्नई में मेरी मुलाकात देश के कई scientist, researchers और युवा प्रतिभाओं से हुई। युवा आज ऐसे subjects पर भी काम कर रहे है जो पूरी मानवता का भविष्य बदल सकते है और ऐसी ही एक field है Brain Research. इसी से जुड़े, 'सुधा गोपाल कृष्णन brain centre' का मैंने IIT Madras में लोकार्पण किया था इस centre ने एक brain imaging technology platform बनाया है जो दुनिया-भर के लिए मिसाल है। इसके जरिए मानव मस्तिष्क की High-resolution digital xD तस्वीरें तैयार की जा रही है उनका लक्ष्य है आने वाले दिनों में 100 Human Brains की 3D mapping करके उनका बारीकी से अध्ययन करना। पूरी दुनिया में ये इस तरह का पहला मिशन है। इस काम में परम शक्ति super computer का इस्तेमाल किया जा रहा है।

इस brain centre के निर्माण में देश की industry ने सरकार के साथ मिलकर बड़ी भूमिका निभाई है। IIT के कई alumni और academia भी इस research centre के लिए साथ आए है। ये project इतना अहम इसलिए है, क्योंकि science की इतनी प्रगति के बावजूद भी मानव मस्तिष्क आज भी एक बड़ी वैज्ञानिक पहेली है। आज भी Alzheimer और Dementia जैसी बीमारियां हैं, जिनका कोई ठोस इलाज नहीं है। इसलिए विज्ञान human brain की functioning को जितना गहराई से समझेगा, उतने ही नए scope आने वाले समय में create होंगे। ये भी तय हुआ है कि 100

human brains का ये data आगे अलग-अलग field में research के लिए open source के तौर पर उपलब्ध कराया जाएगा।

इस तरह की advanced research में organ donation की बहुत बड़ी भूमिका होती है। जो लोग अपना जीवन पूरा करने के बाद organ donate करके जाते हैं, वो कितने ही लोगों का जीवन भी बचाते हैं और research को भी संभव बनाते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है - मध्य प्रदेश में नर्मदापुरम की शिवानी जी का। शिवानी जी एक सड़क दुर्घटना की शिकार हो गई थी। परिवार पर मुसीबत टूट पड़ी, लेकिन इस कठिन समय मे भी उनके परिवार ने एक ऐसा निर्णय लिया, जो हम सभी के लिए प्रेरणा हैं। यह फैसला था- शिवानी जी के अंग दान का। शिवानी जी के परिवार के इस फैसले से समाज और देश के लिए एक बड़ा संदेश गया है। मानवता के ऐसे एक कदम से किसी परिवार मे खुशियां फिर से लौट सकती हैं और साथ ही रिसर्च के कामों मे भी बड़ी मदद मिलती हैं।

चेन्नई की मेरी visit के और भी अनुभवों की चर्चा भी मैं आप सबके साथ करना चाहूँगा। मेरा पहला अनुभव था - metro में युवाओं से संवाद। जबकि दूसरा programme था - IIT Madras की मेरी visit. इस दौरान यह देखना बहुत सुखद रहा कि हमारी युवा शक्ति कैसे problems के innovative solutions पर काम कर रही है। मैं जिन Start-Ups से मिला उनमें से एक, gold की quality को परखने पर काम करता है। इससे सोने की खरीदारी में होने वाली धोखाधड़ी से बचा जा सकता है। युवाओं की एक team, एक ऐसे platform पर भी काम कर रही है जिसके जरिए बैंक धोखाधड़ी से निकाली गई रकम को तेजी से recover किया जा सकेगा। वहीं एक team इस पर भी काम कर रही है कि cervical cancer की screening में AI कैसे मददगार बन सकता है। IIT का interaction पूरी तरह से Deep-Tech पर focused था। इन Start-Ups को IIT Madras के Incubation ecosystem से मदद मिल रही है। इन्हीं में से एक Start-Up समुद्र के ऊपर उड़ने वाला electric vehicle विकसित कर रहा है। एक अन्य Start-Up Drone और electric गाड़ियों के लिए तेजी से charge होने वाली बैटरियां बना रहा है। एक team defence technology में AI के इस्तेमाल पर काम कर रही है।

आज हमारे युवा इतने असाधारण काम इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें सही environment और support मिल रहा है। वरना, हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी कभी नहीं रही। 31 अक्टूबर को, भारत के एक ऐसे ही महान वैज्ञानिक नरिंदर सिंह कपानी जी की 100वीं जन्मजयंती है। उन्हें दुनिया 'Father of Fiber Optics' के रूप में जानती है। उनका जन्म पंजाब के मोगा जिले में हुआ था। प्रकाश को महीन fiber के माध्यम से आगे पहुंचाने की तकनीक में उनकी advanced research ने communication की दुनिया को नई दिशा दी। आज internet और digital communication के जिस युग में हम जी रहे हैं, उसकी कल्पना भी fiber optics के बिना बहुत मुश्किल है। हमारे युवा कपानी जी जैसे वैज्ञानिकों के बारे में पढ़ें, जानें और उनसे प्रेरणा लें।

31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल जी की जयंती है। इस दिन को देश 'एकता दिवस' के तौर पर मनाता है। इस अवसर पर देशभर में 'एकता दौड़' यानि 'Run for Unity' का आयोजन होता है। 'Run for Unity' हमारी एकता को मजबूत करने का, देश के प्रति अपने संकल्प को दोहराने का, एक बहुत बड़ा मौका है।

आप सभी को याद होगा कि भारत के आह्वान पर साल 2023 को 'International Year of Millets' के रूप में मनाया गया था। इसे पूरी दुनिया में बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली थी। इस पहल के जरिए लोगों ने जाना कि Super Food श्रीअन्न, यानि millets, हमारी अपनी संस्कृति से कितनी गहराई से जुड़े हुए हैं। North-East में भी millets की खेती की एक समृद्ध परंपरा रही है। लेकिन समय के साथ लोग इससे दूर हो रहे थे। अब ये स्थिति बदल रही है।

मेघालय के पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले में खांडुली नाम का एक गाँव है। यहाँ कई पीढ़ियों से millets, local food culture का अहम हिस्सा रहे हैं। लेकिन कुछ समय से, यहाँ इनकी खेती करने वाले किसानों की संख्या कम हो रही थी, ऐसे में, यहाँ की दो सहेलियों ने एक नई पहल की। उन्होंने millets से नए products बनाने पर ध्यान दिया। Millets का value edition करते हुए उन्होंने cookies, cake और muffins के साथ-साथ millets से बने baby food भी तैयार किए। इससे millets से बने products की बिक्री बढ़ी और millets की demand भी बढ़ने लगी। ऐसे में यहाँ के किसानों ने भी फिर से millets की खेती करना शुरू कर दिया है।

मेघालय के ही पश्चिम गारो हिल्स जिले के सादोलपाड़ा गाँव में भी कुछ नए प्रयास हो रहे हैं। यहाँ के किसान चेकजिंग संगमा जी ने, millets का महत्व समझते हुए आधुनिक तरीकों से इसकी खेती शुरू की है। इससे उनकी आय भी बढ़ी है और गाँव में भी एक जागरूकता आई है। इसी तरह नागालैंड के कोहिमा का एक गाँव है केजोमा। इस गाँव में एक दशक से भी ज्यादा समय से millets की खेती बंद थी। इसके चलते यहाँ एक पूरी पीढ़ी इस पारंपरिक फसल से अनजान रह गई। सोचिए, जिस फसल को उनके दादा-दादी उगाते थे, उसे गाँव वाले ही भूलने लगे। साल 2024 में यहाँ के लोगों ने millets की खेती फिर से शुरू की। 2025 में केजोमा ने अपना पहला millets festival मनाया। अब यहाँ भी millets से बनी चीजों की demand तेजी से बढ़ रही है।

millets की खेती से जुड़े उदाहरण अपने आप में एक बड़ा संदेश दे रहे हैं। ये उदाहरण बताते हैं कि कैसे हमारे नौजवान, पारंपरिक फसलों को नए अवसरों से जोड़ रहे हैं, और कैसे हमारे गाँव, विरासतों को सहेजते हुए समृद्धि के रास्ते पर बढ़ रहे हैं।

26 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती है। हजारों वर्ष बीत गए, लेकिन महर्षि वाल्मीकि जी की रामायण आज भी हमें कुछ नया सिखाती है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से हमें जीवन की गहरी सीख दी है। एक ओर वे निरंतर प्रयास करते रहने का संदेश देते हैं, तो दूसरी ओर सेवा, करुणा और सामाजिक समरसता का महत्व समझाते हैं। वाल्मीकि रामायण में भगवान राम का चरित्र इन मूल्यों का बहुत सुंदर उदाहरण है। भगवान राम ने माता शबरी के प्रेम और भक्ति को अपनाया। निषादराज की मित्रता को सम्मान दिया। सबको साथ लेकर चलने का भाव, ये आदर्श आज भी हमें दिशा दिखाते हैं। इस भावना का प्रतिबिंब अयोध्या के भव्य राम मंदिर में भी दिखाई देता है। वहां महर्षि वाल्मीकि, निषादराज और माता शबरी के मंदिर भी बनाए गए हैं। अयोध्या में airport का नाम भी महर्षि वाल्मीकि जी के नाम पर ही रखा गया है। ये प्रयास हमारी उसी महान परंपरा को

समृद्ध करते हैं, जिसमें सेवा, समरसता और करुणा को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

भारत की माटी में ऐसे कितने ही महान व्यक्तित्व पैदा हुए जिन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व हैं - भाई परमानंद जी। 4 नवंबर को हम उनकी 150वीं जयंती मनाएंगे। भाई परमानंद जी की प्रेरणा और आदर्श का बड़ा स्त्रोत था - आर्य समाज से उनका गहरा जुड़ाव। 20वीं सदी के बिल्कुल शुरुआती कालखंड में ही भाई परमानंद जी आर्य समाज के काम से दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहाँ उनकी मुलाकात पूज्य बापू से भी हुई थी। उन्होंने गुयाना में गिरमिटिया समाज के बीच भी काम किया, जो उस समय आर्य समाज का एक बड़ा केंद्र था। मुझे भी गुयाना की यात्रा के समय आर्य समाज के स्मारक पर जाने का सौभाग्य मिला था। भाई परमानंद जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई थी। कहा जाता है कि भाई परमानंद जी ने ही लाला हरदयाल जी को अमेरिका जाने के लिए मनाया था। वे गदर पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से भी एक थे। आजादी की लड़ाई में उनका प्रभाव इतना ज्यादा था कि अंग्रेजों ने उन्हें काला पानी की सजा दे दी थी। उनकी एक किताब है 'आपबीतीः काले पानी की कारावास कहानी' स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को समझने के लिए ये किताब जरूर पढ़नी चाहिए। भाई परमानंद जी ने सजा खत्म होने के बाद शिक्षा के क्षेत्र में कदम बढ़ाया। आपको यह जानकार हैरानी होगी कि उन्होंने वीर भगत सिंह को भी पढ़ाया था। बाद के समय में वे कई वर्षों तक हिन्दू महासभा से भी जुड़े रहे। यानि गांधी जी से लेकर गुयाना तक, गदर से लेकर अंडमान तक उनका व्यक्तित्व बहुत प्रेरणादायक है।

आने वाले दिनों में दिवाली, छठ महापर्व और कई दूसरे त्योहारों की रौनक रहेगी। आप स्वस्थ और सुरक्षित रहकर पूरे परिवार के साथ त्योहार मनाएं, और दूसरों को भी अपनी खुशी में शामिल करें। ▪

जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाना है- हेमंत खण्डेलवाल



'मन की बात' में हमेशा सामाजिक समरसता और सेवा की भावना को भी निरंतर प्रोत्साहित किया जाता है। भारतीय संस्कृति में समरसता की भावना पुरातन काल से रही है। भगवान श्रीराम द्वारा माता शबरी के बेर स्वीकार करना सामाजिक समरसता का प्रेरणादायी उदाहरण है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं। हम सभी को स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए उसकी खरीदारी करनी चाहिए, जिससे अपना प्रदेश और देश आत्मनिर्भर बन सके।

प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से देशभर में हो रही सकारात्मक गतिविधियों, नवाचारों और जनभागीदारी के कार्यों की जानकारी देशवासियों से साझा करते हैं, जिसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा देकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों से जोड़ना है। प्रधानमंत्री जी का यह कार्यक्रम देश के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे अच्छे कार्यों को देशव्यापी पहचान देने का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। प्रधानमंत्री जी के संदेश को हम सभी कार्यकर्ताओं को जनभागीदारी के साथ धरातल पर उतारने का कार्य करना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा जल संरक्षण एवं संवर्धन पर दिए गए संदेश को जनअभियान बनाने की जरूरत है। पार्टी के सभी कार्यकर्ता जल संरक्षण के कार्यों में जुटकर जनअभियान को आगे बढ़ायें। प्रदेश के कई जिलों में औसत से कम वर्षा दर्ज की गई है। आने वाले दिनों में सूखे जैसे हालात से प्रदेश को बचाने के लिए समय रहते जल की एक-एक बूंद को बचाना और उसका संरक्षण करना हम सभी की जिम्मेदारी है। प्रदेशभर में बड़े जलाशयों एवं बांधों के माध्यम से सिंचाई सुविधा बढ़ाने के साथ ही प्रत्येक खेत तक पानी पहुंचाने के लिए प्रयास किए गए हैं। प्रधानमंत्री जी की मंशा के अनुरूप बड़े जलाशयों के साथ छोटी-छोटी जल संरचनाओं के निर्माण को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। जलसंरचनाओं के सिरपुर पैटर्न पर निर्माण कार्य से सकारात्मक परिणाम हम सबके सामने हैं। नदी-नालों पर छोटी जल संरचनाएं बनने से वर्षा जल को रोका जा सकेगा। इससे पेयजल एवं सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता बढ़ने के साथ ट्यूबवेल और अन्य जल स्त्रोतों का रिचार्ज होगा तथा भूजल स्तर में सुधार आएगा। जनप्रतिनिधियों और आमजनों को मिलकर जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाने की आवश्यकता है। ▪

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री
रानी लक्ष्मीबाई



झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। अत्यंत सुन्दर होने के कारण पेशवा बाजीराव द्वितीय ने उन्हें एक और नाम दे रखा था- "छबीली"। मनुबाई का जन्म 19 नवम्बर 1835 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता का नाम मोरोपन्त ताम्बे तथा माता का नाम भागीरथी बाई था। चार वर्ष की आयु में ही मनु को माता के स्नेह से वंचित हो जाना पड़ा। उनके पिता मोरोपन्त को पेशवा बाजीराव द्वितीय ने कानपुर के पास विठूर में बुलवा लिया। यहाँ मनुबाई का पेशवा के पुत्र श्री नानासाहब के साथ घुड़सवारी करना, तलवार तथा धनुष, तीर चलाना सीखने का अवसर मिला। मनुबाई प्रतिभाशाली तो थी ही शीघ्र ही उन्होंने धर्नुविद्या एवं अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी निपुणता प्राप्त कर ली। तेरह वर्ष की आयु में उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ। तब से वे रानी लक्ष्मीबाई कहलाने लगीं। सोलह वर्ष की आयु में वे माता बनीं। किन्तु नवजात पुत्र शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। पुत्र शोक में व्याकुल राजा गंगाधर राव भी नवम्बर 1853 में स्वर्गवासी हो गए। तब उन्होंने दामोदर राव को दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया।

राजा गंगाधर राव की मृत्यु का लाभ लेने के लिए तथा रानी को निर्बल मानकर 16 मार्च 1854 को तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड डलहौजी ने अपनी हड़प-नीति के अर्न्तगत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करने की घोषणा कर दी। लार्ड डलहौजी की हड़प-नीति का रानी ने पुरजोर विरोध किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य को स्पष्ट चेतावनी देते हुए घोषणा की- मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। अंग्रेजों की इस कुटिल नीति का परिणाम झाँसी के अलावा सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, बामोर, संबलपुर, अवध आदि रियासतों को भी भोगना पड़ा। इस कुटिल नीति के अंर्तगत अंग्रेजों ने राजाओं, नवाबों तथा यहां तक की दिल्ली बादशाह की पेंशन भी, या तो कम कर दी या बन्द ही कर दी और धीरे-धीरे उन रियासतों को येन केन प्रकारेण ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन करना प्रारम्भ कर दिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्याटोपे आदि के नेतृत्व में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित हुई। इसी योजना के तहत झाँसी में भी 16 मार्च 1857 से लेकर 5 जून 1857 तक क्रांति की तैयारियां प्रारंभ हुईं। उन्होंने पुरूष सैनिकों के साथ-साथ वीर नारियों की भी एक सेना तैयार की तथा उनको युद्ध करने का पूरा प्रशिक्षण दिया।

अंग्रेजों के साथ युद्ध सुनिश्चित था अतः रानी ने झाँसी के राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए दीवान रघुनाथ सिंह को सेनापति नियुक्त किया। गोस मुहम्मद तोपों के दस्ते के प्रधान बनाए गए। भाऊ बख्शी को उनका सहयोगी बनाया गया। बुरहानुद्दीन और मोती बाई को जासूसी विभाग सौंपा। बारूद बनाने के लिए कुशल व्यक्ति बुलवाए गए। कड़क बिजली, भवानी शंकर जैसी नालदार तोपों को चुस्त-दुरस्त किया गया पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करने से पूर्व उन्हें दो युद्ध और लड़ने पड़े। इनमें पहला युद्ध महाराज गंगाधर राव के संबंधी सदाशिव राव से हुआ। उसने ग्वालियर की सहायता से झाँसी पर आक्रमण कर वहां के निकटवर्ती दुर्ग पर अधिकार कर लिया था और अपने को राजा घोषित कर लिया था। रानी ने उसका सामना किया और उसे बन्दी बनाकर झाँसी के किले में रख दिया। दूसरा युद्ध ओरछा राज्य के दीवान नत्थे खान के साथ हुआ। नत्थे खान ने बीस हजार की सेना लेकर झांसी के मऊरानीपुर और बरुआ सागर पर अधिकार कर लिया था। उसने झांसी के किले को चारों ओर से घेरकर तोपों से प्रहार किया। दोनों ओर से भीषण गोलाबारी हुई। अन्त में नत्थे खान प्राण लेकर भागा।

इसके बाद रानी का भीषणतम और अन्तिम युद्ध अंग्रेजों के साथ हुआ। अंग्रेजी सेना के ब्रिगेडियर स्टुमर्ट के सहयोग से, सर ह्यूरोज ने 21 मार्च 1858 को झाँसी को घेर लिया। यह युद्ध बारह दिन तक चला पर इल्हा जू बुन्देला तथा अली बहादुर जैसे देशद्रोहियों ने विश्वासघात किया और किले का ओरछा दरवाजा अंग्रेजों की सेना के लिए खोल दिया। इस युद्ध में बानपुर के राजा मर्दनसिंह तथा बाँदा के नवाब ने रानी की सहायता की। 1 अप्रैल 1858 को कालपी से राव साहब ने तोपखाने के साथ बीस हजार की सेना सहायतार्थ भेजी पर उसका लाभ झाँसी को नहीं मिल सका। अब पराजय निश्चित थी क्योंकि रानी के महल के चारों ओर अंग्रेजों ने भीषण नरसंहार और अग्निकांड शुरू कर दिया था। तब रानी ने अपने सब सहयोगियों को बुलाकर उनसे भविष्य की रणनीति तय करने के लिए परामर्श किया। सबने मिलकर यह तय किया कि वे सब केसरिया झंडा लेकर सूर्योदय के पूर्व ही किले से निकलकर, युद्ध करते हुए मृत्यु पर्यन्त शत्रुओं से जूझेंगे। जीवित रहते हुए अंग्रेजों के हाथ बन्दी नहीं होंगे। महारानी के लिए यह तय किया गया कि वह अपने दल के साथ रात्रि में ही कालपी के लिए प्रस्थान करेंगी।

रात के चौथे पहर में रानी अपने दल के साथ नगर की ओर के भांडेरी फाटक से मारकाट करती हुए निकली और कालपी के लिए प्रस्थान कर गई। झलकारी बाई ने रानी का पैचदार साफा बांधा और अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया ताकि अंग्रेज युद्ध बन्द कर दें और रानी सुरक्षित रहें ह्यूरोज चालाक था। उसने रानी का पीछा किया। कालपी से रानी ग्वालियर पहुंची। उन्होंने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया पर 16 जून 1858 को अंग्रेजों ने वहां भी आक्रमण कर दिया। भीषण युद्ध हुआ पर अन्ततः झांसी की सेना को परास्त होना पड़ा। रानी का घोड़ा उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए भागा पर एक बरसाती नाले के सामने आ जाने के कारण रानी को रूकना पड़ा। घोड़ा मारा गया। रानी की पसलियों में गोली लगी। एक गोरे की तलवार का भरपूर वार उनके माथे और कन्धे को चीर गया। रानी ने आदेश दिया कि उनकी मृत देह अंग्रेजों के हाथ न पड़ने पाए और साधु गंगादास के हाथ से गंगाजल पीकर देह का त्याग किया। उनकी मृत देह को घास की चिता पर रखकर अग्नि संस्कार किया गया। उनके इस बलिदान पर ह्यूरोज ने कहा- 'समस्त विश्व में झाँसी की रानी सर्वाधिक वीर तथा कुशल योद्धा थीं। मखमली दस्तानों के भीतर उनकी उँगलियां फौलादी थीं। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नेत्री ने देश के लिए बलिदान दिया। ▪

बिरसा मुंडा : वनवासियों के महानायक

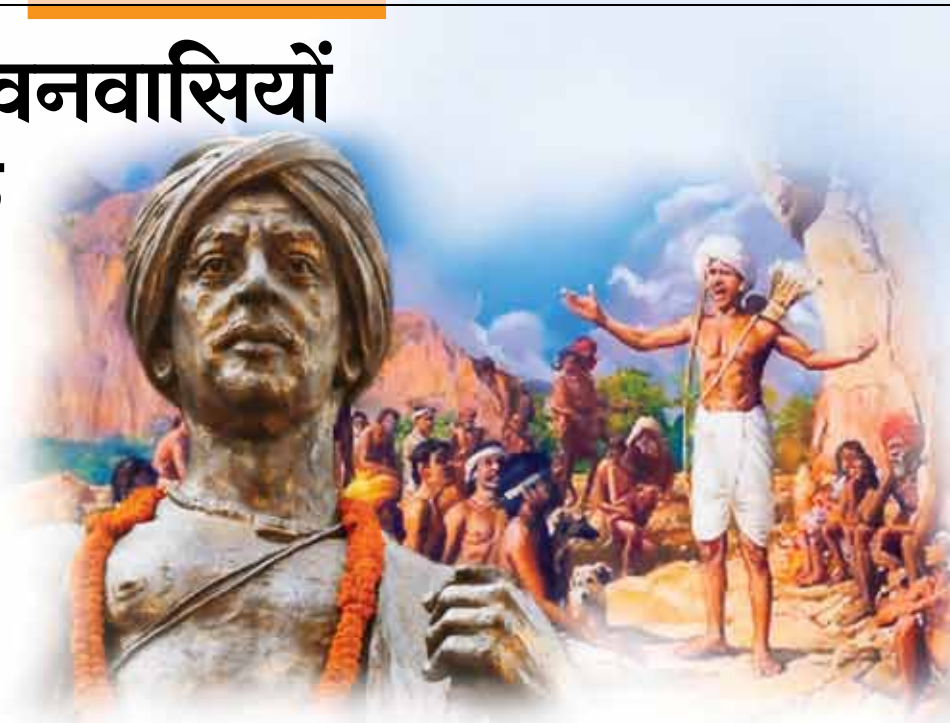

बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख आदिवासी जननायक थे। उनके नेतृत्व में मुंडा आदिवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन उलगुलान को अंजाम दिया। बिरसा को मुंडा समाज के लोग भगवान के रूप में पूजते हैं।

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारंभिक पढ़ाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया।

1894 में मानसून के छोटा नागपुर में असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केंद्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके में "धरती बाबा" के नाम से पुकारा और पूजा जाता था। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत से औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में लीं। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी लगा है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई अड्डा भी है। बिरसा मुंडा भारत के एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और लोक नायक थे जिनकी ख्याति अंग्रेजो के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में काफी हुई थी। उनके द्वारा चलाया जाने वाला सहस्त्रादवादी आंदोलन ने बिहार और झारखंड में खूब प्रभाव डाला था। केवल 25 वर्ष के जीवन में उन्होंने इतने मुकाम हासिल कर लिए थे कि आज भी भारत की जनता उन्हें याद करती है और भारतीय संसद में एकमात्र आदिवासी नेता बिरसा मुंडा का चित्र लगा है।

उनका परिवार रोजगार की तलाश में उनके जन्म के बाद उलिहतु से कुरुमदा आकर बस गया जहां वो खेतों में काम करके अपना जीवन चलाते थे। उसके बाद फिर काम की तलाश में उनका परिवार बबा चला गया। अब वो अपने विद्रोह में इतने उग्र हो गये थे कि आदिवासी जनता उनको भगवान मानने लगी थी और आज भी आदिवासी जनता बिरसा को भगवान बिरसा मुंडा के नाम से पूजती है। उन्होंने धर्म परिवर्तन का विरोध किया और अपने आदिवासी लोगो को हिन्दू धर्म के सिद्धांतों को समझाया था। उन्होंने गाय की पूजा करने और गौ-हत्या का विरोध करने की लोगों को सलाह दी। उन्होंने अंग्रेज सरकार के खिलाफ नारा दिया रानी का शासन खत्म करो और हमारा साम्राज्य स्थापित करो। उनके इस नारे को आज भी भारत के आदिवासी इलाकों में याद किया जता है।

अंग्रेजों ने आदिवासी कृषि प्रणाली में बदलाव किये जिससे आदिवासियों को काफी नुकसान होता था। 1895 में लगान माफी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया था। बिरसा मुंडा ने सन् 1900 में अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह करने की घोषणा करते हुए कहा ''हम ब्रिटिश शासन तन्त्र के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते है और कभी अंग्रेज नियमो का पालन नही करेंगे, ओ गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो, तुम्हारा हमारे देश में क्या काम? छोटा नागपुर सदियों से हमारा है और तुम इसे हमसे छीन नहीं सकते हैं इसलिए बेहतर है कि वापस अपने देश लौट जाओ वरना लाशों के ढेर लगा दिए जायेंगे।'' इस घोषणा को एक घोषणा पत्र में अंग्रेजो के पास भेजा गया तो अंग्रेजो ने अपनी सेना बिरसा को पकड़ने के लिए रवाना कर दी। अंग्रेज सरकार ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रूपये का इनाम रखा था। ▪

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले



महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया।

सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छुआ-छूत का विरोध किया।

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरितियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानो के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवन-यापन के लिए बागबगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गों से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफ्फार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीका-टिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जाति भेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगों की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चो पर डालती हैं, उसी में उन बच्चो के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जात-पात, ऊँच-नीच की दीवारे बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चो को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारम्भ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगों ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है।

महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुम्हे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुम्हारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमो के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआ-छूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नवम्बर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

कांग्रेस बनाम जनसंघ



आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।



पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गल-गल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियां केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न-वस्त्र अलय हो रहे हैं। अतः जन-मन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना



किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदला-बदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग-अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪



▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।



▪ प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।



▪ केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने 'राज्य स्तरीय गौपालक सम्मेलन' में भाग लिया।



▪ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री चन्द्रशेखर ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।



▪ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री चन्द्रशेखर ने छिंदवाड़ा में आयोजित संभागीय बैठक को संबोधित किया।



▪ प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत आयोजित स्वच्छता अभियान में भाग लिया।

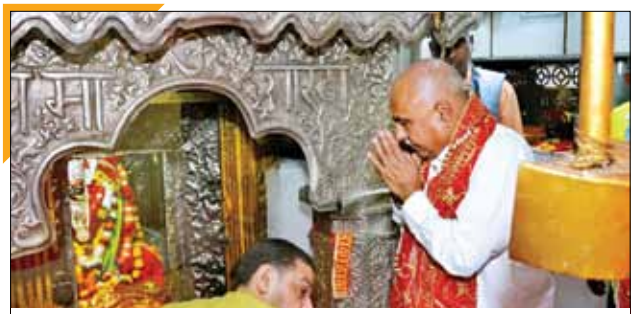

▪ प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने मां शारदा देवी धाम में पूजन-अर्चन किया।

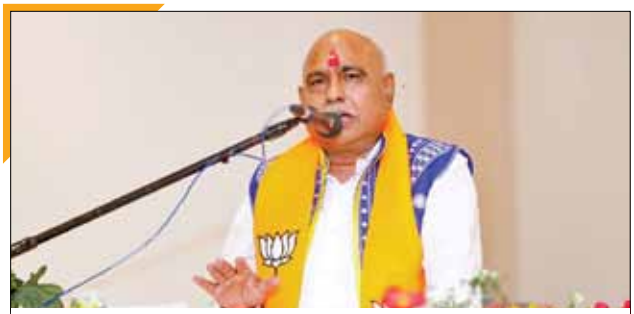

▪ प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल ने झाबुआ, आलीराजपुर एवं धार ग्रामीण जिले में आयोजित जिला बैठकों को संबोधित किया।



विकसित भारत @ 2047- We will Do it! We will Do it!
Top Three economy- We will Do it!
आत्मनिर्भर भारत- We will Do it!
ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब- We will Do it!
ओलंपिक्स का आयोजन- We will Do it!
अंतरिक्ष में कदम- We will Do it!